प्रतिष्ठा पूजन-विधान

श्री दिगम्बर जैन शुद्धाम्नायानुसार पूजा-विधान

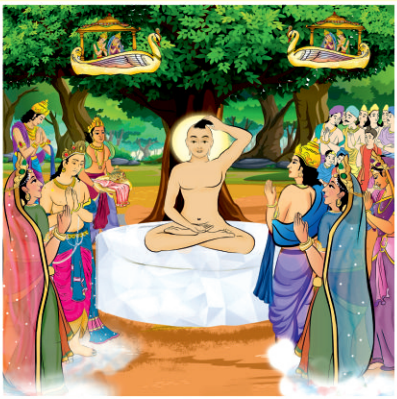

:प्रकाशक:

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

भगवान श्री कुंदकुंद-कहान जैन शास्त्रमाला पुष्प नं. २७८

ॐ

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

प्रतिष्ठा पूजन-विधान

श्री दिगम्बर जैन शुद्धाम्नायानुसार पूजा-विधान

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

प्रथमावृत्ति प्रत : १००० वि.सं. २०८० ई.स. २०२४

प्रतिष्ठा पूजन-विधान (हिन्दी) के

❀ स्थायी किमत कम करनेवाले पुरस्कर्ता ❀

विपुलभाई शांतिलाल मोदी

हस्ते चेतनाबेन, निशांत, अनुपम–घाटकोपर

मूल्य रु. 50=00

: मुद्रक :

स्मृति ओफसेट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

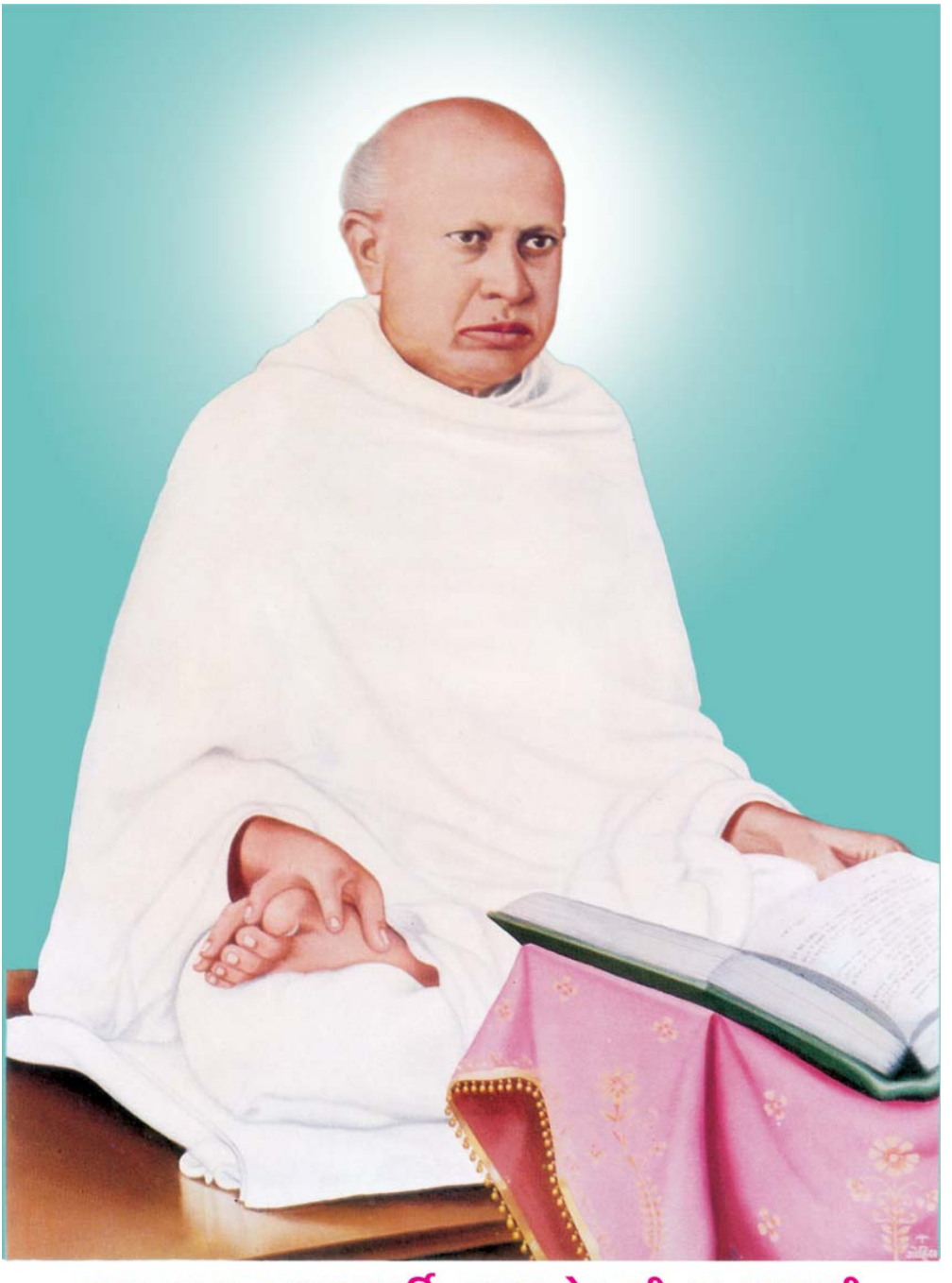

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय निवेदन

वीतराग दिगम्बर जैनधर्मके सातिशय प्रभावक अध्यात्ममूर्ति स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने अध्यात्मतत्त्व के रहस्योद्घाटन के साथ साथ देव-शास्त्र-गुरु की सच्ची पहिचान देकर मुमुक्षु समाज के उपर असीम उपकार किया है। पूज्य गुरुदेवश्री एवं पूज्य बहिनश्रीके सत्प्रताप से मुमुक्षु समाज में जिनेन्द्र-पूजा, भक्ति की प्रवृत्ति नियमित चल रही है। पूज्य गुरुदेवश्री और पूज्य बहिनश्री स्वयं भी सोनगढ़ में नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्ति में उपस्थित रहते थे। उनके ही पुण्य प्रतापसे सौराष्ट्र, गुजरात एवं अन्यत्र अध्यात्म प्रचार के साथ साथ जिनमंदिर-निर्माण एवं पंचकल्याणक और वेदी प्रतिष्ठाका युग चला।

पंचकल्याणक एवं वेदी प्रतिष्ठाके समय की जानेवाली पूजाएँ एवं विधान इस पुस्तक में सम्मिलित हैं। जिससे प्रतिष्ठा में उपस्थित मुमुक्षु समाज लाभान्वित होगा।

इस प्रकाशन के अवसर पर हमारे प्रतिष्ठा पथदर्शक स्मृतिशेष ब्र. चंदुभाई एवं स्व. ब्र. ब्रजलालभाई शाह, वढ़वाणको स्मृतिपट पर अंकित करते हैं। एवं प्रूफ संशोधन आदि मार्गदर्शन देनेके लिये प्रतिष्ठाचार्य श्री सुभाषभाई शेठ, वांकानेर एवं प्रतिष्ठाचार्य ब्र. हेमंतभाई गांधी, सोनगढ–उक्त दोनों विद्वानों के प्रति प्रकाशनसमिति कृतज्ञता व्यक्त करती है। इस पुस्तकमें दिगम्बर जैन शुद्ध आम्नायानुसार पूजन और विधान दर्शाया गया है।

इस पुस्तक में दी गई पूजन के भावों को यथार्थ पहिचानकर साधकजीव ज्ञायक की प्रगटता करके उसकी अभिवृद्धि करके ज्ञायककी पूर्णता तक पहुँचे ऐसी भावना सह..

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दिगम्बर जैन
स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ

श्री आदिनाथ जिनबिम्ब
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
अंतर्गत जम्बूद्वीप शाश्वत जिनेन्द्र एवं
श्री बाहुबली मुनिवर प्रतिष्ठापन
ता. १९-०१-२०२४

*

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण १
मंगलाष्टक २
मङ्गल पंचक ४

विभाग-१

नित्य नियम पूजन

विनयपाठ ५
जलाभिषेक प्रक्षाल पाठ ८
मंगल विधान १०
श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा १३
देव-शास्त्र-गुरुपूजा १९
श्री आदिनाथ जिनपूजा २४
श्री महावीर-जिनपूजा २८
श्री नेमिनाथ-जिनपूजा ३१
श्री सीमंधर-जिनपूजा ३५
श्री धातकी-विदेह-भाविजिनवर पूजा ३८
श्री बाहुबलीस्वामी की पूजा ४१
जंबूद्वीप सम्बन्धित समस्त जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब - पूजा . ४५
स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा ५०

विभाग-२

पंच परमेष्ठी पूजन विधान

श्री पंचपरमेष्ठी पूजन विधान .. ५४-९४
विनायक यंत्र का अभिषेक ९५
विनायकयन्त्र पूजा ९५
नवदेव का अर्घ्य १००
यागमण्डल विधान १०२-१४६

विभाग-३

पंचकल्याणक पूजा

गर्भ कल्याणक पूजा १४७
तीर्थमण्डल पूजा १५४
जन्म कल्याणक पूजा १५६
तपकल्याणक पूजा १६२
आहार दान के समय पूजा १६८
ज्ञानकल्याणक पूजा १७१
मोक्ष कल्याणक पूजा १७७
अर्घ्यावली १८५
समुच्चय अर्घ १८७
आरती १८९
शान्तिपाठ १९४

विभाग-४

भक्ति पाठ

१. सिद्धभक्तिः १९८
२. श्रुतभक्तिः १९९
३. चारित्रभक्तिः २००
४. आचार्यभक्तिः २०१
५. निर्वाणभक्ति पाठः २०३
६. तीर्थंकरभक्तिः २०५
७. शांतिभक्तिपाठः २०६
८. समाधिभक्तिः २०९
९. योगिभक्तिः २११
१०. लघुचैत्यभक्तिः २१४

ॐ

॥ श्री सर्वज्ञ वीतरागाय नमः ॥

मंगलाचरण

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ।
चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो,
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ।

चार शरण, मंगल, उत्तम जे करे, भवसागरथी ते तरे,
सकल कर्मनो आणे अंत, मोक्ष तणा सुख लहे अनंत.
भाव धरीने जे गुण गाय, ते जीव तरीने मुक्ति जाय,
संसारमांहि शरण चार, अवर न शरण कोई,
जे नर-नारी आदरे, तेने अक्षय अविचल पद होय.
अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार
गुरु गौतमने समरिये तो सदाय मनवांछित फल दातार.

मंगलाष्टक

(शार्दूलविक्रीडित)

१. श्री पंचपरमेष्ठी भगवान मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र - मुकुट, प्रद्योत-रत्नप्रभा–
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्, भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगताः, ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।१।।

२- सम्यक्-रत्नत्रयरूप धर्म मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं।
मुक्तिश्रीनगराधिनाथ जिनपत्, युक्तोऽपवर्गप्रदः ।।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्रयालयं।
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।२।।

३. श्री ६३ शलाकापुरुष मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।३।।

४. श्री ६४ ऋद्धिधारी मुनिराज मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

ये सर्वोषधऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पञ्च ये।
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला, येऽष्टाविधाश्चारणाः ।।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोडपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः।
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।४।।

५. श्री २४ तीर्थंकरकी निर्वाणभूमि मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

कैलासे वृषभस्य निर्वृत्तिमही, वीरस्य पावापुरे।
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्याऽर्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।५।।

६. श्री अकृत्रिम जिनालय मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः ।
जम्बू-शाल्मलि--चैत्यशाखिषु तथा, वक्षाररौप्याद्रिषु ।।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।६।।

७. श्री जिनधर्म के प्रताप का फल

जायन्ते जिन-चक्रवर्ति-बलभृद भोगीन्द्र-कृष्णादयो ।
धर्मदेव दिगंगनांग विलसत् शंश्वद्यश्चन्दनाः ।।
तद्धीना नरकादियोनिषु, नरा दुःखं सहनो ध्रुवं ।
स स्वर्गात्सुखरमणीयकपदं, कुर्यात् सदा मंगलम् ।।७।।

८. भगवानके पंचकल्याणक मंगलरूप हो इस भावना का श्लोक

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।।
यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमा, सम्पादितः सवर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।८।।

९. मंगलाष्टक का फल इस भावना का श्लोक

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं, सौभाग्यसम्पत्प्रदम् ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियः, तीर्थंकराणां मुखात् ।।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः, धर्मार्थकामान्विता ।
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

मङ्गल पंचक

(हरिगीतिका)

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभावनिशाकराः
सद्बोध-भानुविभा-विभासितदिक्क्रया विदुषांवराः ।
निःसीमसौख्यसमूह मण्डितयोगखण्डितरतिवराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र श्री वीरनाथ जिनेश्वराः ।।१।।

सद्-ध्यानतीक्ष्ण-कृपाणधारा निहतकर्मकदम्बका,
देवेन्द्रवृन्दनरेन्द्रवन्द्याः प्राप्तसुखनिकुरम्बकाः
योगीन्द्रयोगनिरूपणीयाः प्राप्तबोधकलापकाः ।
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते सिद्धाः सदा सुखदायकाः ।।२।।

आचारपंचकचरणचारणचुंचवः समताधराः
नानातपोभरहैतिहापितकर्मकाः सुखिताकराः ।
गुप्तित्रयीपरिशीलनादिविभूषिता वदतांवराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र श्री सूरयोऽर्जितशंभराः ।।३।।

द्रव्यार्थ भेदविभिन्नश्रुतभरपूर्ण तत्त्वनिभालिनो
दुयोग्योगनिरोधदक्षाः सकलवरगुणशालिनः ।
कर्तव्यदेशनतत्परा विज्ञानगौरवशालिनः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते गुरुदेवदीधितिमालिनः ।।४।।

संयमसमित्यावश्यका-परिहाणिगुप्तिविभूषिताः
पंचाक्षदान्तिसमुद्यताः समतासुधापरिभूषिताः ।
भूपृष्ठविष्टरसायिनो विविधर्द्धिवृन्द विभूषिताः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते मुनयः सदा शमभूषिताः ।।५।।

विभाग-१

नित्य नियम पूजन

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पड़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।१।।
अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज।।२।।
तिहुं जयकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार।।३।।
हरता अघअंधियारके, करता धर्मप्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश।।४।।
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप।।५।।
मैं वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाव।।६।।
भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।७।।
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें, भविजनको शिव गैल।।८।।
तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरे, विष निरविषता थाय।।९।।
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।१०।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।११।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।१२।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।१३।।

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव।।१४।।

कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।१५।।

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरों भयो, करन लग्यो तुम सेव।।१६।।

अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार।।१७।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान।।१८।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।१९।।

जो मैं कहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातें करौं पुकार।।२०।।

वंदो पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।२१।।

चौबीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।२२।।

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः

(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प अर्थात् चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना ।)

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,

साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,

साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो,

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,

केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते स्वाहा पुष्पांजलि क्षिपामि ।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;

धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर तीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री समवसरणमध्य बिराजमान सीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इसके अतिरिक्त अन्य भगवंत विराजमान हों उन भगवंतोंका नाम लेकर अर्घ चढ़ाये ।)

जलाभिषेक व प्रक्षाल पाठ

(हरजसराय कृत)

(प्रक्षाल करते समय पढ़ना चाहिये)

अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं उर कोषमें सो अकथ-गुण-मणि-राश हैं॥
पै निजप्रयोजन सिद्धि की तुम नाममें ही शक्ति है।
यह चित्तमें सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥१॥

प्रभु तरनतारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यह वीतराग दशा प्रत्यक्ष विलोकि भविजन सुख लिया॥
मुनि आदि द्वादश सभाके भविजीव मस्तक नायके।
बहुभांति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगुण गायकै॥२॥

(यहां प्रक्षाल प्रारंभ करना)

श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी।
शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभुकी शांतमुद्रा को न्हवन जलतें करैं।
जस भक्तिवश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरैं॥३॥

बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही, भरहु वांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरौ।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करौ॥४॥

पापाचरण तजि न्हवन करता चित्तमें ऐसे धरूँ।
साक्षात् श्री अरिहंतका मानों न्हवन परसन करूँ॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नशि शुभबंध तैं।
विधि अशुभ नशि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं॥५॥

पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी ।।
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घरकी धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणि-कुंभ भरि भक्ति करी ।।६।।

आनन्द-कारण दुःख-निवारण, परममंगल-मय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यौ नहीं ।।
चिंतामणि पारस कल्पतरु, एकभव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े, ते भये भवदधि पार ही ।।७।।

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा,
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा,
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ।।२।।
अपराजितमंत्रोऽयं सर्व विघ्नविनाशनः,
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगल मतः ।।३।।
ऐसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं ।।४।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः,
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।।५।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्,
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।।६।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः,
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।७।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रमाहात्म्येभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे ।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वसंततिलका)

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हम्;
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुः,
जैनेन्द्रयज्ञविधिरिष मयाऽभ्यधायि ।।१।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय,
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय;

स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ।।२।।
स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोकवितताैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ।।३।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः;
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन् ।
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।।४।।
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव;
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं पूजाविधि प्रतिज्ञाय पुष्पांजलिं क्षिपामि स्वाहा ।

(पुष्पांजलि चढ़ाना)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ।।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ।।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।।

श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्धमानः ।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजनेभ्यो स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलि क्षिपामि ।

(उपजाति)

नित्याप्रकम्पाद्तकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधः ।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१।।

(यहाँ पर तथा आगेके प्रत्येक श्लोकके अंतमें पुष्पांजलि चढ़ायें।)

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।२।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद् वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।३।।
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।४।।
जंघावलिश्रेणिफलाम्बुतन्तुप्रसूनबीजांकुर चारणाह्वाः ।
नभोगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।५।।
अणिम्निदक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शकताः कृतिनो गरिम्नि ।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।६।।
सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।७।।
दीप्त च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।८।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।९।।
क्षीरंस्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१०।।

(इति परम ऋषि स्वस्तिमंगलविधानम् पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(हरिगीत)

सन्मार्गदर्शी, बोधिदाता, कृपा अति वर्षावता,
आश्रय अने करुणा थकी, अम रंकने उद्धारता;
विमलज्ञानी शान्तमूर्ति, दिव्य गुणे दीपता,
जिनराजजी तुम चरणमां, दीन भावथी हो वंदना।

इम सकल सुखकर, दुरित भयहर, विमल लक्षण गुणधरो,
प्रभु अजर, अमर, नरेन्द्रवंदित, विनव्यो सीमंधरो,
निज नादतर्जित, मेघगर्जित, धैर्यनिर्जित मंदरो,
रे भक्तजन हुं चरणसेवक, सीमंधरप्रभु जय करो।
रे भक्तजन हुं चरणसेवक, श्री कुंदकुंदप्रभु जय करो।
रे भक्तजन हुं चरणसेवक, श्री सद्गुरुप्रभु जय करो।

(दोहा)

पूजुं पद अरहंतना, पूजुं गुरुपद सार;
पूजुं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

पूजा प्रकार दोय छे, द्रव्य भाव गुणधाम;
सीचुं भावजळे करी, जन्ममरण क्षयठाम।
अविनाशी अरिहंत तुं, एक अखंड अमान;
अजर अमर अणजन्म तुं, भयभंजन भगवान।

(हरिगीत)

विमुक्त छुं, निवृत्त छुं, हुं सिद्ध छुं ने ब्रह्म छुं,
हुं जन्मने जाणुं नहि, सुखथी भरेलो शिव छुं,

ते आत्म ध्यातो, ज्ञानदर्शनमय, अनन्यमयी खरे;
बस अल्पकाळे कर्मथी प्रविमुक्त आत्माने वरे।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थ जन्मजरामरण-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

शीतल गुण जेमां रह्यो, शीतळ जिन सुख संग;
चंदन घसी घनसारसुं, पूजीजे मनरंग।
वचनामृत वीतरागनां, परमशांतरसमूळ,
औषध जे भवरोगनां, कायरने प्रतिकूळ।

(त्रोटक)

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिनभक्ति ग्रहो तरुकल्प अहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो।

(हरिगीत)

पुण्य-पाप योगथी रोकीने, निज आत्मने आत्मा थकी;
दर्शन अने ज्ञाने ठरी, परद्रव्य इच्छा परिहरी।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अक्षत पद लेवा भणी, अक्षतपूजा सार;
अखंडाक्षत जिन पूजीये, तो लहीए जयकार।

(धनाश्री)

आलंबन साधन जे त्यागे, परपरिणतिने भागे रे;
अक्षय दर्शन ज्ञान वैरागे, आनंदघन प्रभु जागे रे।

(हरिगीत)

हुं एक शुद्ध, सदा अरूपी, ज्ञानदर्शनमय खरे;
कई अन्य ते मारुं जरी, परमाणु मात्र नथी अरे।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जिनवर हितजनता करी, पूजो भाव अमाप;
पुष्पतणी पूजा रची, काम हरो तत्काळ।
अनंत सौख्य, नाम दुःख, त्यां रही न मित्रता!
अनंत दुःख नाम सौख्य, प्रेम त्यां विचित्रता!
उघाड न्याय नेत्रने निहाळ रे निहाळ तुं,
निवृत्ति शीघ्रमेव धारी ते प्रवृत्ति बाळ तुं।

(हरिगीत)

जीती इन्द्रियो ज्ञानस्वभावे अधिक जाणे आत्मने;
निश्चय विषे स्थित साधुओ भाखे जितेन्द्रिय तेहने।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विविध युक्ति पकवानशुं, लेई चित्त उदार;
अणाहारी पद पामवा, विनवुं वारंवार।

(गझल)

रसे, रूपे अने गंधे, सदा छे भिन्न आ आत्मा,
जराये मोह मायाना, नहीं छे भाव कंई एमां;
खरुं हुं तत्त्व समजीने, रहूं चेतन तणा रसमां,
चिदानंदी स्वरूप मारुं, निहाळुं आज भीतरमां।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जगप्रदीप दीप शुभ, करतां भावो तेह;
ज्ञानशक्तिमां जे रह्युं, प्रगट लहुं निज तेह।
जळहळ ज्योतिस्वरूप तुं, केवळ कृपानिधान;
प्रेम पुनित तुज प्रेरजे, भयभंजन भगवान।

मोह स्वयंभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्यां ज्यां क्षीणमोह गुणस्थान जो;
अंतसमय त्यां पूर्णस्वरूप वीतराग थई,
प्रगटावुं निज केवळज्ञान निधान जो;
अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

मति, श्रुत, अवधि, मनः केवळ तेह पद एक ज खरे;
आ ज्ञानपद परमार्थ छे, जे पामी जीव मुक्ति लहे।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

इणि परे धूपपूजा करी, जिन आगळ शुभभाव,
टाळी विभाव परिणति, दूर करो परभाव।
निराकार निर्लेप छो, निर्मळ ज्ञान निधान,
निर्मोहक नारायणा, भयभंजन भगवान।

चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्यां,
भवना बीज तणो आत्यंतिक नाश जो;
सर्वभाव ज्ञाता द्रष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनंत प्रकाश जो;
अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

जे सर्वसंगविमुक्त ध्यावे आत्मने आत्मा वडे,
नहि कर्म के नोकर्म चेतक चेततो एकत्वने।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वर ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

फळपूजा करतां थकां, सफळ करो अवतार;
फल मागुं प्रभु आगळे, तार, तार मुज तार।
आनंदी अपवर्गी तुं; अकळगति अनुमान;
मोक्षफळ हुं मागतो, भयभंजन भगवान।
एक परमाणुमात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक रहित अडोल स्वरूप जो;
शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरुलघु अमूर्त सहज पदरूप जो;
अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

बंधो तणो जाणी स्वभाव, स्वभाव जाणी आत्मनो,
जे बंधमांही विरक्त थाये, कर्ममोक्ष करे अहो।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वर ..... मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जल, चंदन, अक्षत, फूल, दीप, धूप, फळ नैवेद्य,
पूजुं अष्ट समूहथी, भक्तिथी जिनदेव।

(हरिगीत)

जीव चेतनागुण, शब्द-रस-रूप-गंध-व्यक्तिविहीन छे,
निर्दिष्ट नहि संस्थान जीवनुं, ग्रहण लिंगथकी नहीं।
प्रकाश छुं, कृतार्थ छुं, कल्याण छुं ने शांत छुं,
इन्द्रियोथी पार छुं, अगम्य स्वरूप ज्ञान छुं।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वर ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

हे जिनराज तुमारा चरणकमळनी पूजना;
हृदय उल्लसित थाय के भाग्य मानुं घणुं रे। हे जिन।

हे जगनाथ तुमे तो छो त्रिभुवनना नाथ जो;
अनंत गुणनी रत्नधाराए सोहता रे। हे जिन।

विश्व उपदेष्टा छो जगतारणहार जो;
जन्म जरा विण गुणनिधि लोकेश्वरा रे। हे जिन।

दर्शन ताहरा प्रभु अनंत मोंघा मूलना;
आप कृपाए वरस्या अमृत मेहुला रे। हे जिन।

परम रहस्य प्रभु आतमज्ञान निधान जो;
रत्नत्रयीमय प्रभु पधार्या आंगणे रे। हे जिन।

धन्य दिवस ने धन्य कृतार्थ हुं आज जो;
जय जय वर्तो जगगुरु तणी पूजना रे। हे जिन।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

केवल रवि-किरणों से जिसका संपूर्ण प्रकाशित है अंतर,
उस श्री जिनवाणीमें होता तत्त्वोंका सुंदरतम दर्शन;
सद्दर्शन बोध चरण पथ पर, अविरल जो बढते हैं मुनिगण,
उन देव परम आगम गुरुको सम्यक् वंदन, सम्यक् वंदन।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति (आह्वानम्)।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः (स्थापनम्)।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् (सन्निधिकरणम्।)

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यमयी कंचन काया,
यह सब कुछ जडकी क्रिडा है, मैं अब तक जान नहीं पाया;
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर ममतामें अटकाया हूं,
अब निर्मल सम्यक् नीर लीये, मिथ्या मल धोने आया हूं।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मिथ्यात्वमलविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड चेतनकी सब परणति प्रभु अपने अपने में होती है,
अनुकूल कहे, प्रतिकूल कहे, यह झूठी मनकी वृत्ति है;
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित होकर संसार बढाया है,
संतप्त हृदय प्रभु! चंदन सम शीतलता पाने आया है।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्रोधकषायमलविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल हूं कुंदधवल हूं प्रभु! परसे न लगा हूं किंचित् भी,
फिर भी अनुकूल लगे उन पर, करता अभिमान निरंतर ही;
जड पर झुक झुक जाता चेतन की मार्दव की खंडित काया;
निज शाश्वत अक्षतनिधि पाने, अब दास चरणरजमें आया।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मानकषायमलविनाशनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तनमें माया कुछ शेष नहीं,
निज अन्तरका प्रभु! भेद कहूं, उसमें ऋजुताका लेश नहीं;
चिंतन कुछ, फिर संभाषण कुछ, वृत्ति कुछकी कुछ होती है,
स्थिरता निजमें प्रभु पाउं जो, अंतरका कालुष धोती है।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मायाकषायमलविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तक अगणित जड द्रव्योंसे, प्रभु! भूख न मेरी शांत हुई,
तृष्णाकी खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही;
युग-युगसे इच्छा सागरमें, प्रभु गोते खाता आया हूं,
पंचेन्द्रिय मनके षट् रस तज, अनुपम रस पीने आया हूं।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः लोभकषायमलविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगके जड दीपकको अब तक समझा था मैंने उजियारा,
झंझाके एक झकोरे में, जो बनता घोर तिमिर कारा;
अत एव प्रभो! यह नश्वरदीप, समर्पण करने आया हूं,
तुम्हरी अंतर लौसे निज अंतर,–दीप जलाने आया हूं।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अज्ञानांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रांति रही मेरी,
मैं रागीद्वेषी हो लेता, जब परिणति होती जड केरी;
यों भावकरम या भावमरण, सदियों से करता आया हूं,
निज अनुपम गंध अनलसे प्रभु, पर गंध जलाने आया हूं।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः विभावपरिणतिविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमें जिसको निज कहता मैं, वह छोड मुझे चल जाता है,
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है;
मैं शांत निराकुल चेतन हूं, है मुक्तिरमा सहचर मेरी,
यह मोह तडक कर तूट पड़े, प्रभु! सार्थक फलपूजा तेरी।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भर निज रसको पी चेतन, मिथ्या मलको धो देता है,
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनंद अमृत पीता है;
अनुपम सुख तब विलसित होता, नित केवलज्ञान चमकता है,
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है;
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु! निज गुणका अर्घ बनाऊँगा,
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हन्त अवस्था पाऊंगा।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

भववनमें जी भर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा;
मृगसम मृगतृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा।१।

झूठे जगके सपने सारे, झूठी मनकी सब आशायें;
तन, जीवन, यौवन अस्थिर है, क्षणभंगुर पलमें मुरझाए।२।

सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षणको टाल सकेगा क्या;
अशरण मृत कायामें हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या।३।

संसार महा दुखसागर के प्रभु दुखमय सुख-आभासों में;
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी कंचन कामिनि प्रासादों में।४।

मैं एकाकी एकत्व लिये एकत्व लिये सबही आते;
तन, धनको साथी समझा था पर ये भी छोड चले जाते।५।

मेरे न हुए ये मैं इनसे अति भिन्न अखंड निराला हूं;
निज में परसे अन्यत्व लिये निज समरस पीनेवाला हूं।६।

जिसके शृंगारों में मेरा यह महंगा जीवन घुल जाता;
अत्यंत अशुचि जड कायासे इस चेतनका कैसा नाता।।७।

दिनरात शुभाशुभ भावोंसे मेरा व्यापार चला करता;
मानस वाणी और कायासे आस्रवका द्वार खुला रहता।८।

शुभ और अशुभकी ज्वालासे झुलसा है मेरा अंतस्तल;
शीतल समकित किरणें फूटें संवरसे जागे अंतर्बल।९।

फिर तपकी शोधक वन्हि जगे कर्मोंकी कडियां टूट पडें,
सर्वांग निजात्म प्रदेशोंसे अमृतके निर्झर फूट पड़ें।१०।

हम छोड चले यह लोक तभी लोकांत विराजे क्षणमें जा;
निज लोक हमारा वासा हो शोकांत बने फिर हमको क्या।११।

जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नयतम सत्वर टल जावे;
बस ज्ञाता-द्रष्टा रह जाउं मद-मत्सर मोह विनश जावे।१२।

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी;
जगमें न हमारा कोई था, हम भी न रहें जगके साथी।१३।

चरणोंमें आया हूं प्रभुवर, शीतलता मुझको मिल जावे;
मुरझाई ज्ञान लता मेरी, निज अंतर्वलसे खिल जावे।१४।

सोचा करता हूं भोगोंसे बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला;
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावकमें घी डाला।१५।

तेरे चरणोंकी पूजासे इन्द्रिय सुखको ही अभिलाषा;
अब तक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुखकी भी परिभाषा।१६।

तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जगमें रहते जगसे न्यारे;
अतएव झुके तब चरणोंमें, जगके माणिक मोती सारे।१७।

स्याद्वादमयी तेरी वाणी शुभ नयके झरने झरते हैं;
उस पावन नौका पर लाखों प्राणी भववारिधि तिरते हैं।१८।

हे गुरुवर! शाश्वत सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है;
जगकी नश्वरताका सच्चा दिग्दर्शन करनेवाला है।१९।

जब जग विषयोंमें रच पच कर गाफिल निद्रामें सोता हो;
अथवा वह शिवके निष्कंटक पथमें विषकंटक बोता हो।२०।

हो अर्घ निशाका सन्नाटा वनमें वनचारी चरते हों;
तब शांत निराकुल मानस तुम तत्त्वोंका चिंतन करते हो।२१।

करते तप शैल नदीतट पर तरुतल वर्षाकी झडियों में;
समतारस पान किया करते सुख दुख दोनोंकी घडियों में।२२।

अन्तर ज्वाला हरती वाणी मानों झरती हों फुलझडियां;
भवबंधन तड तड टूट पड़ें खिल जावें अंतरकी कलियां।२३।

तुम सा दानी क्या कोई हो जगको देदी जगकी निधियां;
दिन रात लुटाया करते हो सम शमकी अविनश्वर मणियां।२४।

हे निर्मल देव! तुम्हें प्रणाम,
हे ज्ञानदीप आगम! प्रणाम;
हे शांति त्याग के मूर्तिमान,
शिव-पथ-पंथी गुरुवर! प्रणाम।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

(छप्पय)

बाह्याभ्यंतर संग त्याग थिर शुकलध्यानमें,
तिरसठको क्षय पाय, अनंत चतुष्टय छिनमें;
समवसरणयुत देव दोष अष्टादश रहिता,
आदिनाथ जिन आय तिष्ठ, सनहित अघ हरता।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द हरिगीत)

हेमझारीमें मनोहर क्षीर जल भर लीजिये,
त्रयदोश नाशन हेतु, श्री जिन अग्रधारा दीजिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

अतिरम्य शीतल दाहनाशक, मलय चंदन गारिये,
संसारताप विनाश हेतु, जिनेशपद तल धारिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्व०

मणिचंद्रकांति समान श्वेत, अखंड अक्षत लाईये,
अक्षय अबाधित मोक्षपदकी, प्राप्ति हेतु चढाइये;

सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

शुभ अमल कमल सुचारु चंपा, सुमन गंधित ले धरो,
खल काम मद भंजन श्री जिनवर, देव पद अर्पण करो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

घृत पक्व सुन्दर सद्य मोदक, कनक भाजनमें भरो,
ऋषभ पदाब्ज चढाय चिर दुख, मूल भूख व्यथा हरो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

जिन चन्द्र त्रिभुवननाथ सन्मुख, रत्न द्वीप प्रकाशिये,
अति मोद कर युत करि आरती, अज्ञान तिमिर विनाशिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

शुचि मलय अगुरु सुवास पूरित, चूरि अनल प्रजालिए,
सुखधाम शिवरमणी वरो, अरि अष्ट कर्म जलाईये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

श्रीफल बदाम मनोज्ञ दाडिम, मधुर फल सुख मूल ले,
प्रभु पद सरोज चढाय अनुपम, मोक्ष फल अनुकूल ले;

सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

अत्यंत निर्मल पूर्व आठों, द्रव्य एकत्रित करो,
अरि अष्ट हनि गुण अष्ट संयुत, शीघ्र मुक्तिरमा वरो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

भवजलनिधि तारण, शिवसुख कारण, प्रतिपालित निर्मल चरणं,
करुणारस सागर, परम गुणाकर, जय जिन सकल भुवन शरणं।

(त्रोटक वृत्त)

वरदं सरदिंदुयशोनिकरं, निजज्ञान कलायुत भानिकरं;
संसार पयोनिधि तारतरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

गतधर्मजलं परमुक्तमलं, पय सदृश रक्त सु नंत बलं;
संहनन प्रथम संस्थान वरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शुभ रूप जितातनु कोटि विभु, वसु शत मित लक्षण युक्त प्रभु;
पर सौरभता वर कीर्तिधरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

प्रिय वाक्य हितं सुरवृन्द नुतं, यतिराज विराजित नाभिसुतं;
परमं परतर्जित पुष्पसरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शत योजन इति दुर्भिक्षजयं, गगनांगण लंघन जंतु दयं;
गत भुक्ति जितं उपसर्ग चरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

चतुरं चतुरानन मोहजितं, सकलामल केवल बोधवरं;
विगतं प्रति मंगल नेत्र चरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

समकेस सदा नख पाद करं, सकलार्थ प्रगट कर वाक्य वरं;
भामंडल दर्शित भव प्रवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।
शशि लञ्छित कर त्रय छत्रवरं, सरणं चरणं जग शांत करं;
तम मोहज भ्रमहर सूर्यवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।
मन वचन काय करि हू नमनं, मोहि देहु शिवालय प्रति गमनं,
निजस्वरूपको करिहूं प्रवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

(धत्ता)

यह जयमाला परम रसाला आदीश्वरकी गुणमाला,
जो पढे पढावे पूज रचावे कंठ धरे शिव वरमाला।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय महार्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव प्रभु नाम, पूजै ध्यावे भाव धरि;
ता घर ऋद्धि महान, होय सकल सुखदायनी।

॥ इति आशीर्वाद॥

श्री महावीर-जिनपूजा

हे करुणानिधि सकल गुणाकर, त्रिशलानंदन भवहारी,
तुम पूज रचाउं बलि बलि जाउं, हो अनंत गुण गुणधारी;
उर निज ध्याउं, शीश नमाउं, गाउं गुण मंगलमय वीर,
भवदुःखहर हो, अनुपम सुखकर हो, आनंदकारी श्री महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद त्रिभंगी)

कुंकुम मिश्रित तीरथ जल करी, भरि ल्यायो कंचन झारी,
जन्म-जरा-मृत नाशन कारण, धारात्रय जिनपद ढारी;
इन्द्र-नरेन्द्र-खगेन्द्र पूज्यपद पूजत हों जिन मनहारी,
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय सुचंदन केलीनंदन, कृष्णा घसि संग सुखकारी।
जिनके पद पूजत भव तप धूजत, भृंग करत झूं झूं प्यारी।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अखित अखंडित सौरभ मंडित, चंद्रकिरणसे भरि थारी।
जिनके पद आगै पूंज करत ही, अक्षय पदके करनारी।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंचवरणमय कुसुम मनोहर, गंध सुगंधे अति प्यारी।
पूजें जिनपद मन्मथ नासै, भृंग भ्रमत चउ उर भारी।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खज्जक फेनी इन्द्र चन्द्रिका, मोदक सुवरण भरि थारी,
क्षुधा वेदनी नाश करनको, जिनपद पूजुं सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र-खगेन्द्र पूज्यपद, पूजत हों जिन मनहारी,
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशामें करत प्रकाशजु, दीपक अद्‌भुत ज्योति धरैं।
ज्ञान उद्योतर मोह विध्वंशक, पूजत भ्रमतम नाश करै।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन चूर मनोहर, स्वर्ण धूपायन मांहि धरै।
धूप धूम्र मिसि करम उडत मनु दसूं दिशामें गमन करै।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बिदाम सु खारिक, कदली दाडिम सहकारं।
स्वर्णथाल भरि जिनपद चहोडे, मुक्ति रमासूं ह्वै प्यारं।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज, दीप धूप फल भरि थारी।
अर्घ चढावै जिन चरननकू जाकी ह्वै शिव तिय प्यारी।। इन्द्र०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(गीता छंद)

जिनवीर मुक्त विमुक्त भवस्थिति युक्त मुनिपद ये सदा,
समवादिसरण विभूति मंडित, गुन अखंडित गत मुदा।
भरतक्षेत्रे सुवर्णधामे वीर जिनवर राजही,
तिनको कहो जयमाल भविजन पढत सब दुःख भाजही।।

(पद्धरी छंद)

जय जिन घाते घातिया चार, फुनि किय अघातियनको प्रहार।
जय चिदानंदमय है सुछन्द, जगजीवनको आनंदकंद।।

अष्टोत्तर शत लक्षण सुअंग, जिनपति लखि लाजत अनंग।
ये कोटि सूर्य द्युति धरन धीर, युत प्रातिहार्य वसु गुण गंभीर।।

सुर नर धरणीधर पूज्य पाय, गणधर मुनिवर जिन नमत धाय।
सुर मोक्षादिक पद दान दक्ष, शुद्ध ध्यान लीन शोभे अलक्ष।।

दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महा सर्म वीर्य जिनको न अंत।
ये अनंत चतुष्टय करि संयुक्त, महाधीरय धर वसु कर्म मुक्त।।

वसु गुण करि मंडित शोभमान, जयवंत वर्तो जग प्रधान।
जय त्रिशलानंदन जिनेन्द्रवीर, आनंदकरण भवहरण पीर।।

जय वीर जिनेश्वर गुण गंभीर, कल्पदुम सम दाता सुधीर।
जय महावीर वर सिद्धिदाय, तुम चरणनमें बलि बलि सुजाय।।

(गीता छंद)

ये सर्व अतिशय युक्त परम आह्लाद कर पूरन खरे,
ये त्रिजगतापति पाद पूजित, शिवमहल मग पग धरे।
ये द्रव्य गुण नय अर्थ देसक, सुभग शिव त्रिय कंत ते,
जय जय प्रताप सु वीर जिनवर, होहु जग जयवंत वे।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल)

घणे जंतु रव कर्यो नेमि सुनि गिर गये,
तजि रजमति भव अनिति पेखि मुनिवर भये;
ध्यान खड्ग गहि हने कर्म शिव तिय वरी,
आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद त्रिभंगी)

निर्मल ल्याय महातीर्थोदक, कनक रतनमय भरि झारी,
मनवचतन सुध करि जिनपद पूजे, नसै जन्म मृति दुखकारी;
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कुंकुम ल्यावैं अगर मिलावैं, चंदनतें घनसार घसै,
तसु परसि समीर चलै अति सीतल, महा दाह ततकाल नसै।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शालि अखंडित सौरभ मंडित, शशि सम उज्ज्वल अनियारे,
भूपन कूं औसर मुक्तासी दुति, पुंज करैं भवि मनहारे।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम मनोहर ध्राणनके हर, पंचवरन अति सुखकारी,
सुरतरुके पावन चखि ललचावन, अति मृदुतैं भवि भरि थारी।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति मिष्ट मनोहर घेवर फेनी, मोदक गूझा भरि थारी,
रसना के रंजन रसके पूरे, क्षुधा निवारन बलकारी।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रतनमय जोति मनोहर, कनक रकाबी में धारैं,
तम मोह नसै जिम पवन थकी घन, स्वपर लखै गुण विस्तारैं।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप दशांग हुताशनके संग, लै धूपायन मांहि भरैं,
तसु सौरभतैं मधु गुंजत आवैं, अष्टकर्म ततकाल जरैं।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूंगी दाख बदाम छुहारा, अेला श्रीफल जुत ल्यावें,
भरि कनक थाल में मनके रंजन, मोच्छ महाफल लहु पावें।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दशांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढ़े प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

षष्ठी कार्तिक कृष्ण ही, अपराजित अहमिंद,
चय शिवदेव्या उर लयो, जजूं चरण गुणवृंद।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जनमें श्रावण षष्ठि सित, वासव चतुरनिकाय,
स्नपन करि सुर गिरि जजे, मैं जजहूं गुणगाय।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

षष्ठी श्रावण सुकल ही, तजि विवाह सुकुमार,
उर्जयंत गिरि तप धरयो, जजू चरण अवतार।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सुदि अश्विन प्रतिपद हने, घातिकर्म दुखदाय,
घाति कर्म केवल भये, जजूं चरण गुण गाय।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सकल साढ सप्तमि गये शेष कर्म हनि मोख,
सिव कल्याण सुरपति कर्यो, जजूं चरण गुणघोख।

ॐ ह्रीं अषाढशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(रोला छंद)

लखि अनित्य भव तज्यौ राज तृणवत तप धार्यो,
करि बहु विधि उपवास सकल आगम विसतार्यो;

मुनि सुप्रतिष्ठित नमूं भावना षोडस भाये,
करि समाधि अहिमिंद भये तीर्थंकर थाये।१।

(पद्धरी छंद)

जय समुद्रविजै शिवदेवि माय, श्री नेमि जिनेश्वर गर्भ आय,
तिष्ठे कार्तिक सुदि षष्ठि देव, गर्भहि कल्याण आये स्वमेव।२।
हरिवंस व्योम मधि सुष्ठु भान, सित श्रावण षष्ठी जनम थान,
सौरीपुरतैं सुरमेरु लेय, जन्माभिषेक करि गण भनेय।३।
जय देव महाबल धरन बाल, द्रह प्रचुर नीर मनु कुसुम माल,
जय धीरधुरंधर मेरु शृंग, अति पावन लावनि सकल अंग।४।
जय दोष निराकृत धर्म धोख, भवतारक संभव करन मोख,
जय मोहन मूरति सिष्ट पाल, पितु मात पद्म रवि प्रातकाल।५।
बहु नृत्य ठानि पितु मातु देय, जय वृद्ध भये गिन राज हेय,
सित श्रावण षष्ठी जंतु पेखि, भयभीत भये भवतें विसेखि।६।
तप धारि तज्यौ परिग्रह पिसाच, नुति सिद्धोंको करि त्याग वाच,
गहि ध्यान खडग चउघाति मार, लहि केवल शिव प्रतिपद कुआर।७।
धन देव रच्यौ समवादिसार, जिन अंतरीक करिकैं विहार,
वन ग्राम नगर पुर सर्वदेश, कहि धर्म भव्य तारे महेश।८।
भवकूप इहै अघको भंडार, तिसमैं दुख है सुख ना लगार,
तुम तारण विरद निहारि देव, मैं सरन गही मुझि तारि देव।९।
दिन सप्तमि सित आषाढ मोखि, जिन प्रकृति पिचासी शेष सोखि,
गिरनारि शिखर निर्वानथान, चंदराम नमै निति धारि ध्यान।१०।

(धत्ता)

इह पंच कल्याने सुरपति ठाने, नरपति खगपति निति ध्यावैं,
जो पढें पढावैं सुर धरि गावैं, तो शिवके सुख लहु पावैं।११।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(दोहा)

करि निजध्यान प्रचंड बल, जये कर्म अरि चंड;
चिदगुन ज्योति अखंडमें, मिले गगन द्वय खंड।
सो सीमंधर देव वर, दीनबंधु स्वयमेव;
करि करुणा मुझ दीनपै, तिष्ठ तिष्ठ इत देव।

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-सीमंधर परमदेव! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वाननम्; अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्; अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लीलावती छंद)

जय कमल सुवासित तृष्णानाशित, हिमगिरि सम सित तापहरा,
भरकरि वर झारी भ्रमतम हारी, धारत हूं त्रय धार धरा;
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं,
अघगनकर चूरन हे सुख पूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ-श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कसमीर सुरंगी घसि हरिसंगी, परिमलअंगी तापहरी,
प्रभु चरन चढावत सुख सरसावत, जावत भव आताप टरी; जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल शुभ सुंदर श्वेत सुमनहर, पावन दधिसुतदुतिहारी,
हे जिन करुणान्वित अक्षयपदहित, यजूं चरन तव भरि थारी; जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सु मनहर विविधवरनपर, कुंद गुलाब जु आदि वरं,
लहिकर जिन पदवर पूजत सुखभर, संवर अरिसर नाश करं; जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक बलकारन क्षुधा निवारन, द्रृगमनहारन मिष्ट बने;
निजगुणबलधारन ले सुखसारन, पूजूं जिनपद इष्ट घने, जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम पटल विनाशन ज्योति प्रकाशन, दीपक दिव्य उजास करूं;
भ्रम तिमिर विनाशन प्रभु जगपावन, पावन ऊपरि वार धरूं;
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं,
अघगनकर चूरन हे सुख पूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

लहि चंदन बावन चूरन पावन, अगरादिक करि संग भले,
खेऊं जिन पदतर ये निज मन धरि, निज गुनहर वसु कर्म जले; जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल प्रासुक सुंदर मिष्ट मनोहर, खारिक लौंग बदाम भले;
जिन चरन चढाऊं हर्ष बढाऊं, चाखनकूं फल सुगुन रले। जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल हरि अक्षत अरु सुभग सुमन चरु, दीप धूप फल पुंज सजूं,
मन आनंद अति धरि अर्घ सु लेकरि, श्रीपतिजूके चरन जजू। जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शिव शिवमय शिवकर शिवद, शिवदायक शिव-ईस;
शिव सेवत शिवमिलन हित, सीमंधर जगदीश।१।

(छंद : चंडी वा रूप चौपाई)

जय जगपति वरगुन वरदायक, केवल सदन मदन मदघायक;
पर्म धर्म धर भ्रमपुर नाशन, शासनसिद्ध अचल अचलासन।२।
अखट अघट रस घट घट व्यापक, अनहत आहत सुगुन प्रकाशक;
धरत ध्यान दुरगति दुख वारन, जगजलतैं जगजंतु उधारन।३।
अशरनशरन-मरन-भय-भंजन, पंकज वरन चरन मनरंजन;
निजसम करत जु मन तुव धारत; ज्यों पावकसंग ईंधन जारत।४।

नृप श्रीहंसतनुज वर आनन, लच्छन वृषभ लसत अघभानन;
पुंडरपुर पुर है मन भावन, सो तुम जनमयोग भयो पावन।५।

लियो जनम जगजन दुखनाशन; शिर अमरेश धरत तुव शासन;
होत विरक्त देव ऋषि आवन, भयो परम वैराग्य दिठावन।६।

शिबिका दिव्य कहार पुरंदर, हो सवार जिन धर्म धुरंधर;
संग सकल तजि व्रत धरि पावन, लगे ध्यान मारग शिव जावन।७।

करि वटमार घातिया चूरन, शक्ति अनंत सजी परिपूरन;
पूरव जनम भाव वर भावत, ता फल ये अतिशय दरशावत।८।

बिन इच्छा विहार सुखकारन, भव्यनकूं भवपार उतारन;
यदपि देव तुम दृष्टि अगोचर, तदपि प्रतीत धरत हम निजउर।९।

जानत हूं तुम हो जगजानन, मैं किम दुःख कहूं चतुरानन;
दीनबंधु दुःख दीन मिटावन, चहिये अपनो बिरद निवाहन।१०।

(हरिगीत)

वर वरन भवतपहरन, आनंदभरन दृग मन भावने,
युत सुरस पूरति गंध शुभ, भविवृंद अलि ललचावने,
सर्वज्ञ आगम विटप के शुचि सुमन वरन रसाल ये,
घर सुमति गुन सह 'थान' उर जगभालकी जयमाल ये।११।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

सीमंधरजिन पूजि करे जो थुति भली,
दहे सकल अघवृंद लहे मनकी रली;
निरआकुल है हरे मोहके द्वंदकूं,
टारे भ्रम आताप लखे चितचंदकूं।१२।

। इति आशीर्वादः। (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री धातकी-विदेह-भाविजिनवर पूजा

(अडिल्ल छंद)

धातकीखंड महान सुसुंदर जानिये,
बत्तीस क्षेत्र विदेह जहां परमानिये;
भावीके भगवान विराजत है तहां,
आह्वानन तिन करूं, प्रभु तिष्ठो यहाँ।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थकरदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।; अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गझल)

हिमानिका लिया पानी, समानी चंद सीतानी,
दिया धारा जु हित सानी, निशानी सौख्य अमलानी;
भविष्यत् धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण निधि ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ चरणकमलपूजनार्थ जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन कदलिनंदन, घसो आताप हरि फंदन,
चढाउं पद्म जगवंदन, लहौ निर्वाण निर्फंदन; भवि०

(चंदनं)

धरे अक्षत चरण आगे, निशापति-किरण लज भागे,
किधौं जो पुण्य तुम त्यागे, परो यह रस अति जागे; भवि०

(अक्षतान्)

सुमन अति सुमनसे ल्याऊं, सुमन के सुमन से ध्याऊं,
सु मनमथको हरो पाऊं, निजानंदात्म गुण गाऊं; भवि०

(पुष्पं)

ये अक्षक पक्षको लक्षक, सुलक्षक स्वक्ष क्षुधनक्षक,
धरो नैवेद्य है दक्षक, निकक्षक कर्म चित्तरक्षक; भवि०

(नैवेद्यम्)

चढाऊं दीप तम नाशै, उडै कज्जल रु परकाशै,
जो आये नाथके पासे, उरघ तत्काल ही जासे;
भविष्यत् धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण निधि ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(दीपं)

तगर कृष्णागुरु लेउं, वरंगी वह्निमें खेऊं,
उड़े जो धूम्र इम बेऊं, भगे अध चरण तुम सेऊं; भवि०

(धूपं)

फल सु दाडिम नारंगी, अभंगी पुंगी बहु रंगी,
धरे ढिग चरण मनरंगी, लहे पद अचल निरसंगी; भवि०

(फलं)

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ्य जुत आरती कीने,
हरो आरत कृपाभीने, कटै जंजाल दुख दीने; भवि०

(अर्घं)

जयमाला

वज्रधर अरू चक्रधर, अरु धरणिधर विद्याधरा,
तिरशूलधर अरु काम हलधर सीस चरणनि तलधरा,
उन धातकी द्वीपस्थ आगामी जिनेश्वर पदकमल,
पूजो सदा मन वचन तन करि, हरहु मेरे कर्ममल।

(चाल मंगलकी)

जयवंतौ जगमें रहो जगसार हो, भाविके जिनराज;
जिनके धर्म प्रभावसे जगसार हो, पावै सुखके साज।

सुखसाज पावै सकल जगके सुर असुर सेवा करैं,
तीर्थेश पदकी अतुल महिमा सुनत कोटिक अघ टरैं;
जिन गर्भ अरु अवतार तपमें सकल सुरनर आईयो,
अति हर्षयुत करि हरि महोत्सव पुण्य भाव बढाईयौ।

घाति कर्म चउ घातिके जगसार हो, पायौ केवलज्ञान;
समवसरन रचना करी जगसार हो, हर्षित इन्द्र महान।
हर्षित इन्द्र महान सुरगण सहित चउविध आईयो,
जयवंत जिनवर देखि सुरपति आय निज सिर नाईयो;
लखि मानथंभ उतंग प्रथमहिं मान तजी पूजा करी,
अनुराग रंजित हरि हृदयमें भक्तियुत बहु थुति करी।
समोसरन के मध्यमें जगसार हो, श्री मंडप सुखरास;
तिहिं बिच सिंहासन बन्यो जगसार हो, तापरि कमल प्रकाश।
परकाश करन उद्यौत चहुंदिश रत्न अनुपम लगि रहे,
तिहिं करनिका पर अंतरीक्ष जिनेश पद्मासन ठ्ये;
जगभूप चतुरानन विराजै, कोटि रवि शशि लाज ही,
बसु प्रातिहारज द्रव्य मंगळ अष्टविध तहां राज ही।
दिव्यध्वनि जिनकी खिरै जगसार हो, वरणी गणधर देव;
सुरनर पशु हर्षित सुने जगसार हो, सुख पावै स्वयमेव।
स्वयमेव निजपर भेद जानें, कर्म अरिको क्षय करैं,
उर धारि संयम करो बहु तप, मुक्तितिय सहजै वरैं;
इत्यादि अतुल अनंत महिमा, कहत पार न पाव ही,
निजकाज जिनवर आज हमहू, भक्तियुत सिर नावही;
है धातकी द्वीपस्थ भगवन्! यह अरज सुन लीजिये,
विधिबंध फंद निकंद कारण, शक्ति प्रभु वर दीजिये।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ चरणकमलपूजनार्थ अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस असार संसारमें, तारणतरण जिहाज;
सो मेरे हिरदै बसौ, भाविके जिनराज।

। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री बाहुबलीस्वामी की पूजा

कर्म अरिगिण जीतीके, दरशायो शिवपंथ,
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो, भोगभूमिके अंत।
समर दृष्टि जल जीत लही, मल्लयुद्ध जय पाय,
वीर अग्रणी बाहुबली, वंदो मन वच काय।

ॐ ह्रीं श्रीगोम्मटेश्वर बाहुबली अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथ अष्टक-चाल जोगीरासा)

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुःख पावै,
तिहि दुःख दूर करन जिनपदको, पूजन जल ले आवै;
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
जिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरे नवनिर्मित प्रतिष्ठेय श्री बाहुबली मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह संसार मरुस्थल अटवी, तृष्णा दाह भरी है,
तिहि दुःखवारन चंदन लेके, जिनपद पूज करी है। परम पूज्य०
(चंदनं)

स्वच्छ सालि शुचि नीरज रजसम, गंध अखंड प्रचारी,
अक्षयपदके पावन कारन, पूजे भवि जगतारी। परम पूज्य०
(अक्षतान्)

हरिहर चक्रवर्ती सुर दानव, मानव पशु बस याके,
तिहि मकरध्वजनाशक जिनको, पूजो पुष्प चढाके। परम पूज्य०
(पुष्पं)

दुःखद त्रिजग जीवनको अति ही, दोष क्षुधा अनिवारी,
तिहि दुःख दूर करनको चरुवर ले जिन पूज प्रचारी। परम पूज्य०
(नैवेद्यम्)

मोह महातममें जग जीवन, शिव मग नाहीं लखावे,
तिहि निरवारन दीपक कर ले, जिनपद पूजन आवे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
जिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

(दीपं)

उत्तम धूप सुगंध बनाकर, दश दिशमें महकावे,
दशविध बंध निवारन कारण जिनवर पूज रचावे। परम पूज्य०

(धूपं)

सरस सुवरण सुगंध अनूपम, स्वच्छ महाशुचि लावे,
शिवफल कारण जिनवर पदकी, फल सों पूज रचावे। परम पूज्य०

(फलं)

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे। परम पूज्य०

(अर्घम्)

जयमाला

(दोहा)

आठ कर्म हनि आठ गुण, प्रगट करे जिनरूप,
सो जयवंतो भुजबलि, प्रथम भये शिवरूप।

(कुसुमलता छंद)

जै जै जै जगतार शिरोमणी, क्षत्रिय वंश असंस महान;
जै जै जै जग जनहितकारी, दीनो जिन उपदेश प्रमाण।
जै जै चक्रपति सुत जिनके, सत सुत जेष्ठ भरत पहिचान;
जै जै जै श्री ऋषभदेव तिनसों जयवंत सदा जग जान।।१।।

जिनके द्वितीय महादेवी सुचि नाम सुनंदा गुण की खान;
रूप शील संपन्न मनोहर, तिनके सुत भुजबलि महान।
सवा पंच शत धनुष उन्नत तनु, हरित वरण शोभा असमान;
वैडूर्यजमणि पर्वत मानो, नील कुलाचल सम थिर जान।।२।।

तेजवंत परमाणु जगतमें, तिन करी रच्यो शरीर प्रमाण;
सत वीरत्व गुणाकर जाको, नीरखत हरि हरषे उर आन।
धीरज अतुल वज्रसम नीरज सम वीराग्रणी अति बलवान;
जिनछबी लखी मनु शशीछबी लाजे, कुसुमायुध लीनों सुप्रमान ।।३।।

बालसमै जिन बाल चंद्रमा, शशीसे अधिक धरे द्युतिसार;
जो गुरुदेव पढाई विद्या शस्त्र शात्र सब पढी अपार।
ऋषभदेवने पोदनपुरके नृप कीने भुजबली कुमार;
दई अयोध्या भरतेश्वरको आप बने प्रभुजी अनगार ।।४।।

राजकाज षट्खंड महीपति सब दल लई चढी आये आप;
बाहुबली भी सन्मुख आये, मंत्रीन तीन युद्ध दिये थाप।
दृष्टि, नीर अरु मल्ल युद्धमें दोनों नृप कीजो बल धाप;
वृथा हानी रुक जाय सैनकी, यातै लडीये आपो आप ।।५।।

भरत भुजबली भूपति भाई, उतरे समरभूमिमें जाय;
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति, मल्लयुद्ध तब करो अध्याय।
पग तल चलत चलत अचला तब, कंपत अचल शिखर ठहराय;
निषध नील अचलाधर मानो, भये चलाचल क्रोध बसाय ।।६।।

भुज विक्रमबलबाहुबलीने लये चक्रपति अधर उठाय;
चक्र चलायो चक्रपति तब तो भी विफल भये तिहि ठाय।
अति प्रचंड भुजदंड सुंड सम नृप शार्दूल बाहुबली राय;
सिंहासन मंगवाय जासपै अग्रजको दीनों पधराय ।।७।।

राज्यरमा रामासुर धुनमें जोवन दमक दामिनी जान;
भोग भुजंग जंग सम जगको, जान त्याग कीनो तिहि थान।
अष्टापदपर जाय वीर नृप वीर वृत्ति धर कीनों ध्यान;
अचल अंक निरभंग संग तज, संवतसरलों एक स्थान ।।८।।

विषधर बंबी कटि चरणतल, उपर बेल चढी अनिवार;
युगजंघा कटी बाहुवेढी कर पहुंची वृक्षस्थल परसार।
सिरके केश बढ़े जिस मांही नभचर पक्षी बसे अपार;
धन्य धन्य इस अचल ध्यानको महिमा सुर गावे उरधार।।९।।

कर्मनाशी शिव जाय बसे प्रभु, ऋषभेश्वरसे पहले जान;
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि, जगदीश्वर पद लयो पुमान।
वीरवृत्ति वीराग्रगण्य प्रभु बाहुबली जगधन्य महान;
वीरवृत्तिके काज जिनेश्वर नमैं सदा जिनबिंब प्रमान।।१०।।

(दोहा)

श्रवणबेलगोल विंध्यगिरि जिनवर बिंब प्रधान;
छप्पन फूट उत्तंग तनु खड्गासन अमलान।
अतिशयवंत अनंत बल-धारक बिंब अनूप;
अर्घ चढाय नमों सदा जय जय जिनवर भूप।।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरे नवनिर्मित प्रतिष्ठेय श्री बाहुबली मुनीन्द्राय अनर्ध्यपदप्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जंबूद्वीप सम्बन्धित
समस्त जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब - पूजा

(छंद हरिगीतिका)

द्वीप जंबू विषै जिनथल, कृत्रिम अकृत्रिम है सही।
तिन मांहि 'जिन'के बिंब विलसहि, तिष्ठ है पुनकी मही।
ते सकल प्रतिमा भक्ति करी, मैं जजों मन-वच-कायतै।
वसु द्रव्यतैं तिन पांय पूजो अंग आठ नमायके।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल वीरजिनचंद)

निरमल नीर सुहावनोजी, कनकझारी धरि लाय।
जंबूदीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, जनम जरा मिट जाय।
भाई जिन पूजों मन वच लाय।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।१।

चंदन घसु शुभ भावनोजी, निर्मल नीर मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, जगत-ताप मिट जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।२।

अक्षत नख शिख सुध सही जी, उज्ज्वल सुगंध सुलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अक्षयपद करतार।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।३।

फूल सुगंध सुहावनेजी, अलि गुंजत शुभ लाय।
जंबूदीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, कामभाव नशि जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।४।

षट् रस जुत नैवेद्य ले जी, मन वच काय लगाय।
जंबूदीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, क्षुधारोग मिट जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।५।

रतनमई दीपक कियोजी, कनक थाल धर लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, मोह तिमिर नशि जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।६।

धूप भेलि दश विधि करीजी, परिमल जुत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।७।

श्रीफल लौंग बिदाम लेजी, और भले फल लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः मोक्षफलप्राप्ये फलं निर्व०

जल चन्दनको आदि देजी, वसु द्रव अर्घ मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अजर अमर तन थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्०

(छंद जोगीरासा)

जंबू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेहा।
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा।
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही।
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी।
षोडश वनके थान चार गजदंत हैं।
ह्यां इक इक जिनभवन जजों ते संत हैं।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंध्यष्टसप्ततिअकृत्रिमजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद वेसरी)

जंबू द्वीप विषै जिन गेहा, तिनकी माल सुनो करि नेहा।
सुनते ज्ञान होय सुख पावै, पुण्य बढै अद्भुत जस ल्यावै।।१।।

(छंद पद्धरि)

जिनथान दीप जंबू मँझार, लख मेरु सुदर्शन तीर्थ सार।
तिस ऊपर जिनके थान जोय, सो पूजों मन वच कर्म धोय।।२।।
गजदंतों पे जिनगेह जान, बिन किये रतनमय शुभ निधान।
तहां रतनबिंब अति शुभ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।३।।
तरु शाल्मली जंबू सुजान, तिनपे जिनमंदिर अचल मान।
तिन मांहि रतनमय बिंब जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।४।।
षट् जानि कुलाचल गिरि सु सार, तिनपे जिनमंदिर पाप जार।
तिनपे जिनमंदिर सुभग सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।५।।
भरत ऐरावत बैताड़ जानि, तिनपै जिनमंदिर अचल मानि।
प्रतिमा तिनमें मणिरूप जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।६।।
पूरब विदेह वैताड़ मांहि, जिनमंदिर मणिमय अचल ठांहिं।
है अचल बिंव जिन माँहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।७।।
पश्चिम विदेह वैताड़ थाय, जिनगेह तिनोंके शीश ठांय।
जिनविंब तिनोंमें जान सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।८।।
वक्षार शिखरके शीश पांय, पूरब विदेहके मांहि थाय।
तिनमें जिनमंदिर तीर्थ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।९।।
पश्चिम विदेह वक्षार जान, तिन शीश गेह जिनके सु मान।
प्रतिमा मणिमय तिन माँहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।१०।।
जे नदी परवत माँहि थाय, जिनगेह और विन किये पाय।
तिनमें प्रतिमा जिन शीश सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।११।।
जे किये थान कैलास माँहि, मंदिर तिनके अति सुभग थाहि।
तहां प्रतिमा विनय स्वरूप सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।१२।।
भरत ऐरावत माँहि पाय, भवि करवाये जिनथान थाय।
तहां विनय सहित जिनबिंव सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।।१३।।

जे होय विदेह सु पूर्व माँहि, जिनभवन भव्य कृति सुभग ठाँहि।
तिन मांहि विनयजुत बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।१४।

जो पछिम विदेह मँझार जानि, चैत्यालय भवि कृति जोग मानि।
जुत विनय तिनोंमें विंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।१५।

जे तीर्थस्थान सुकृत निधान, है सिद्धक्षेत्र महिमा सुथान।
तहां सुर नर पूजै दीन होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।१६।

जे अतिशय क्षेत्र सु पूज्य थाय, ते विनय सहित जिनबिंव पाय।
पूजैतें सुकृत लाभ होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।१७।

इत्यादिक जम्बू दीप माँहि, जिनथान बिंब जिन विनय ठाँहि।
सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्र जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय।१८।

(दोहा)

क्षेतर जंबूदीपके, हो संबंध जिनथान।
तिन पूजै सुख थल मिले, ते पूजों हठ ठान।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूदीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष।

। इत्याशीर्वाद।

स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा

(राग–सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान सुमंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
"तू परमातमा है", ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

उज्ज्वल जल शीतल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व०

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः चंदन निर्व०

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्व०

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यम् निर्व०

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्व०

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व०

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः फलं०।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अर्घं निर्व०

जयमाला

(राग–जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है॥
स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा॥
सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं॥
विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं॥
परमागम मंदिर अद्‌भुत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें॥
पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित हैं।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं॥
स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया॥
अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु-वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली॥
प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे॥

जंबूदीप रचना न्यारी है, शाश्वत जिन प्रतिमा प्यारी है।
गजदंत, कुलाचल, मेरुगिरि, विजयार्ध, वक्षार सुसुंदर है।।

विदेही सीमंधर युगमंधर, बाहु-सुबाहु जिन सोहे हैं।
भरतैरावतके शाश्वत जिन, सुवर्णपुरीमें पधारे हैं।।

दिव्यमूर्ति बाहुबल जिनकी, अति सुंदर अचरजकारी है।
गुरुकृपा मेघामृत बरसे, गाजत जय जय जयकारी है।।

प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है।।

जयवंत रहो जयवंत रहो, स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह, स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी-अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, उपरतले विराजमान नेमिनाथ आदि पंचबालयति जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल-विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिर बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य-चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बू-भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर-द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; प्रवचनमण्डपस्थ जिनालये नवनिर्मित पार्श्वनाथ भगवान, सीमंधर भगवान, धातकीखण्ड विदेही भावि तीर्थाधिनाथ जिनेन्द्रः; नवनिर्मित बाहुबली मुनीन्द्र एवं मेरु-जम्बूद्वीप आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रभ्यः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसी मंगलमाल यह, जिन-गुरु-मात प्रताप,
भव-भव पाऊँ साथ तुम, स्वर्ग-मुक्ति दो आप।

। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विभाग-२ मंडल विधान

कविवर टेकचन्दजी कृत

* श्री पंचपरमेष्ठी पूजन विधान भाषा *

मंगलाचरण स्तुति

(दोहा)

मनरंजन भंजनकरम, पंच-परमगुरु-सार।
पूजत हैं सुर-नर-खगा, पावत हैं भवपार।।१।।

(सोरठा)

प्रथम देव अरिहंत, गर्भ आदि षट् मासके।
मणिमय नगर करंत, पीछे जिन अवतार ले।।२।।

(चौपाई)

पर परजाय छांडि जिनराय, गरभ विषै अवतार धराय।
तब षोड़स सुपना मा लेय, तिनकी कथा सुनो पुनि जेय।।३।।

(अडिल्ल छंद)

ऐरावत गज वृषभ सफेद सुजानिये,
सिंह पुष्पकी माल लक्ष्मी हित दानिये।
पूरण शशी रवि कुंभ दोय शुभ देखिया,
मच्छ-जुगल जल-थान केलि जुत पेखिया।।४।।

(पद्धरी छंद)

सरवर कमलन करि पूर्ण जोय, जलराशि समुद्र फिर लख्यो सोय।
सिंहासन सुरग-विमान जान, धरणेंदर देख्यो जान मान।।५।।

(गीता छंद)

रतन-राशि निहार अगनी धूम बिन जोई सही।
ये सुपन लखि मा हरष पायौ फेरि जिन जनमे सही।।
विधि तरन पुन तप ठानि अघ हरि, ज्ञान केवल पाय है।
तब होय अतिशय नाम सुनि अब जनम ते इस थाय है।।६।।

(छन्द वेसरी)

तब होय दस जिन लहै सु ज्ञानो, चौदह अतिशय सुरकृत मानो।
आठ प्रातिहारज शुभ होवै, अनंत चतुष्टै सब मल खोवै ।।७।।

(चाल छन्द)

ये छ्यालिस गुण जुत देवा, विचरे संग द्वादस भेवा।
छबि देखि समोसर्न केरी, हरि-सुर पूजैं करि फेरि ।।८।।

(चाल जोगीरासेकी)

फेरि सिद्ध गुण आठ जु पाये, आठ करम ही जारै।
होय निरंजन चेतनमूरति लोकशिखर थिति धारै ।।
आचारज गुण धार छत्तीसों सुनि तिन कथा सोहाई।
दसधा धर्म, तप द्वादस गाये, पंच अचार सुभाई ।।९।।

(जिनजयकी चाल)

गुप्ति तीन षट आवसी सब मिलि होय छत्तीसा जी।
बहुश्रुत गुणपच्चीस हैं अंग पूरव सब पूरा जी।
बहुश्रुत पूजों भावसों।
बीस आठ गुण साधुके तहां पंच महाव्रत सारो जी।
पंच समिति, पंच अखि-दमै, षट् आवसि भेद सु धारो जी।
ते गुरु अति सुखकार हैं ।।१०।।

(कड़खा छन्द)

भूमि सोवैं सदा मंजन ते ना करैं, त्याग वस्त्र तनों सीस लुंचै।
खाय इक बार थिति सुभग ठानैं सदा, दंतधोवन तजैं साध मानैं ।।११।।

(चाल-सुनभाईरे की)

येही पंचगुरु पूजिये सुनि भाईरे जो चाहै भवपार।
चेत मन भाईरे।
येही भवदधि नाव हैं सुनि भाईरे, को पुन्यतें यह पाय।
चेत मन भाईरे ।।१२।।

(कड़खा छन्द)

येही परमेष्ठी जो पाँच जगपूज्य हैं, मोह सो सुभट इन हेरि मारयौ।
शेष कर्म सात तब परे कस गिनति मैं, मारि के भवनमैं काज सारयौ॥
आप भव तिर गये और काढन भये, धारि करुणा जगत जीव केरी।
दीनको तार संसार-हर देव हैं, मेटि हैं भगतकी जगत फेरी॥१३॥

इति मंगलाचरण स्तुति पाठे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ समुच्चय पूजा

(स्थापना; चाल-पंच मंगलकी)

पंच परमगुरु सब सुखदाई, पूजो भविजन हरष बढ़ाई।
तिनके पद सुर हरि नित्य सेवैं, पूरव अघ वन को धो दैवें॥
दैवें जु वहनी सकल वनकूं, और कहो कहा गाइये।
ताके सुफल भव छांडि भविजन मुक्ति रमणी पाइये॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माणः पंचपरमेष्ठीजिनसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट्! आह्वानम्।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माणः पंचपरमेष्ठीजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! स्थापनम्।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माणः पंचपरमेष्ठीजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(चाल-जोगीरासेकी)

झारी कनक सुधाट मनोहर निर्मल नीर भराई।
जिन, सिद्ध, आचारज, अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई॥१॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माणे पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन बावन निर्मल पानी घसिकर लेकर आई।
जिन, सिद्ध, आचारज, अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई॥२॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माणे पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत नख सिख सुगंध शुभ नैननको सुख दाई।
जिन, सिद्ध, आचारज, अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।३।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठीभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरद्रुम पहुप सुगंध मनोहर, मोहत भृंग-चित भाई।
जिन, सिद्ध, आचारज, अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।४।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस जुत नैवेद्य पवित्तर, क्षुधा नाशन लाई।
जिन, सिद्ध, आचारज अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।५।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतन दीप धरि थाल आरती हरषित चित ले भाई।
जिन, सिद्ध, आचारज अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।६।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दसधा धूप मिलाय अग्नि मधि खेऊं अति उमगाई।
जिन, सिद्ध, आचारज अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।७।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्योडष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग सुपारी खारक सुर-शिव-फलदा भाई।
जिन, सिद्ध, आचारज अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।८।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुह चरु ले दीप धूप फल दाई।
जिन, सिद्ध, आचारज अरु बहुश्रुति, साधु जजों हरषाई ।।९।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्योअनर्धपदप्राप्तायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु जी,
येही पंच भव तार भव्य अघ मादजी।
पूजत सुर नर खगा मुक्ति-फल कारनै,
तातें मैं भी जजों पाप हठ टारने ।।१०।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हतादिपंचपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत पूजा

(हरिगीत)

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अंतरीक्ष विराजिया,
यह वीतराग दशा प्रत्यक्ष विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश-सभाके भवि जीव मस्तक नायकै,
बहु भान्ति बारंबार पूजें, नमैं गुणगण गायकै।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहित-अर्हत्परमेष्ठी! अत्रावतरावतर संवौषट्! आ०

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहित-अर्हत्परमेष्ठी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! स्था०

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहित-अर्हत्परमेष्ठी! अत्र मम सन्निहितो भव भव! वषट् सं०

अरिहन्तके ४६ गुणके पृथक् पृथक् अर्घ

जन्मके दश अतिशय

(चौपाई)

जनमत दस अतिशय जिन लेय, पूजे सुर नर हर्ष धरेय।
नाहि पसेव होय तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि।।१।।

ॐ ह्रीं पसेवरहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहि होय तास तन मांहि, निरमल देह होय सुख दांहि।
ये अतिशय जिन तनमैं पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि।।२।।

ॐ ह्रीं मलरहितान्वितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस थान सम चतुर जु होय, और घाट कबहूं नहि जोय।
ये अतिशय जिन जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि।।३।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानान्वितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

संहनन वज्र-वृषभ जो होय, अद्भुत महिमा धारै सोय।
ये अतिशय जिन जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि।।४।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननसहितजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

होय शरीर सुगंध अपार, नासिक विषै लुब्ध करतार।
ऐसी शोभा अन्य न पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ।।५।।

ॐ ह्रीं सुगंधितशरीरसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसो रूप जिनेश्वर लहै, कामदेव कोटिक छबि जहैं।
ये अतिशय जनमत जो पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ।।६।।

ॐ ह्रीं महारूपातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भले भले लक्षण सो जान, गुण अनेक तनी है खान।
ये शुभ छबि सो जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ।।७।।

ॐ ह्रीं शुभलक्षणातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमत ही जिनके तन होय, श्रोनित स्वेत वरन अवलोय।
ये अतिशय धारै तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ।।८।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्ण श्रोणितातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसो वचन कहै मुख सोय, तिनको सुनि जन मोहित होय।
मधुर मिष्ट वच अति सुख दाई, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ।।९।।

ॐ ह्रीं मधुरवचनातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ताके बल सम और न धाम, है बल अनंत जिनेश्वर ठाम।
जनमत ही बल अतिशय पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ।।१०।।

ॐ ह्रीं अनंतबलातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति जनमके दस अतिशय समाप्त।

केवलज्ञानके दश अतिशय

(अडिल्ल छंद)

समवसरण जुत जहाँ जिनेश्वर थिति करें,
तहं ते जोजन इक शत दुरभिख ना परे।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ।।१।।

ॐ ह्रीं शतयोजनदुर्भिक्षनिवारकजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जिन केवल लहैं गमन नभमें करें,
देव असंख्या गैल भक्ति मुख उच्चरें।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।२।।

ॐ ह्रीं आकाशगमनातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर जहाँ थिति करें सदा हित दायजी,
तिस थानक नहिं कोय मारने पायजी।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।३।।

ॐ ह्रीं अदयाभावातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव नरा पशु खगा और को दुठ तनी,
इसको उपसर्ग नाहिं बानि जिन इम भनी।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।४।।

ॐ ह्रीं उपसर्गरहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा अति दुःख करे जगत इस वसि परयौ,
सो जिन कवल-अहार खान सब परिहरयौ।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।५।।

ॐ ह्रीं कवलाहाररहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जव देव जिनेश्वर थिति करैं,
तब मुख दीसें चार भुवनकों सुख करैं।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।६।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखविराजमानजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत देश सकल भाषा सही,
सब विद्या अधिपति सकल जानन मही।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।७।।

ॐ ह्रीं सकलविद्याधिपत्ययुतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल तन आकार मूरती बन रहयौ,
ताकी छाया नांहि होय अचरज भयौ।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।८।।

ॐ ह्रीं छायारहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नख कच तन जो होय बढ़न तिनको रह्यो,
है जैसे ही रहैं एक गुण यह लह्यौ।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।९।।

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नेतर का टिमकार नाहि भौं कच हलैं,
नासागर दिठ सदा काल जिन ध्रुव तुलैं।
ऐसो अतिशय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है।।१०।।

ॐ ह्रीं नेत्रभ्रूचपलतारहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

ये दस अतिशय सार, केवल उपजे जिन लहैं।
सो जिन हैं भवतार, सेवौ भवि वसु द्रव्यतें।।११।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानस्यदशातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति केवलज्ञानकके दश अतिशय समाप्त)

देवकृत चतुर्दश अतिशय

(सोरठा)

अर्थ मागधी वानि, सब जीवन सुख दाय है।
अतिशय जिनको मान, देव सहाई धुन कहे ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीभाषासहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ जिनकी थिति होय, सकल जीव मैत्री समा।
अतिशय जिनको जोय, देव निमित धुनि वरनयो ।।२।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावयुतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रितुके फल फूल, फलैं जहाँ जिन थिति करैं।
जिन अतिशय सुखमूल, देव निमित-मातर सही ।।३।।

ॐ ह्रीं षट्ऋतुफलपुष्पसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पन-सी सब भूमि, होय जहाँ जिन विचरि हैं।
जिन अतिशय अघ होमि, देव निमित-मातर कहै ।।४।।

ॐ ह्रीं दर्पणसमभूम्यतिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधी पौन, होय सकलकूं हितकरा।
जिन अतिशय शुभ सौनि, मोक्ष गमनकों है सही ।।५।।

ॐ ह्रीं सुगन्धितपवनातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव आनन्द, होय जहाँ जिन विचरि हैं।
कटत पापके फंद, देव निमित-मातर सही ।।६।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारकजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कंट रहित भू होय, अतिशय तो जिनदेवकों।
देव निमितको सोय, पूजों शिव सुर अवतरे ।।७।।

ॐ ह्रीं कंटकरहितातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक शुभ वृष्टि, देव करैं अति शुभ लहैं।
सुख पावत लखि सृष्टि, महिमा जिनवर देवकी ।।८।।

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टयतिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वषामीति स्वाहा।

जिनपद पूजैं देव, कमल रचै हित कारने।
अद्भुत महिमा लेव, भाषित जिन सब भवि करो ।।९।।

ॐ ह्रीं पद्मलेकमलरचनायुतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निरमल होय अकाश, सब जीवन सुखकारजी।
अतिशय जिन सुख राशि, देव करें उर भक्ति तैं ।।१०।।

ॐ ह्रीं गगननिर्मलातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सब दिश निरमल होय, धूम खेह वरजित सुभग।
अतिशय जिनको जोय, देव करैं वशि भक्ति के ।।११।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशानिर्मलातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव करैं जयकार, ताकरि नभ बहरो कियौ।
अतिशय जिनको सार, देव भक्ति वशि उच्चरें ।।१२।।

ॐ ह्रीं जयजयशब्दातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र सुर लेय, अगवानी नित संचरै।
अतिशय जिनको जोय, देव करै वशि भक्तिके ।।१३।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य वसु जानि, देव लेय आगे चलैं।
अतिशय जिनको मान, देव सहायक भक्तिके।।१४ ।।

ॐ ह्रीं वसुमंगलद्रव्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छंद)

पंखो चमर छत्र कुंभ भाई। झारी दर्पण पड़घा थाई ।।
साथ्यो मिलि वसु मंगल थानो। ये चौदह देवों कृत मानों ।।

ॐ ह्रीं देवकृतचतुर्दशातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति देवकृत चतुर्दश अतिशय समाप्त।)

अष्ट प्रातिहार्य

(भुजंगी छंद)

कहों प्रातिहार्य वसु हरष दाई,
तहां विरछि अशोक नहीं शोक दाई।
लखें तासको शोक हेरो न पावै,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवै ।।१।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव सुरद्रुम के फूल ल्यावैं,
महा भक्ति वशि मेघ ज्यों ते चलावैं।
मनो जोतिषी ज्यान नभसे सुध्यावैं,
ये महा गुण जिन बिना नाहि आवैं ।।२।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य धुनि सकल जीवको सुहाई,
सुनैं पाप खय होय भला पुन्य दाई।
नमैं देव खग और सबै पाप जावै,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवैं ।।३।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चमर गंध धारा जिमै शोभ दाई,
चले देव कर वोपमा अधिक थाई।
घने जीव मुखते प्रभू भक्ति गावैं,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवैं ।।४।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरवीज्यमानजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जग पूज्य सिंहपीठ भगवान केरौ,
नमै तास को नाशि है जगत फेरौ।
लगे कनक जुत रतन बहु शोभ द्यावैं,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवैं ।।५।।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महा जोति जिनतन तनी चक्र थायौ,
प्रभामंडल ताने भलो नाम पायौ।
लखे तास को सात भौ दरसि आवैं,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवैं।।६।।

ॐ ह्रीं प्रभामंडलप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घनी जातिके देव बाजे बजावैं,
तिको दुंदुभि शब्द शुभ नाम पावैं।
भनै देव मुख बीनती हरष ल्यावैं,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवैं।।७।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़े कनक नग छत्र मणि दंड धारै,
लगी माल मोतिनकी लिपटि सारै।
मनो तीन जग जीव को छाय आवै,
ये महा गुण जिन बिना नाहिं आवै।।८।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविभूषितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वृक्ष अशोक सिंहासन भामंडल चमर।
पुहुपवृष्टि दिव्यधुनि दुंदुभि छत्र वर।
ये वसु प्रातिहार्य जिनों के होय हैं।
इन बिन ये नहिं और देव के सोय हैं।।९।।

ॐ ह्रीं वसुप्रातिहार्यविभूषितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति अष्ट प्रातिहार्य समाप्त)

अनंत चतुष्टय

(वेसरी छंद)

ज्ञान अनंतानंत जनावै, तीन लोक त्रिय काल लखावै।
सर्वज्ञपनों तासतें होई, ये गुण जिन बिन लहै न कोई।।१।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दरसन अनंत अनंत हि जोवै, जो जो भई, होय, फिर होवै।
यातें भी सर्वज्ञ पद होई, ये गुण जिन बिन लहै न कोई ।।२।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत मोह-हरि होवै, बाधा अनंतकाल नहि जोवै।
सुख अनंत बिन देव न होई, ये गुण जिन बिन लहै न कोई ।।३।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय भट जिन जय लीनो, तिन भव-दुख-हरि कारज कीनो।
अनंत वीर्य प्रकाशन होई, ये गुण जिन बिन लहै न कोई ।।४।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

दस जनमत दस केवल उपजे होय है।
चौदह सुरकृत अनंत चतुष्टैं सोय है।
प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुण छ्यालीस जी।
इन अतिशय जुत होय सोय जगदीशजी ।।५।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(वेसरी छन्द)

जिन अतिशय छ्यालीस सुपावै, ताकी कथा सकल मन भावै।
ते भवि चित दे सुनो बखानौ, तातें होय पाप मल हानौ ।।१।।
जनमत दस पसेव नहि होई, सहसथान समचतुर सुजोई।
संहनन वज्रवृषभनाराचै, मल नहिं तन सुगंध शुभ माचै ।।२।।
महा रूप शुभ लच्छन होहै, स्वेत रुधिर वच मधुर सुसोहै।
बल अनंत जिन-तनमैं पावै, जनमत तो ए दश गुण थावैं ।।३।।
केवलज्ञान भये दस जानौ, शत जोजन दुरभिच्छ न मानौ।
नभमैं गमन, दया सब ल्यावै, उपसर्ग नाहि देवके थावै ।।४।।

कवल अहार नहीं जिन केरो, चव मुख दीखे छाँह न हेरो।
सब विद्याके ईश्वर होई, नख अरु केश बढ़ै नहि कोई ।।५।।

आँखिनकी भौं टिमके नाही, ये दस केवल उपजे थाही।
अब सुनि देव चतुरदस ठानै, अर्द्धमागधी भाषा माने ।।६।।

सकल जीवके मैत्रीभावो, सब रितुके फल-फूल फलावों।
दरपन समान भूमि तहाँ होई, मंद सुगंध पवन शुभ जोई ।।७।।

सब जीवनको आनन्द होवै, भूमि कंटिका रहित सु सोवै।
गंधोदक की वरषा जानौ, पद तल कमल रचत हित थानौ ।।८।।

निरमल गगन देव जय वानी, दसों दिशा निर्मल अधिकानी।
धर्मचक्र वसु मंगल ठानौ, ये चौदह देवा कृत मानौ ।।९।।

अब सुनि प्रातिहार्य वसु भाई, वृक्ष अशोक पुहुप वृष्टि थाई।
दिव्यधुनि चमर सिंहासन जानो, भामंडल दुंदुभि सुख दानौ ।।१०।।

छत्र सहित वसु जानौ भाई, फिरि सुचारि चतुष्टै थाई।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख भेवा, ये छ्यालीस गुण जुत हैं देवा ।।११।।

ये गुण जामै देव प्रसिद्धा, इन विन और देव सब अंधा।
याते देव परखि करि सेवो, सुरग मुक्ति सुखको भवि लेवो ।।१२।।

(धत्ता)

जहां ये गुण होई, देव जु सोई, मंगल कर्ता भव्यनको।
सो मोको तारो, या जग प्यारो, दे अपनी थुति सब जनको ।।१३।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहितजिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति अरहंत देव पूजा समाप्त)

सिद्ध पूजा

(अडिल्ल छंद)

आठों कर्म निवारि धारि गुण आठ जू,
भये निरंजन छिनमैं सुखके ठाठ जू।
बातवलै तन ठ्ये लोकत्रिय-पति भये,
ते सिद्ध नमो सुभाय ज्ञान मूरति ठ्ये।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(पद्धरि छंद)

ये ज्ञानावरनी पंच वीर, जिन घात्यौ जिय गुण ज्ञान धीर।
सब वरनी घाति लयो सुज्ञान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।१।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्ञानावरणीयकर्मविनाशक सिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नव दरशन वरनी दरश छाय, इन घाते ते भगवान थाय।
सो धरे अनंत दरशन सुथान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।२।।

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणीयकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म एक वेदनी दोय भेव, मोहिको सुख दुःख देवैं स्वमेव।
हरि वेदनि होय अबाध थान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।३।।

ॐ ह्रीं द्विप्रकारवेदनीयकर्मरहितसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह दो प्रकार वसि जगत जोर, तिन जिय गुण सम्यक् हण्यो सोर।
तिस मोहकों जीते जगत जान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।४।।

ॐ ह्रीं द्विविधमोहकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म आयु चार वशि जगत जेर, खोडे पग ज्यों परवशि पड़ेर।
तिन आयु घाति अवगाह ठान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।५।।

ॐ ह्रीं चतुःप्रकारायुकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाम चतेरा ज्यौं बखान, इन घाति अमूरति भये सुजान।
गति-स्वांगधरन त्यागो महान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।६।।

ॐ ह्रीं नामकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ये गोत्र कर्म दोय विधि सरूप, ता वशि कबहूं फेर रंक भूप।
ये नाशि अगुरुलघु गुण सुमान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।७।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विधि अन्तराय कर्म पाँच भेव, तिन जियको गुण घात्यो स्वमेव।
ताको हति केवल अनंत ठान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान।।८।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारांतरायकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

ज्ञानदरशन आवरण वेदनी मोह जुतं हनी।
आयु नाम रु गोतकर्म अंतराय हरि कीनी मनी।
ये आठ कर्म हरि दाहि, आतम आपको पद शुध कियौ।
ते भये तीनो लोक नायक नमो ध्रुव चाहो जियौ।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चाल पंचमंगलकी)

तीन लोक त्रिय शत तेताली, घनाकार ताके मधि नाली।
चौदह राजू त्रस तहाँ होई, चारों गति रचना मधि सोई।
अधो भाग नर्क सात बताये, मध्यमें नर तिरयंच सुगाये।

गाये जु ऊपर देव थानक, उर्ध्वको फिर सिधशिला।।
ता ऊपरे सिद्धदेव राजे, पवन इकथलमें मिला।
ते कर्म काटि सुवाट जावै, ते सकल इस थल रहैं।
रहैं काल अनंत सुथिर ताहीं, फैरि भव-तन ना लहैं।।१।।

एक एक शिव थानक माहीं, सिद्ध रहै हैं अनंता ठहीं।
भिन भिन रहै मिलै नहि कोई, द्रव्य गुण परजै निज निज सोई।
सबही चेतन गुण बहु धारैं, सुखमय तिष्टत अघ अरि जारैं।।

जारैं जु आठों कर्म भवदा आठ गुण परकाशये।
तिन ज्ञानमें त्रय लोक घट पट आनिकै सब भासये।
ते नमो सब सिद्धचक्र उर धरि तास फल शिवथल लहों।
और थुति फल नाहिं वांछा नाहिं अन मुखते कहों।।२।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति सिद्धपूजा समाप्त।

आचार्य पूजा

(दोहा)

गुण छत्तीस जिन ढिग रतन, भव वन संकट टार।
नमों चरन तिनके सही, तिन गुण जाचन सार।।१।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्य परमेष्ठी! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्य परमेष्ठी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्य परमेष्ठी! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सं०

(चाल छन्द)

जे सबतें करुणा आने, सो उत्तम क्षमाकों जाने।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मान रंच नहिं लावैं, सो मार्दव गुणको पावैं।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाके उर माया नाहीं, सो आर्जव भाव कहाहीं।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तन जावो तो भले जाई, ते झूठ न कहहिं कदाई।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई।।४।।

ॐ ह्रीं सत्यधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाके उर वांछा नाहीं, सो निर्मल शौच कहाहीं।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई।।५।।

ॐ ह्रीं शौचधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्री वशि प्राण को राखै, सो संजम दो विधि भाखै।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई।।६।।

ॐ ह्रीं द्विविधसंयमधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विधि तप ल्यावै, परनति नहिं खेद लगावै।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ।।७।।

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावै, सो त्याग धर्म चित भावै।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ।।८।।

ॐ ह्रीं त्यागधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अंतर बाहिर नागा, सो आकिंचन भय भागा।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ।।९।।

ॐ ह्रीं आकिंचनधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर तियको शुभ त्यागी, सो ब्रह्मचर्य अनुरागी।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(कड़खा छन्द)

एक दोय चार षट् अष्ट दिन पख लगौ, खान पानी तनो त्याग ल्यावै।
मास द्वै एक षट् चार बरसी भलौ, धीर तजि अशन उरसा सो ध्यावैं ।।
इनहि आदिक तिको वास दुद्धर करै, नाहिं परनति विषै खेद आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै ।।११।।

ॐ ह्रीं अनशनतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भूखते अर्द्ध खावैं तथा भाग त्रिय, भाग चौथा भखै व्रतधारी।
एक द्वै ग्रास लै भाव समता धरै, तास ते जाय अघ सूर हारी ।।
नाम ऊनोदरी व्रत्त याको कह्यौ, तासके धार गुरु जगत जानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै ।।१२।।

ॐ ह्रीं ऊनोदरव्रतसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धरै जो वृत्त तामै महा दृढ रहै, रोजकी तास परमान ल्यावै।
तासकूं याद रखि सकल कारज करै, नेम परमान ता विधि निभावैं ।।

खान अरु पान गमनादि सब राखिले, नाम संखया व्रति सूर आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१३।।

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यानतपधारकाऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रोज षट् रस विषै रसनको त्यागि है, सब रसा नाहिं इक बार खावै।
मोहबल विषै विनराग चित्त राखि है, नाहिं रसना वशी आप आवै।।
भोग अछ-रसन तजि, आप भोगी भयौ, रैन दिन ध्यान धेमांहि आने।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१४।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागव्रतधारकाऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाहि आसन थकी धीर तहँ थिति करै, तास विधि लौ नहीं ठाम छोरै।
काल जेते तनो नेम धारे बुधा, बार तेति वपू प्रीति तोरैं।।
देव खग नर पशु कृत जो दुःख मिलै, तोहु ते धीर नहीं दुःख मानैं।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१५।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तन विषै खेदकों निमित्त जो विधि मिलै, सोहि विधि ठानि समभाव ल्यावै।
त्याग तनको किये वृत्त ऐसो बनै, मोह बसि जीव इह नाहिं पावैं।।
वीतरागी बिना व्रतको शिर धरै, राग जुत जीव तो हारि भानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१६।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बोल परमाद वशि दोष परनति विषै, तथा चल-हलतको पाप लागै।
तासको छेद कारन लहै दंड मुनि, धीरता देखि अघ नाहिं जागै।।
आपही आपको दंड लेते मुनि, तथा गुरु पास लै सरल जानैं।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१७।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आपते गुनी तिनको विनै जे करै, ते महाव्रतको ओप ल्यावैं।
बिगर नमनी किये हानि सब गुणनकी, तासते देखि बुधि मान ढावैं।।

सकल संजम तनी बाहि दिढ है यहै, जतनतें ते गुणी याही आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१८।।

ॐ ह्रीं विनयतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ते महंत गुणधार हैं जे यति, तथा श्रुत देव महा सुखदाई।
तिनहि बंदगी रूप परनति जानिये, सो वैयावृत्य बानि गाई।।
वृत ऐसो बनै मोक्षमारग लहै, होय मन्द मोह यह रीति ठानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।१९।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रैन दिन वानि जिन पाठ मुखते करै, तथा उपदेश दे हरष लाई।
उर विषै वानि जिन सदा चिन्तवन करै, रहे जिन-आणिमें भक्ति भाई।।
करै गुरु पास परसन विने ठानि के, इह विधि पांच स्वाध्याय आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।२०।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग तनको करे व्रत ऐसो धरैं, सूर उपसर्ग ते नाहिं भागै।
लिखे कर्मके ठाट दुःख सुख सहै जगत मैं, छांडि परमोह निज मांहि जागै।।
राग तन मांहि सो दिढ तपा नाहि व्युत-सर्ग तप धारि तन प्रीति हानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।२१।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचन काय त्रिय जोग इक ठाम करि, आप सुध ध्याय परभाव त्यागै।
तथा देव अरहंत परमेष्ठि सिद्धके, गुन तनी माल शुभ भाव लागैं।।
रोक चित मृग शुभ ध्यान-जाली विषै, एक थल राखि शिव ठहि आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै।।२२।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे तप अंतर बाहिर करी द्वादश, धारै तन त्याग विनराग ध्यावै।
जीव रागी विषै चाह ताकी रहै, सो नहीं इन दसी भाव ल्यावै।।

यहै जानि रागी विना रागकी पारिखा, ठानि तप धारि ते धीर आनै।
जीयके धीर ब्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भानै ।।२३।।

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यकके अर्घ

(पद्धरी छन्द)

जे षट् आवसि धारै सदीव, ते शुद्ध सरूपी होय जीव।
गुण धारि, जारि कर्म आठ वीर, निज तिरैं और तारक सुधीर ।।२४।।

ॐ ह्रीं षटावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव तरस थावर सुजान, समभाव सकल पै चित्त ठानि।
तजि आरति रुद्र सुभाव सोय, समता उर सो सामाय होय ।।२५।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहंत सिद्ध आदिक महंत, तिनकी थुति नित मुनिवर करंत।
उर निरमल करि शुद्ध भाव ठान, ता फल पावै सिद्ध लोक थान ।।२६।।

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ते शुद्ध भाव कारन महान, वंदन विधि करि हैं देव थान।
तातें अघ रज धोवै सुवीर, ता फल पावैं भव समुद्र तीर ।।२७।।

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिके मन वच तन दोष लाय, सो दूरि करे प्रतिक्रमण भाव।
उर आलोचन करि शुद्ध होय, ते सूर नमो मद टारि जोय ।।२८।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहिताऽऽचार्यपसमेष्टिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच तन अघ विधि त्याग होय, लखि आवसि प्रत्याख्यान सोय।
ये करै रोज आचार्य जान, ता फल चिंतै अघ होय हान ।।२९।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तन त्याग होय थिर थान सोय, कायोत्सर्ग आवसि कर्म होय।
ये करै रोज आचार्य मान, ताबलि चिंतै अघ होय हान ।।३०।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचारके अर्घ

(सोरठा)

शुद्धपदारथ भाव, जाने गुण परजै सकल।
ताकरि होय शिवराव, ज्ञानाचार सो जानिये ।।३१।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल पदारथ सोय, देखै शुद्ध करि सरदहैं।
तातैं शिवसुख होय, सो दर्शनआचार है ।।३२।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छांडै सकल कषाय, गुपति समिति व्रत आदरे।
वरतै नगन सुभाय, सो चारित्राचार है ।।३३।।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म हरनके काज, वीरज फोरै आपनो।
तप संजम बहु साज, सो वीरजआचार है ।।३४।।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश विधि तप ठानि, समता भावन परनवै।
सो करि है कर्म हानि, तपाचार सो जानिये ।।३५।।

ॐ ह्रीं तपाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठीभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्तियोंके अर्घ

(गीता छन्द)

मन चपल है करि कौन ऐसो कपि तने पदकूं लहै।
ताकी विकलता लहर दधि ज्यों जगत-जिय वशि ना रहै ।।
ते धन्य गुरु वशि कियौ याकूं आप या वशि ना रहै।
मन गुप्ति याकूं जानि भवि जन या फलै शिव सुर ठहै ।।३६।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन निज वशि राखि भाषत जिन तनी बानी कहै।
परमाद वच कबहू न भाखै ता थकी जिय अघ लहै।।
इह वचनगुप्ति सदीव आचारज जिको पावै सही।
मन वचन तन वसु द्रव्य ले करि पद जजों इनके सही।।३७।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो काय अपने हाथ राखै चपलता मेटे सही।
परमाद टारि सुधारि थिरता जारि अघ ले शुभ मही।।
लखि कायगुप्ति सुनाम याकों सदा आचारज करै।
ते धीर या फल जारि सब कर्म मुक्ति सी रमनी वरै।।३८।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दस विधि बरत बारह गुपति तीन बखानिये।
आचार पाँचौ महासुन्दर आवसि षट् शुभ मानिये।।
इह गुण छत्तीसों धरें सोही सूर आचारज कहै।
तिन चरन कमल सुद्रव्य वसु लै जजों मन वच तन वहै।।३९।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आचारज गुण आरती कहूं हिये थुति आनि।
ताकूं, नमि पुनि फल लहै होय पापकी हानि।।१।।

(पद्धरी छंद)

उत्तम छिमा क्रोध भट मारयौ, मार्दव मान जिसौ अरि टारयौ।।
आर्जव माया कुटनी टारी, सत्पथ की सब झूठ निवारी।।२।।

शौच सकल उरको शुचि कीनौ, संजमतें अव्रत जय लीनौ।।
तप तपि सकल पाप निरवारै, त्याग भाव परतें परवारै।।३।।

आकिंचन परिग्रह परिहारै, ब्रह्मचर्य तिय भाव निवारै ।।
येही धर्म दसों सुखदाई, अब मुनि द्वादश तप मन लाई ।।४।।

अनशन वास तनी विधि सोहि, अवमोदर्य खान तुछ होही ।।
वृत्तिपरिसंख्या नित व्रत ठानै, रसपरित्यागी रस नहि जानै ।।५।।

विविक्त शय्या थल दिढ होहै, कायकलेश कष्ट विधि जोहै ।।
ये तो बाह्य तने षट् जानो, अब षट् अंतर तप सुनि कानो ।।६।।

प्राछित लगै दोष कूं टारै, बिनै बड़ोंकी नमन सु धारै ।।
वैयावृत गुरु को, सुख ठानै, सो स्वाध्याय बानि मुख आने ।।७।।

ब्युतसर्ग काय त्याग विधि होई, ध्यान धर्म मन चिंतै सोई ।।
अब सुनि षट् आवसिकी बातैं, तातें होय महा शुभदा तैं ।।८।।

सामायिक सबतें समभावा, स्तवन जिन-सिधकौ थुति चावा ।।
वंदन सो जिनकौ शिर नावै, प्रतिकर्मनतें पाप मिटावै ।।९।।

प्रत्याख्यान त्याग सो जानो, कायोत्सर्ग तनत्याग बखानो ।।
अब सुनि पंच अचार सुभाई, तिन बल बहु जीवन शिव पाई ।।१०।।

ज्ञानाचार ज्ञान विधि ठानै, दरसन सो दरसन विधि आनै ।।
चारित चारु चरित विधि लावै, तपाचार तप रीति करावै ।।११।।

वीर्याचार पुरुषारथ जानौ, अब सुनि तीनो गुपति बखानो ।।
मन वच तन वशि राखै सोई, गुपति नाम जाने भवि होई ।।१२।।

(दोहा)

इन छत्तिस गुण सहित जो, नमो सूर मन लाय ।
ताके गुण पावन निमित, भव भव होय सहाय ।।१३।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशदगुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्यो महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति आचार्य पूजा समाप्त)

उपाध्यायजी की पूजा

(दोहा)

अंग पूर्व धारक मुनि नमो तास पद जान।
ता फल अघ मिटि शुभ बनै लहै शुद्ध शिव थान।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्रावतरावतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

चौदह पूरब सार, एकादश अंग जुत सही।
ये पच्चीस गुण धार, होय उपाध्या सो नमों।।१।।

ॐ ह्रीं पञ्चविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंगके अर्घ

(मरहठा छन्द)

आचारंग मैं इम वरनायौ सुनो भविक चित आनि।
काज सकल ही करौ जतनतें महा शुद्ध उर जानि।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।२।।

ॐ ह्रीं आचारांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र कृतांग दूसरों अंग है तामैं इम व्याख्यान।
धर्म तनी किरिया सब यामें भाखी है भगवान।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।३।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जानो तीजो अंग सथाना तामधि जीवके थान बताय।
येक दोय आदिक उगनीसों चौंसठ षट् जिय ठाम सुपाय।।

या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।४।।

ॐ ह्रीं स्थानांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

है समवाया अंग चतुर्था यामधि वस्तु सकल सम गाय।
धर्म अधर्म द्रव्य सम भाखे जगत जीव सम सम सिध भाय।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।५।।

ॐ ह्रीं समवायांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति पंचमो तिसमें ऐसो कथन चलाय।
अस्ति जीव नास्ति जानो एक अनेक सुवस्तु सुभाय।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।६।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिंगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम ज्ञातृ कथा अंग जानौ तामहि सकल कथा व्याख्यान।
चक्री कामदेव तीर्थंकर इन आदिक पहुँचे शुभ थान।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।७।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जानि उपासिक अंग सप्तमो तामधि श्रावक कथन कहाय।
एकादस पडिमा आदिक बहु किरिया तनै समूह बताय।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।८।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतकृतांगदशांग महा अंग अष्टम यामधि इम लिखिवाय।
इक इक जिन वारै अंतःकृत दस दस केवल कथन चलाय।।

या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।९।।

ॐ ह्रीं अंतःकृतांगदशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुत्तरो उपपाद दसांग अंग तिस महि इक इक जिनकी बार।
दस दस मुनि अति सह्यौ उपद्रव गये अनुत्तर इम लखि सार।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।१०।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्न-व्याकरण अंग विषै इम गई वस्तु इत्यादि बताय।
जीवन मरन सुख-दुःखकी विधि सब प्रश्नों के भेद चलाय।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।११।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र विपाक अंग एकादस तामहि कर्म विपाक बखानि।
तीवर मंद भावतें बाँधे सो रसदे इत्यादि सु जानि।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय।।१२।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति एकादस अंग समाप्त)

चौदह पूर्वके अर्घ

(अडिल्ल छंद)

अब चौदह पूरबकी कथा सुहावनी।
तिन इह पाई रिद्धि जिनै अध रज हनी।।
इनके धारी उपाध्याय जग गुरु कहै।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी जजि अघ दहै।।१३।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

(गीता छन्द)

पूर्व है उत्पाद परथम कथन तामैं इम सही।
वस्तुके उत्पाद व्यय ध्रुव आदि महिमा अति लही॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व अग्रायण सु दूजो कथन नय दुरनय करै।
तत्त्व द्रव्य पदार्थ के परमान जाने उर धरै॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१५॥

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व वीर्य-प्रवाद तीजो कथन वीरजको चलै।
आत्म वीर्य सुकाल खेतर ज्ञान चारित पर मिलै॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१६॥

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति सुपूर्व चौथों सप्तभंग बखानिये।
द्रव्य तत्त्व पदार्थके सब अस्ति वय विधि जानिये॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१७॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व ज्ञानप्रवाद पंचम, ज्ञान वसु लक्षण कहे।
सब ज्ञान फल परमान इनको आदि सहु विधितैं लहै॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१८॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व सत्यप्रवाद षष्टम गुपत भेद बखानिये।
सति असत्य अनेक वैन सुभेद तातें जानिये।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।१९।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रवाद सुपूर्व सप्तम जीव लक्षण तँह कह्यौ।
जीय आयो जीवगो इन आदि इस पूरब ठह्यौ।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२०।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व कर्मप्रवाद तामधि कर्म की सब विधि कही।
लखि सत्ता, बंध, उदै सु परकति आदि इनको फल सही।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२१।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व प्रत्याख्यान नवमो वस्तु इत्यादिक कही।
अरु द्रव्य, क्षेत्र, सुकाल, संवर वास मत्यादिक सही।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२२।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपसमेष्टिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व है विद्यानुवाद सु अष्ट निमित्त बखानिये।
विद्यासाधन रूप फल बल आदि रीति सुमानिये।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२३।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व है कल्याणवाद सु तहाँ इस विधि वरनयों।
कल्याण पांचों जिन तने जोतिष गमनको फल चयौ।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२४।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व प्राणावाद मांही मंत्र तंत्र सुविधि कही।
फिर वैद्य जोतिष भूत नासनकी सकल विधि है सही।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२५।।

ॐ ह्रीं प्राणावादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व क्रियाविशालके मधि गीत-नृत्य-छंद विधि कही।
शास्त्र नय लंकार चौसठ कला तियकी तहाँ सही।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२६।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व चर्म त्रिलोकबिंदु सुकथन तहँ इम वरनयौ।
उर्द्ध मध्य अधोलोकको सब सुख दुःख थल जिम चयौ।।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये।।२७।।

ॐ ह्रीं लोकबिंदुपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छंद)

अंग एकादश अद्भुत सुज्ञान, फिर पूरव चौदह और जान।
इनके गुण वेत्ता ते महंत, जिन उपाध्याय पूजों सुसंत।।

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

वीस पांच गुण धार गुरु, उपाध्याय हित दाय।
तिन वंदे थुतिके किये, महा पुन्य उपजाय।।१।।

(वेसरी छंद)

आचारांग भनै सुखदाई, सूत्र कृतांग रहस सब पाई।
थाना अंग सथान बताये, समवाया अंगके गुण थाये।।२।।
व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग को जानै, ज्ञातृकथाको भेद बखानै।
अंग उपासिक धेनु सुधायौ, अंग कृतांग दसांग सुझायौ।।३।।
अनुत्तर पाद दसांग सुजानों, अंग प्रश्नव्याकरण बतानौ।
सूत्र विपाक अंग हितकारी, तिनकी रहसि लई गुरु सारी।।४।।
यह एकादश अंग तिन पाये, उपाध्याय सो सब मन भाये।
अब पूरब चौदह सुन भाई, प्रथम पूर्व उतपाद कहाई।।५।।
अग्रायन पूरबकूं धारै, वीर्यप्रवाद पूर्व अघ जारै।
अस्ति-नास्ति-परवाद सुजानौ, ज्ञानप्रवाद पंचमो मानों।।६।।
सत्यप्रवाद पूर्वकों पावै, आत्मप्रवाद पूर्व समझावै।
कर्मप्रवाद पूर्व सुखकारो, प्रत्याख्यान पूर्व को धारो।।७।।
पूर्व विद्यानुवादको जानै, पूर्व कल्याणवाद अघ हानै।
प्राणावाद पूरव हरि पायौ, पूर्व क्रियाविशाल उर जायौ।।८।।
अंतिम लोकबिंदु है भाई, ये चौदह पूरव सुखदाई।
इनके धार उपाध्याय होवै, तिनके जजै शिवा सुर जोवै।।९।।

(सोरठा)

इह पूरव अंग धार, तिन जग पूजित पद लयौ।
सो करि है अघ छार, तिन पूजे जिनपद लहैं।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति उपाध्यायजीकी पूजा समाप्त)

साधु महाराजकी पूजा

(दोहा)

बीस आठ गुण साधु कै, नमों तास कर जोर।
ताके वंदे पाप सब, जाय सकल ढिग छोर।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन्! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(चौपाई)

अष्टविंशति गुण जुत होय। साध जिको जगजन गुरु जोय।
आतम रंग राचे मुनिनाथ। पाऊँ इन पद भव भव साथ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

तिरस थावर जीव सबही आप सम जानै सही।
मन वचन तन जियको न दुःखदा, सकल पै समता लही।।
जो दुष्ट को निज काय पीडै तो न कबहूँ दुःख करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।२।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तन जाय तौ नहि असत भाषत कहै सत वच सार जू।
चवै सम्यक् बैन सोहू सूत्र के अनुसार जू।।
तिस वचनको सुनि सकल प्राणी पाप मति अपनी हरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।३।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन दिये परको माल कबहूं मन वचन छूवै नहीं।
तन आपने हू तें सुविरकति दिये ते भोजन लही।।

काय नगन फिरै उदंड सो जाचना बुधि ना करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।४।।

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नारि, देव, मनुष्य, पशुकी मन वचन तन करि तजै।
सो शीलधर होय बाल सम निरदोष अपनो पद सजै।।
ते जगत तिय तजि मुक्तिनारी वरन को उद्यम करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।५।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे तजै द्वै विधि परिग्रहकूं वाह्याभ्यंतर जानिये।
तिल मात्र पुद्रगल बंध सेती ममत की विधि भानिये।।
जे रहे विमुख सुभाव तननें, सोहि समता उर धरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।६।।

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चारि कर भू शोधते पद धरैं शुभ चित लायकै।
जो बने कारन जोर इत उत तो लखै नहिं भायकै।।
त्रस जीव थावर सकल सेती भाव समता उर धरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।७।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बोलि हैं वच सकल हितदा खेद कों जिय ना लहै।
जिनवैनभाषित समा भाषत, और समता जुत रहै।।
तिन वचनको सुनि भव्य प्रानी आपने अघकूं हरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।८।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे लहै अनजल शोधि शुभ चित एक टक ठाढे भखै।
नहि सैन अंगुरी नैन मुखते बोल हू नाही अखैं।।

फिर दोष षटचालीस टालै और दूषन बहु टरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।९।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे धरैं वस्तु संभाल पृथ्वी लेंय भू तैं जोयके।
परमादतैं लें धरैं नाहीं महा शुभ चित होयके।।
तिन मांहि नाहिं प्रमाद राखै, लगे अगिले अघ हरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।१०।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मल, मूत्र खेपै ठाम लखि कै तिरस थावर पालिया।
निज भाव मीतो करम रीतो औरके अघ टालिया।।
तिस बने राजै आय जोगी बैर जिय सब परिहरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।११।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे हलो, भारी, उसन, शीतल, नरम करकस जानिये।
लूखो रु चिकनो आठ लच्छन फरस इंद्री मानिये।।
या फरस इंद्रीय जगत जीत्यौ तासकूं जे बसि करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।१२।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेंद्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट, खाटो, कटु, कसायल, चिरपरो पांचौं सही।
ये रसन इन्द्री विषय जियको जकडि करि बाँधों मही।।
रसन अक्षिने जगत जीत्यौ, तासकूं जे वसि करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।१३।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध अरु दुरगंध दो विधि गंध इन्द्री जानिये।
इन विषे वसि जिय होय रागी दोष उर महि आनिये।।

इस गंधने जग सकल जीते, तासकुं जे बसि करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।१४।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पीत, श्याम, सुपेद, सब्ज सु सुरख यह पांचों कहे।
इनके वसि जिय देखि पुद्गल राग दोषी चित लहै।।
ते विषै इन्द्रीय चक्षु वसि करि आप निरअंकुस फिरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।१५।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित अचित सु मिश्र तीनों विषय श्रवन तने कहे।
शुभ सुने रागी अशुभ सुनि कै दोष जुत उरमें भहे।।
तिन विषै श्रोत्तर आप बशि करि भाव बिच समता धरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै।।१६।।

ॐ ह्रीं करणेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल जोगीरासा की)

समता भाव सकल जीवनतैं आप समा सब जानै।
संजम तप शुभ रहै भावना राग दोष नहि आनै।।
आरत रुद्र न भोग भूमही निरआकुल रस रीझै।
तिन साधन के नित प्रति जुग पद पूजेतैं अघ सीझै।।१७।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहंत, सिद्धकी जो थुति कीजै भक्ति भाव उर आनी।
ताही रस आतम रंग ल्यावै सो स्तवन विधि जानी।।
सो मुनिया भी निसि दिन ठानै, मन वच काय लगाई।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी हूं पूजों इक चित्त लाई।।१८।।

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच तन अरहंत सिद्धकूं कर धर सीस नमावै।
सो वंदन विधि मुनि नित ठानै, अगिले पाप खिपावै।।
ऐसे साधुनके पद पंकज भक्ति भाव उर आनी।
पूजन करहु दरव आठोंते अरघ तनी विधि ठानी।।१९।।

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष लगै मन वच तन कोई ताकुं खय विधि काजै।
सो ही रीति करै उर आनी अपनी सुधता साजै।।
प्रतिकर्मन तैं भाव शुद्ध करि, आलोचन मन आनै।
ते हूं साधु नमो सुख काजै ता फल मो अघ भाने।।२०।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग करे पर वस्तु शकत सम प्रत्याख्यान सुजानो।
वो विधि असन रसादिक कोई इन आदिकको मानो।।
नित प्रति या विधि करे सु सबही, समता जुत चित ठानै।
ते गुरु हूं पूजों वसु द्रव्य लै शत्रु मित्र येक मानै।।२१।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ थिति धार रहै जग मुनिवर ऐसो साहस धारै।
जो सर ठाम छुड़ायो चाहत कष्ट बहुत विध पारै।।
तो हूँ धीर तजै नहिं आसन आतम रस लपटाये।
ते हूं साधु नमो जुग कर सिर, मन वच शीस नमाये।।२२।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

जो ऊँच नीच भू लखे न कोय। तृणपाहन खंड गिनै न कोय।।
शुद्ध भूमि जीव बिन, सैन लाय। ते साधु जजों उर हरष लाय।।२३।।

ॐ ह्रीं भूमिशयनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे करै न तन आभरन सार। तन गंध लेप त्यागन सुधार।।
इत्यादि काय ससरुष नांहि। ते मुनिवर बंदों हरष लाहि।।२४।।

ॐ ह्रीं मंजनत्यागमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे रहै नगन तन मात जात। तिन पै नहिं तृण तुष वसन पात।।
नभ ओढे भूतन तल बिछाय। ते नमो साधु वसु द्रव्य लाय।।२५।।

ॐ ह्रीं वस्त्रत्यागगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निज करतैं निज शिर केस लेय। चित करुना करी उर धीर जेय।।
तन शोभा तजि मन शुद्ध भाय। ते साधु नमो वसु द्रव्य लाय।।२६।।

ॐ ह्रीं कचलोचगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

एक बार लघु भोजन खाय। रस बिन तथा सहित रस पाय।।
भरनो उदर ममत कछु नांहि। ते हूँ साधु जजों उमगाहि।।२७।।

ॐ ह्रीं एकभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एक ठाम थिति भोजन करै। तन थिर काज राग बिन भरै।।
मोक्ष पंथ साधन के काज। ते हूं साधु जजों शिव राज।।२८।।

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्षम जीव दयाके काज। दंत धोवन त्यागैं मुनिराज।।
सकल जंतु बंधु सम जान। ते हूं साधु नमो अर्घ आन।।२९।।

ॐ ह्रीं दंतधोवनरहितगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल जोगीरासेकी)

पंच महाव्रत, समिति, पांच लखि इन्द्रिय सब वशि आने।
आवशि षट भूसैन, मंजन तजि, वसन त्याग सुभ ठाने।।
लोचन कच, इक बार लघू अन, एक ठाम थिति काजै।
दंत न धोवन बीस आठ इह साधु सुभग गुण साजैं।।३०।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

साधुजी की जयमाला

(दोहा)

बीस आठ गुण यह सकल, धरे मोक्षमग जान।
तिनको सुनि व्याख्यान भवि धारत उपजै ज्ञान ।।१।।

(चाल- भरथरीकी)

ते गुरु पूजों भावसों, जे करुणा प्रतिपाल।
आप तिरहिं पर तारहीं, मुनि दीनदयाल।। ते गुरु०।।
पंच महाव्रत आदरै पांचों समिति समेत।
इन्द्रीय पांचों वसि करैं, घट आवसि हेत।। ते गुरु०।।
भूमि शयन, मंजन तजन, पट त्यागी जान।
कच लोचन, लघु अन लहै, एक थिति शुभ आन।। ते गुरु०।।
दंत धोवन कहुं ना करैं मुनि दीनदयाल।
सब जिय रक्षक हित धनी, सहु जग हितपाल।। ते गुरु०।।
सत्य महाव्रत जे धरें भाखैं असति न वैन।
त्याग अदत्तादानको, ब्रह्मचार सु चैन।। ते गुरु०।।
नगन वपू, परिग्रह तजै, चालै भूमि निहार।
खाय, देखि धर लेय सो जोहूँ ठाम विचार।। ते गुरु०।।
मल, मूत्रादिक त्याग है सो हू भूमि निहार।
इन्द्रीय पाँचो वशि करै विरक्त चित धार।। ते गुरु०।।
सपरस इन्द्रीय वसि करै आठों विषय निवार।
रसनाके पांचों विषै त्याग ममत प्रहार।। ते गुरु०।।
गंध तने दोऊ विषै जरे दुखदा जान।
पांच विषै नेतर तने जीते शुभ चित आन।। ते गुरु०।।
करन विषै तीनों हरे अचित मिश्र सचित।
कठिन भूमि सोवन बने सब जीव निमित्त।। ते गुरु०।।

मंजन विधि नहि तन विषै झलकै नस जाल।
वसन रहित तन सोहनो सुर पूज विशाल।। ते गुरु०।।
सिर मुख दाढी कच लुचैं, बाधा लहै न कोय।
एक बार भोजन लघु, निर दूषन सोय।। ते गुरु०।।
तन थिति शिव सुख कारने आन काज न जान।
दंत न धोवैं दयानिधि निज सम सब मान।। ते गुरु०।।
ऐसे बीस अरू आठ गुण धारी मुनि कोय।
तिनके पद वसु द्रव्यतैं पूजूँ मन वच होय।। ते गुरु०।।

(सोरठा)

तन विरक्त सिव मिंत, जन्तु सकल रक्ष पाल हैं।
निज सुख धारक संत, पूजे तैं बहु सुख बढ़े।।१५।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशतिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति साधु महाराजकी पूजा समाप्त)

समुच्चय जयमाला

(कवित्त छन्द)

जनमत दस दस केवल उपजे, चौदह देव करै थुति लाय।
अनंत चतुष्टय प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुण छ्यालीस सुथाय।।
इनको धरै देव सो मोकों भौ भौ शरण होहु सुखदाय।
सुर, नर, हरि पूजत अरहंत पद, अपनो आतम सुफल कराय।।
संमंत, णाण, दंसण, वीरज गुण, सुहमत गुण, अवगहन सुजान।
अगुरुलघु सप्तम गुण जानौ अष्टम अव्याबाध बखान।।
यह गुण आठ धर बिन मूरति चेतन अंक सदा सुखदान।
ऐसे सिद्ध लोक सिर राजे तिन पद "टेक" नमो उर आन।।

दस लक्षन सुभ धर्म तनें हैं, द्वादस भेद कहै तप सार।
षट् आवसि, सुभ गुपति तीन लखि, पांच भेद जानौ आचार।।

इह सुभ छत्तीसों गुण धारे, आचारज सब जिय हितकार।
तिनके पद मन वचन काय सुध पूजों भवि सब 'टेक' निवार।।

एकादस अंग ज्ञान धरै उर, तिनकी रहस सकल पहिचानै।
चौदह पूरव लही रिद्धि तिन, करुना करि उपदेश बखानै।।

आप पढ़े, शिष्यन पढ़वावै, समता भाव राग पद भानै।
ऐसे गुणको धरे उपाध्याय तिन पद 'टेक' भजै शिव जाने।।

पंच महाव्रत समिति पांच गिन इन्द्री पांच करैं वशि धीर।
षट् आवस्य करै नित ही मुनि ता करि पाप हरै वर वीर।।

भूमिशयन आदिक गुण सात जु और मिलावो इनके तीर।
अष्टाविंशति होय सकल मिलि इन धर साधु करै शिव शीर।।

येही पंच गुरु परमेष्ठी येही सकल हितू सुखकार।
येही मंगल दायक जगमैं येही करैं भवोदधि पार।।

येही पांचों पंचम गति मय ये ही पंच मुक्ति करतार।
इनके पदकों भव भव शरनों माँगो उर की 'टेक' निवार।।

(दोहा)

अरहंत सिध आचारके, पाँय उपाध्याय पाय।
साधु सहित पांचों चरण, पूजों 'टेक' लगाय।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति पंचपरमेष्ठि-पूजन विधान समाप्त)

विनायक यंत्र का अभिषेक

(वसंततिलका)

स्नात्वा शुभाम्बरधरा कृतयत्न योगात्
यन्त्रं निवेश्य शुचिपीठ वरेऽभिषिञ्चेत् ।
ओं भूर्भुवः स्वरिह मङ्गल यन्त्रमेतत्
विघ्नौघवारकमहं परिषेचयामि ।।

'ॐ भूर्भुवः स्वदिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषेचयामः'

विनायकयन्त्र पूजा

(अनुष्टुप)

परमेष्ठिन् ! मङ्गलादि, त्रय विघ्नविनाशने।।
समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ, मम सन्निहितो भव ।।१।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुपरमेष्ठिन् ! मङ्गल-लोकोत्तमशरणभूत ! अत्रावतरावतर संवोषट् । (आह्वानम्) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । (सन्निधिकरणं) (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।)

(इन्द्रवज्रा)

स्वच्छैर्जलैस्तीर्थ भवैर्जराप-मृत्यूग्ररोगापनुदे पुरस्तात्।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान् माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।२।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सच्चन्दनैर्गन्ध हृतालिवृन्द, चितैर्हिमांशु प्रसरावदातैः ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान् माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।३।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदक्षतैर्मौक्तिक कान्तिपाट-च्चरैः सितैर्मानस नेत्रमित्रैः ।
अर्हन्मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।४।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पैरनेकैरसवर्णगन्ध- प्रभासुरैर्वासित दिग्वितानैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।५।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यपिण्डैर्धृतशर्कराक्त-हविष्यभागैः सुरसाभिरामैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।६।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरार्तिकैरत्नलसुवर्णरुक्म-पात्रार्पितैर्ज्ञानविकासहेतोः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।७।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आशासु यद्धूमवितानमृद्धं-तैर्धूपवृन्दैर्दहनोपसर्पः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।८।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलै रसालैर्वरदाडिमाद्यै-र्हृद्घ्राणहार्यैरमलैरुदारैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ।।९।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे, ह्यनर्घ्यमर्घं वितरामि भक्त्या ।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद्, येषां सुखायास्तु निरन्तराया ।।१०।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

अनादिसन्तानभवान् जिनेन्द्रान्, अर्हत्पदेष्टानुपदिष्टधर्मान् ।
द्वेधाश्रियालिङ्गितपादपद्मान्, यजामि भकत्या प्रकृतिप्रसक्त्यै ।।११।।

ॐ ह्रीँ अनन्तचतुष्टयसमवसरणलक्ष्मीं बिभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माष्टनाशाच्युतभावकर्मो-द्भतीन् निजात्मस्वविलासभूपान् ।
सिद्धाननन्तास्त्रिककालमध्ये, गीतान् यजामीष्टविधिप्रशक्त्यै ।।१२।।

ॐ ह्रीँ अष्टकर्मकाष्ठटगणं भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पञ्चधाचारपरायणानाम्, अग्रेसरा दक्षिणशिक्षिकासु।
प्रमाणनिर्णीत पदार्थसार्थान्, आचार्यवर्यान् परिपूजयामि ।१३ ।

ॐ ह्रीँ पञ्चाचारपरायणाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थश्रुतं सत्यविबोधनेन, द्रव्यश्रुतं ग्रन्थविदर्भनेन।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावाः—तेऽध्यापका मेऽर्हणया दुहन्तु ।।१४।।

ॐ ह्रीँ द्वादशाङ्गपठनपाठनोद्यतायोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान्, स्वकर्मभूवीघ्रविखण्डनेषु।
विविक्तशय्यासन हर्म्यपीठ-स्थितान् तपस्विप्रवरान् यजामि ।।१५।।

ॐ ह्रीँ त्रयोदशप्रकारचारित्राराधकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या)

अर्हन्मङ्गलमर्चे, सुरनरविद्याधरकपूज्यपदम् ।।
तोयप्रभृतिभिरर्घ्यैः, र्विनीतमूर्ध्ना शिवाप्तये नित्यम् ।।१६।।

ॐ ह्रीँ अर्हन्मङ्गलायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रौव्योत्पादविनाशन, रूपाखिलवस्तुबोधनार्थकरम्।
सिद्धं मंगलमिति वा, मत्वार्चे चाष्टविधवस्तुभिः ।।१७।।

ॐ ह्रीँ सिद्धमङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्दर्शनकृतविभवाद्, रोगोपद्रवगणा मृग इव मृगेन्द्रात्।
दूरं भजन्ति देशं, साधुःश्रेयोऽर्च्यते विधिना ।।१८।।

ॐ ह्रीँ साधुमङ्गलायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलिमुखावगतया, वाण्या निर्दिष्टभेदधर्मगणम्।
मत्वा भवसिन्धुतरीं, प्रयजे तन्मंगलं शुद्धयै ।।१९।।

ॐ ह्रीँ केवलिप्रज्ञप्तधर्मायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तममथ जिनराट्, पदाब्जसेवनयामितदोषविलयाय।
शक्तं मत्वा घृतजल, गन्धैरर्चे समीडितं प्रभवैः ।।२०।।

ॐ ह्रीँ अर्हल्लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धाश्च्युतदोषमला, लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं व्रजिताः।
उत्तमपथगा लोके, तानर्चे वसुविधार्चनया ।।२१।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्र-र्थितपसां व्रतैषिणां सुधियाम्।
उत्तममध्वानमसा-वर्चेऽहं सलिलगन्धमुखैः ।।२२।।

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागपिशाचविमर्दन-मत्र भवे वैर्यधारिणामतुलम्।
उत्तममपगतकामो, वृषमर्चे शुचितरं कुसुमैः ।।२३।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मार्याघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हच्चरणमथार्चेऽ-नन्तजनुष्यपि न जातु सम्प्राप्तम्।
नर्तन-गानादिविधिमु-द्दिश्याष्टकर्मणां शान्त्यै ।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-शरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्व्याबाधगुणादिक, प्राग्रयं शरणं समेतचिदनन्तम्।
सिद्धानाममृतानां, भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ।।२५।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिदचिद्भेदं शरणं, लौकिकमाप्यं प्रयोजनातीतम्।
त्यक्त्वा साधुजनानां, शरणं भूत्ये यजामि परमार्थम् ।।२६।।

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलिनाथमुखोद्गत, धर्मः प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्टः।
तत्प्राप्त्यै तद्यजनं, कुर्वे मखविघ्ननाशाय ।।२७।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसंततिलका)

संसारदुःखहनने निपुणं जनानां, नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणम्।
संपूजये विविधभक्तिभरावनम्रः, शान्तिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थसार्थैः ।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(वसंततिलका)

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा, अग्रेसरं जिन वदन्ति भवन्तमिष्टम्।
अनाद्यनन्तयुगवर्तिनमत्र कार्ये, विघ्नौघवारणकृतेऽहमपि स्मरामि ।।१।।

(भुजंगप्रयात)

गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते, गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति।
तदा विघ्नसन्दोहशान्तिर्जनानां, करे संलुठत्यायतश्रायसानाम् ।।२।।

(इन्द्रव्रजा)

कलेः प्रभावात्कलुषाशयस्य, जनेषु मिथ्यामदवासितेषु।
प्रवर्तितोऽन्यो गणराजनाम्ना, कथं स कुर्याद् भव वार्धिशोषम् ।।३।।

यो दृक्सुधातोषितभव्यजीवो, यो ज्ञानपीयूषपयोधितुल्यः।
यो वृत्तदूरीकृतपापपुञ्जः, स एव मान्यो गणराज नाम्ना ।।४।।

यतस्त्वमेवासि विनायको मे, दृष्टेष्टयोगादविरुद्धवाचः।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति, विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ।।५।।

(मालिनी)

जय जय जिनराज, त्वद्गुणान्को व्यनक्ति,
यदि सुरगुरुरिन्द्रः, कोटिवर्षप्रमाणम् ।।
वदितुमभिलषेद्धा, पारमाप्नोति नो चेत्।
कथमिव हि मनुष्यः, स्वल्पबुद्धया समेतः ।।६।।

इति अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप)

श्रियं बुद्धिमनाकुलयं, धर्मप्रीतिविवर्धनम्।
जिनधर्मे स्थितिर्भूया, च्छ्रेयो मे दिशतु त्वरा ।।७।।

इति पुष्पाञ्जलिः।

नवदेव का अर्घ्य

(नाराच)

अनन्तकालसंभवद्भवभ्रमणभीतितो,
निवार्य संदधत् स्वयं शिवोत्तमार्यसद्मनि।
जिनेश-विश्वदर्शि-विश्वनाथ-मुख्यनामभिः
स्तुतं जिनं महामि नीरचन्दनैः फलैरहम् ।।१।।

ॐ ह्रीं अनन्तभवार्णवभयनिवारकानन्तगुणस्तुतायार्हते परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रथोद्धता)

कर्मकाष्ठहुतभुक् स्वशक्तितः, संप्रकाश्य महनीयभानुभिः।
लोकतन्तमचले निजात्मनि, संस्थितं शिवमहीपतिं यजे ।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशक निजात्मतत्त्वविभासकसिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थवाहमनवद्यविद्यया, शिक्षणान्मुनिमहात्मनां वरम्।
मोक्षमार्गमलघुप्रकाशकं, संयजे गुरुवरं परमेश्वरम् ।।३।।

ॐ ह्रीं अनवद्यविद्याविद्योतनायाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशाङ्गपरिपूर्णसत् श्रुतं, यः परानुपदिशेत पाठतः।
बोधयत्यमितार्थसिद्धये, तानुपास्य यजयामि पाठकान् ।।४।।

ॐ ह्रीं द्वादशाङ्गपरिपूर्णश्रुतपाठनोद्यतबुद्धिविभवोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रमर्घ्यतपसाभिसंस्कृतिं, ध्यानज्ञानविनिवेशितात्मकम्।
साधक शिवरमासुखामृते, साधुमीड्यपदलब्धयेऽर्चये ।।५।।

ॐ ह्रीं घोरतपोऽभिसंस्कृतध्यानस्वाध्यायनिरतसाधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शार्दूलविक्रीडित)

यो मिथ्यात्वमतङ्गजेषु तरुण, क्षुन्नृसिंहायते
एकान्तातपतापितेषु समरुत्, पीयूषमेघायते।

श्वभ्रान्धप्रहिसंपतत्सु सदयं, हस्तावलम्बायते
स्याद्वादध्वजमागमं तमभितः, संपूजयामो वयम् ।।६।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादमुद्राङ्कितपरमजिनागमायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शिखरिणी)

जिनेन्द्रोक्तं धर्मं, सुदशयुतभेदं त्रिविधया
स्थितं सम्यक्रत्न, त्रय लतिकयापि द्विविधया।
प्रणीतं सागारे, तरचरणतो ह्येकमनघं
दयारूपं वन्दे, मखभुवि समास्थापितमिमम् ।।७।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञवीतरागप्रणीतशाश्वतधर्मायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शार्दूलविक्रीडित)

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्।
वन्दे व्यन्तरभावनद्युतिवरान्, कल्पामरावासगान् ।।
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुभि, दीपैश्च धूपैः फलै-
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शांतये ।।८।।

ॐ ह्रीं कृत्याकृत्रिमत्रिलोकवर्तिश्रीजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप)

यावन्ति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ।।९।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिवीतरागबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यागमण्डल विधान

यागमण्डल विधान सामान्य माहिती

प्रतिष्ठा महोत्सव की मुख्य और महत्व की पूजा यागमण्डल विधान है।

यज्ञ का अर्थ पूजा और याग का अर्थ महापूजा होता है। सिर्फ प्रतिष्ठा के समय पर होनेवाली यह पूजा सर्व पूजा में सर्वोपरी होने से उसकी **यागेश** संज्ञा है। मण्डल विधान का सम्राट या अधीश होने से उसकी **मण्डलाधीश** संज्ञा है। सृष्टि में श्रेष्ठ होने से उसकी **सर्गपति** संज्ञा है। आत्मिक गुणों के निधान प्रगटानेवाली होने से उसकी **निधि** संज्ञा है। संसार के हेतु को च्युत करनेवाली यह महापूजा करने से हमारा पापमल का नाश और मिथ्यात्व की मंदता होती है। जिस कारण हमारे परिणामों की विशुद्धि होती है। जिससे हम जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा के अधिकारी होते हैं।

यह महापूजा के मण्डल के मध्य में पूज्य गुरुदेवश्री के हस्ताक्षररूप ॐ और पूज्य भगवती माताजी के शुभाशीष का संकेतरूप 卐 की स्थापना की जाती है। यागमण्डल के कुल २५० अर्घ्य निम्न कोष्टक के अनुसार हैं।

स्थान	पूज्य की विगत	अर्घ्य की संख्या
वलय-१	पंच परमेष्ठी, चार मंगल, उत्तम, शरण	१७
वलय-२	भूतकाल के चौबीस तीर्थंकर	२४
वलय-३	वर्तमानकाल के चौबीस तीर्थंकर	२४
वलय-४	भविष्यकाल के चौबीस तीर्थंकर	२४
वलय-५	विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमान विंशती तीर्थंकर	२०
वलय-६	आचार्य परमेष्ठी	३६
वलय-७	उपाध्याय परमेष्ठी	२५
वलय-८	साधु परमेष्ठी	२८
वलय-९	ऋद्धिधारी मुनि	४८
ईशान कोना	जिनबिम्ब	०१
अग्नि कोना	जिनालय	०१
नैऋत्य कोना	जिनागम	०१
वायव्य कोना	जिनधर्म	०१
	कुल	**२५०**

हम सब भक्तिभाव और एकचित्त से यागमण्डल विधान में शामिल होवे ऐसी पवित्र भावना....

याग मंडल विधान

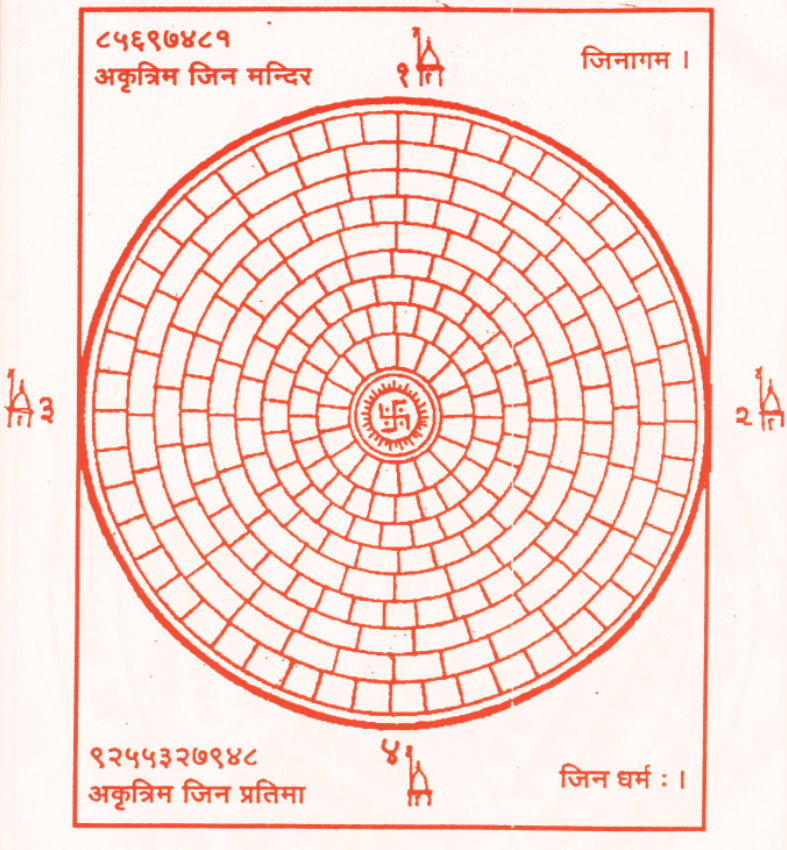

९ वलय बनावें । सुन्दर कोठे इस तरह-
(१) में १७ (२) में २४ (३) में २४ (४) में २४ (५) में २०
(६) में ३६ (७) में २५ (८) में २८ (९) में ४८ कोने में ४
कुल २५०

यागमण्डल विधान

यागमण्डल प्रयोगः

(मंगलाचरणपूर्वक यागमण्डल की रचना करने की प्रतिज्ञा)

(उपजाति)

अचिन्त्यचिंतामणिकल्पवृक्ष रसायनाधीश्चरमादिदेवम् ।
वंदामहे सृष्टिविधानमूढ़ प्राणिप्रणेतारमबाध्यवाक्यं ।।१।।

(इन्द्रवज्रा)

स्याद्वादविद्यामृततर्पणेन । सुप्तं जगत्बोधयितारमर्च्यम् ।
श्री कुंदकुंदादि मुनि प्रणम्य । श्रीमूलसंघे प्रणयामि यज्ञम् ।।२।।

(उपजाति)

एवं समासादितवेदिकादि-प्रतिष्ठ्योपक्रियया दृढार्थः ।
पुष्पांजलिक्षेपणमत्रसार्थे । वितीर्य यागोद्धरणे यतेऽहम् ।।३।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे यागमण्डल प्रतिज्ञायै पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

यागमण्डलोद्धारः

(मंगलाचरणपूर्वक यागमण्डल का स्वरूप, प्रयोजन, महत्त्व का प्रकटीकरण)

(मंगलाचरण)

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु नंद नंद नंद पुनीहि पुनीहि पुनीहि ।
ॐ णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ।१।

(स्रग्धरा)

मध्ये तेजस्तदंगे, वलयितसरणौ, पंच पूज्योत्तमादि ।
द्वादश्यर्चा द्वितीये, चतुरधिकसुविं,–शा जिना भूतकालाः ।।
अग्रेष्ट्योर्वर्तमाना, अवतरणकृतो,–ऽग्रे विदेहस्थपूज्या ।
आचार्याः पाठकाः स्युः, मुनिवरसुगुणा, वह्निवृत्ते निवेश्याः ।।२।।

(शार्दूलविक्रीडित)

तेषामग्रिमवृत्तके गणधरा, ऋद्धिप्रशस्ताश्चतु-
र्दिक्षु स्युः क्षितिमंडले जिनगृहं, चैत्यागमौ सद्वृषाः ।।

एवं स्युर्निधयो नवापरविधैर्युक्ता इहाभ्युद्घृते।
सद्यागार्चनमंडले विलिखिताः, पूज्याः स्वमंत्रैः सदा ।।३।।

(आर्या)

द्विशतोत्तरतः पंचा, शत्स्थानं सुपूजयति यो धीमान् ।।
निर्धूतकलुषनिकरो, **जिनबिम्बस्थापको** भवति ।।४।।
एतेषां निधिसंज्ञा, यागेशसर्गपतिमंडलाधीशाः ।।
कथ्यन्ते विधिविज्ञैः, संकेतितमिदं ग्रन्थसंबद्धम् ।।५।।

ॐ ह्रीँ यागमण्डलोद्धारैः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

स्थापना एवं अष्टक

(शार्दुलविक्रीडीत)

प्रत्यर्थिव्रजनिर्जयान्निजगुण, प्राप्तावनंताक्रम–
दृष्टिज्ञानचरित्रवीर्यसुखचित्, संज्ञास्वभावाः परम् ।
आगत्यात्र निवेशिताँकितपदैः, संवौषडा द्विष्ठतो
मुद्रारोपणसत्कृतैश्च वषडा, गृहणीध्वमर्चाविधिम् ।।

ॐ ह्रीँ अत्र जिनप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय अत्रावतरतावतरत संवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

(शार्दूलविक्रीडित)

प्रांशुस्वर्णमणिप्रभाततिभृता, भृंगारनालोच्छलद्
गंगासिंधुसरिन्मुखोपचितसत् पाथो भरेण त्रिधा।
जन्मारातिविभंजनोषधिमिते, नोद्धूतगंधालिना।
चाये यागनिधीश्चरानघहृते, निःश्रेयसः प्राप्तये ।।१।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **जलं** निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

(मालिनी)

घुसृणमलयजातैः, चंदनैः शीतगंधैः
भवजलनिधिमध्ये, दुःखदो वाडवाग्निः।
तदुपशमनिमित्तं, बद्धकक्षैर्निमज्जद्-
भ्रमरयुवभिरीडत्, सांद्रसार्द्रप्रवाहैः ।।२।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

(शिखरणी)

शशांकस्पर्द्धद्भिः, कमलजननैरक्षतपदा
धिरूढैः श्रामण्यं, शुचिसरलताद्यैर्गुणवरैः ।
हसद्भिः साम्राज्या-धिपतिचमनार्हैः सुरभिभिः
जिनार्चाघ्रिप्राची, विपुलतरपुंजैः परियजे ।।३।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **अक्षतम्** निर्वपामीति स्वाहा ।३ ।

(उपजाति)

दुरन्तमोहानलदीप्यदंशु । कामेन नष्टीकृतमाशु विश्वम् ।।
तद्वाणराजीशमनाय पुष्पैः । यजामि कल्पद्रुमसंगतैर्वा ।।४।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

(वसंततिलका)

पीयूषपिण्डनिवहैर्घृतशर्करान्न । योगोद्भवैर्नयनचित्तविलासदक्षैः ।।
चामीकरादिशुचिभाजनसंस्थितैर्वा । संपूजयाम्यशनबाधनबाधनाय ।।५।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

(द्रुतविलंबित)

अमितमोहतमो विनिवृत्तये । घटितरत्नमणिप्रभवात्मभिः ।।
अयमहं खलु दीपकनामकैः । जिनपदाग्रभुवं परिदीपये ।।६।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

(मंदाक्रांता)

धूपोद्घ्राणैः, यजनविधिषु, प्रीणिताशेषदिक्कैः ।
उद्यद्वन्हा-वगुरुमलया, पीडकान् संदहद्भिः ।।
अर्चे कर्म, क्षपणकरणे, कारणैराप्तवाक्यैः ।
यज्ञाधीशा, निव बहुविधैः, धूपदानप्रशस्तैः ।।७।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

(आर्या)

निःश्रेयसपदलब्ध्यै, कृतावतारैः प्रमाणपटुभिरिव ।।
स्याद्वादभंगनिकरैः, यजामि सर्वज्ञमनिशममरफलैः ।।८।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो **फलं** निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

(मत्तमयूर)

पात्रे सौवर्णे कृतमानंदजयषक् । पूजार्हंतं विस्पाफुरितानां हृदयेऽत्र ।
तोयाद्यष्टद्रव्यसमेतैर्भूतमर्घं । शास्तृणामग्रे विनयेन प्रणिदध्मः ।।९।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन्प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

वलय : १

पंच परमेष्ठी, चार मंगल - उत्तम - शरण
कुल १७ अर्घ्य

(नाराच)

अनंतकालसंपद्भवभ्रमणभीतितो,
निवार्यसंदधन्स्वयंशिवोत्तमार्यसद्मनि ।
जिनेशविश्वदर्शिविश्वनाथमुख्यनामभिः
स्तुतं जिनं महामि नीरचंदनैः फलैरहं ।।१।।

ॐ ह्रीँ अनंतभवार्णवभयनिवारकानन्तगुणस्तुतायार्हतेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(रथोद्धता)

कर्मकाष्ठहुतभुक् स्वशक्तितः । संप्रकाश्य महनीयभानुभिः ।।
लोकतत्त्वमचले निजात्मनि । संस्थितं शिवमहीपतिं यजे ।।२।।

ॐ ह्रीँ अष्टकर्मविनाशकनिजात्मतत्त्वविभासकसिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सार्थवाहमनवद्यविद्यया । शिक्षणान्मुनिमहात्मनां वरम् ।।
मोक्षमार्गमलघुप्रकाशकं । संयजे गुरुपरंपरेश्वरं ।।३।।

ॐ ह्रीँ अनवद्यविद्याविद्योतनायाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशांगपरिपूर्णसच्छ्रुतं । यः परानुपदिशेत पाठतः ।।
बोधयत्यभिहितार्थसिद्धये । तानुपास्य यजयामि पाठकान् ।।४।।

ॐ ह्रीँ द्वादशांगपरिपूर्णश्रुतपाठनोद्यद्बुद्धिविभवोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रमर्ध्यतपसाभिसंस्कृतिम्। ध्यानभानविनिवेशितात्मकमं ।।
साधकं शिवरमासुखामृते। साधुमीड्यपदलब्धयेऽर्चये ।।५।।

ॐ ह्रीँ घोरतपोऽभिसंस्कृतध्यानस्वाध्यायनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मंदाक्रांता)

अर्हन्नेव, त्रिभुवनजना, नंदनान्मण्डलाग्रयो।
विध्नध्वंसं, निजमति कृतादस्रसंघोपनोदात् ।।
संकुर्वस्तत्, प्रकृतिरपि, स्पष्टमानंददायि।
न्येवं स्मृत्वा, जलचरुफलैः, अर्चयामि त्रिवारम् ।।६।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्परमेष्ठिमंगलायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्मारं स्मारं, गुणगणमणि–स्फारसामर्थ्यमुच्चैः ।।
यत्प्राप्त्यर्थं, प्रयतति जनो, मोक्षतत्त्वेऽनवद्ये ।।
प्रत्यूहान्तं, भवभवगतानां प्रघातप्रक्लृप्त्यै ।।
सिद्धानेव, श्रुतिमतिबलात्, अर्चये संविचार्य ।।७।।

ॐ ह्रीँ सिद्धमंगलेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेषोरगपरिशमे मन्त्ररूपस्वभावा।
मित्रे शत्रौ, समकृतहृदानंदमांगल्यरूपाः ।।
येषां नामस्मरणमपि सन्मंगलं मुक्तिदायी।
त्यर्चे यज्ञे, वसुविधविधि, प्रीणनैः प्राणिपूज्यम् ।।८।।

ॐ ह्रीँ साधुमंगलायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्च्छा मूर्च्छा, गुरुलघुभिदा, द्वैधवर्त्मप्रदिष्टो।
जैनो धर्मः, सुरशिवगृह, द्वारदर्शी नितान्तम् ।।
सेव्यो विघ्न, प्रहणनविधा, वुत्तमार्थैः प्रशस्तः।
संपूजेऽहं, यजनमननो, द्दामसिद्धयर्थमह्यम् ।।९।।

ॐ ह्रीँ केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगलायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां पाद, स्मृतिसुखसुधा, योगतस्तीर्थनाम।
प्रापुः पुण्यं, यदवनतिना, जन्मसार्थं लभंते ।।

लोकाधात्र्यां, वनगिरिभुव, श्चोत्तमत्वं जिनेन्द्रान्।
अर्चे यज्ञ, प्रसवविधिषु, व्यक्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ।।१०।।

ॐ ह्रीँ अर्हल्लोकोत्तमेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टिज्ञान, प्रतिभटतया, कर्ममीमांसयाऽन्यान्।
श्वभ्रे संपा, दयति विविधा, वेदनाः संकरोति ।।
तेषां मूलं, निविडपरम, ज्ञानखड्गेन हत्त्वा।
निःकर्मत्वं समधिगतवानर्च्यते सिद्धनाथः ।।११।।

ॐ ह्रीँ सिद्धलोकोत्तमेभ्योर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्याचंद्रौ, मरुदधिपतिः, भूमिनाथोऽसुरेन्द्रो।
यस्यांह्रयब्जे, प्रणतशिरसा, लोलुठीति त्रिशुद्धया ।।
सोऽयं लोके, प्रवरगणना, पूजितः किं न वा स्याद्।
यस्मादर्चे मुनिपरिवृढं स्वानुभावप्रसत्त्या ।।१२।।

ॐ ह्रीँ साधुलोकोत्तमेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्र प्राणि, प्रवरकरुणा, यत्र मिथ्यात्वनाशो।
यत्रोपान्ते, शिवपदसमान्, वेषणां कामनष्टिः ।।
यत्र प्रोक्ता, दुरितविरतिः, सोऽयमग्रयः कथं न।
यस्माद्धर्मो, निखिलहितकृत्, पूज्यतेऽसौ मयाऽपि ।।१३।।

ॐ ह्रीँ केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जीवाजीव, द्विविधशरणान्, वेषणे स्थैर्यभंगम्।
ज्ञात्वा त्यक्त्वा, ऽन्यतरशरणं, नश्वरं मद्विधानां ।।
इन्द्रादीना, मिति परिचयात्, आत्मरत्नोपलब्धिं।
इष्टैः प्राप्तुं, निचितमनसा, पूज्यतेऽर्हन्शरण्यः ।।१४।।

ॐ ह्रीँ अर्हच्छरणेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यावद्देहे, स्थितिरुपचयः, कर्मणामास्त्रवेण।
तावत्सौख्यं, कुत उपलभेऽतस्ततस्त्रोटनेच्छुः ।।

एतत्कृत्यं, न भवति विना, सिद्धभक्तिं यतो मे।
पूर्णार्घौघप्रयजनविधा, वाश्रितोऽहं शरण्यम् ।।१५।।

ॐ ह्रीँ सिद्धशरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

रागद्वेष, व्यपगमनतो, निःस्पृहा धीरवीराः।
संसाराब्धौ, विषमगहने, मज्जतां निर्निमित्तम् ।।
दत्त्वा धर्मो, द्धरणतरणिं पारयन्तो मुनीशाः।
तानर्घेण, स्थिरगुणधिया, प्रांचयामि त्रिगुप्त्या ।।१६।।

ॐ ह्रीँ साधुशरणेभ्योर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्रं सम्यक्, परभवयथा, चक्रमे सार्थदायि।
नान्यो धर्माद्, दुरितदहन, प्लोषणेऽम्बुप्रवाहः ।।
जानंतं मां, समदृशिधियां, सन्निधानाच्छरण्य।
त्रायस्व त्वं, त्वयि धृतगतिं पूजनार्घेण युक्तम् ।।१७।।

ॐ ह्रीँ केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(शालिनी)

सर्वा ने तान्तत्त्वचन्द्रप्रमाणान्। जापध्यानस्तोत्रमन्त्रैरुदर्च्य ।।
द्रव्यक्षेत्रस्फूर्तिसज्जावकाशं। नत्वार्घेण प्रांशुना संस्मरामि ।।

ॐ ह्रीँ अर्हत्परमेष्ठिप्रभृतिधर्मशरणान्तप्रथमवलयस्थितसप्तदशजिनाधीशयज्ञदेवताभ्योऽर्घं०

वलय : २

भूतकाल के २४ तीर्थंकरों के अर्घ्य

(इन्द्रवज्रा)

निर्वाणदेवं श्रितभव्यलोकं। निर्वाणदातारमनन्तसौख्यम्।
संपूजयेऽहं मखसिद्धिहेतोः। अधीश्वरं प्राथमिकं जिनेन्द्रम् ।।१।।

ॐ ह्रीँ निर्वाणजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीसागरं वीतममत्वराग-द्वेषं कृताशेषजनप्रसादम्।
समर्चये नीरचरुप्रदीपैः रुद्दीपिताशेषपदार्थमालम् ।।२।।

ॐ ह्रीँ सागरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमन्महासाधुजिनं प्रमाण-नयप्रमाणीकृतजीवतत्त्वम् ।
स्याद्वादभंगप्रणिधानहेतुं । समर्चये यज्ञविधानसिद्धयै ।।३।।

ॐ ह्रीं महासाधुजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यातिसाज्ज्ञानविशालदीपे । प्रभासमानं जगदल्पसारम् ।
विलोक्यते सर्षपवत्करागे । समर्चयेऽहं विमलप्रभाख्यम् ।।४।।

ॐ ह्रीं विमलप्रभायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

समाश्रितानां मनसो विशुद्धयै । कृतावतारं मुनिगीतकीर्तिम् ।
प्रणम्य यज्ञेऽहमुदंचयामि । शुद्धाभदेवं चरुभिः प्रदीपैः ।।५।।

ॐ ह्रीं शुद्धाभदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्ष्मीद्वयं बाह्यगतांतरंग-भेदात्पदाग्रे विलुलोठ यस्य ।
यस्मात्सदा श्रीधरकीर्तिमापत् । तमर्चयेद्याश्रितभव्यसार्थम् ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीधरायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रियं ददातीह सुभक्तिभाजां । वृन्दाय यस्मादिह नाम जातम् ।
श्रीदत्तदेवं भवभीतिमुक्त्यै । यजामि नित्याद्भुतधामलक्ष्म्यै ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीदत्तजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्धा प्रभांगस्य विसर्पिणी तन् । मध्येजनुः सप्तकदर्शनेन ।
सम्यग्विशुद्धिर्मनसो यतस्त्वां । सिद्धभ ! यज्ञेऽर्चयितुं समीहे ।।८।।

ॐ ह्रीं सिद्धाभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभामतिः शक्तिरनेकधा हि । सद्ध्यानलक्ष्म्या यत उत्तमार्थैः ।
संगीयते त्वं ह्यमलां विभर्षि । यतोऽर्चये त्वाममलप्रभाख्यं ।।९।।

ॐ ह्रीं अमलप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनेकसंसारगतं भ्रमेभ्य । उद्धारकर्तेति बुधैरवादि ।
यतो मम भ्रान्तिमपाकुरु त्वं । उद्धारदेव प्रयजे भवंतम् ।।१०।।

ॐ ह्रीं उद्धारजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुष्टाष्टकर्मेन्धनदाहकर्ता। यतोऽग्निनामाभ्युदितं यथार्थम्।
ततो ममासाततृणव्रजेऽपि। तिष्ठार्चये त्वां किमु पौनरुक्तं ।।११।।

ॐ ह्रीँ अग्निदेवजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजाति)

प्राणेन्द्रियद्वैधसुसंयमस्य। दातारमुच्चैः कथयामि सार्वम्।
मद्दत्तमर्घं जिन संगृहाण। सुसंयमं स्वीयगुणं प्रदेहि ।।१२।।

ॐ ह्रीँ संयमजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शिवः शाश्वतसौख्यदायि। स्वायंप्रभुः स्वात्मगुणप्रपन्नः।
तस्मात्तदर्थप्रतिपन्नकामः। त्वामर्चये प्रांजलिना नतोऽस्मि ।।१३।।

ॐ ह्रीँ शिवजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कुंदमल्लीजलजादिपुष्पैः। रभ्यर्च्यमानः श्रियमादधाति।
नाम्नाऽप्यसौ तादृश एव यस्मात्। पुष्पांजलिं त्वां प्रतिपूजयामि ।।१४।।

ॐ ह्रीँ पुष्पांजलिजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्साहयन् ज्ञानधनेश्वराणां। शाम्याम्बुधिं संयमचन्द्रकीर्तेः।
उत्साहनाथो यजनोत्सवेऽस्मिन्। संपूजितो मे स्वगुणं ददातु ।।१५।।

ॐ ह्रीँ उत्साहजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नमोऽस्तु नित्यं परमेश्वराय। कृपा यदीयाक्षणसंनिधानात्।
करोति चिन्तामणिरीप्सितार्थ-मिवांचये तं परमेश्वराख्यं ।।१६।।

ॐ ह्रीँ परमेश्वरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यज्ज्ञानरत्नाकरमध्यवर्ती। जगत्त्रयं बिंदुसमं विभाति।
तं ज्ञानसाम्राज्यपतिं जिनेन्द्रं। ज्ञानेश्वरं संप्रति पूजयामि ।।१७।।

ॐ ह्रीँ ज्ञानेश्वरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपोवृहद्भानुसमूढताप-कृतात्मनैर्मल्यमनिर्मलानाम्।
अस्मादृशां तद्गुणमाददानं। संपूजयामो विमलेश्वरं तम् ।।१८।।

ॐ ह्रीँ विमलेश्वरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यशः प्रसारे सति यस्य विश्वं। सुधामयं चन्द्रकलावदातम्।
अनेकरूपं विकृतैकरूपं। जातं समर्चे हि यशोधरेशं ।।१९।।

ॐ ह्रीँ यशोधरजिनेशायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

क्रोधस्मराशातविघातनाय। संजाततीव्रक्रुधिवात्मनाम।
प्राप्तं तु कृष्णेति नु शुद्धियोगात्। तं कृष्णमर्चे शुचिताप्रपन्नं ।।२०।।

ॐ ह्रीँ कृष्णमतये जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानं मतिर्भाव उपाश्रयादि-रेकार्थ एव प्रणिधानयोगात्।
ज्ञाने मतिर्यस्य समासजातेः। यथार्थनामानमहं यजामि ।।२१।।

ॐ ह्रीँ ज्ञानमतये जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्यमानान्यपदार्थजातं। धुरंधरं धर्मरथांगनेमिः।
जिनेश्वरं शुद्धमति यजेत। प्राप्नोति शुद्धां मतिमेव ना सः ।।२२।।

ॐ ह्रीँ शुद्धमतये जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारलक्ष्म्या अतिनश्वरायै। जन्मर्क्षमुद्रामिव कुत्सयन्वा।
भद्रा शिवश्रीरिति योगयुक्त्या। श्रीभद्रमीशं रभसार्चयामि ।।२३।।

ॐ ह्रीँ श्रीभद्रजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तवीर्यादिगुणप्रसन्नम्। आत्मप्रभावानुभवैकगम्यम्।
अनन्तवीर्यं जिनपं स्तवीमि। यज्ञार्थभागैरुपलाल्यमानं ।।२४।।

ॐ ह्रीँ अनन्तवीर्यजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वं विसर्पिण्यथ कालमध्ये। संजातकल्याणपरंपराणाम् ।।
संस्मृत्य सार्थं प्रगुणं जिनानां। यज्ञे समाहूय यजे समस्तान् ।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन्प्रतिष्ठामहोत्सवे यागमंडलेश्वरद्वितीयवलयोन्मुद्रित-
निर्वाणाद्यानन्तवीर्यान्तेभ्यो भूतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वलय : ३

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों के अर्घ्य

(तोटक)

मनुनाभिमहीधरजात्मभुवं। मरुदेव्युदरावतरन्तमहम् ।।
प्रणिपत्य शिरोऽभ्युदयाय यजे। कृतमुख्यजिनं वृषभं वृषभम् ।।१।।

ॐ ह्रीँ ऋषभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जितशत्रुगृहं परिभूषयितुं। व्यवहारदिशा तनुभूप्रभवम् ।।
नयनिश्चयतः स्वयमेव भुवं। अजितं जिनमर्चतु यज्ञधरम् ।।२।।

ॐ ह्रीँ अजितजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दृढराजसुवंशनभोमिहिरं। त्रिजगत्रयभूषणमभ्युदयम् ।।
जिनसंभवमूर्ध्वगतिप्रदम-र्चनया प्रणमामि पुरस्कृतया ।।३।।

ॐ ह्रीँ संभवजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कपिकेतनमीश्वरमर्थयतो। मृतिजन्मजरापदनोदयतः।
भविकस्य महोत्सवसिद्धिमिया-दत एव यजे ह्यभिनंदनकम्।।४।।

ॐ ह्रीँ अभिनंदनजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिं श्रितमर्त्यमतिप्रकरा-र्पणतोऽर्थकराख्यमवाप्तशिवम् ।।
महयामि पितामहमेतदधि-जगतीत्रयमूर्जितभक्तिनुतः ।।५।।

ॐ ह्रीँ सुमतिनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धरणेशभवं भवभावमितं। जलजप्रभमीश्वरमानमताम् ।।
सुरसंपदियर्त्ति न केति यजे। चरुदीपफलैः सुरवासभवैः ।।६।।

ॐ ह्रीँ पद्मप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभपार्श्वजिनेश्वरपादभुवां। रजसां श्रयतः कमलाततयः ।।
कति नाम भवंति न यज्ञभुवि। नयितुं महयामि महध्वनिभिः ।।७।।

ॐ ह्रीँ सुपार्श्वनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मनसा परिचिन्त्य विधुः स्वरसात्। मम कांतिहृतिर्जिनदेहघृणेः ।।
इति पादभुवं श्रितवानिव तं। जिनचंद्रपदाम्बुजमाश्रयत ।।८।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमदंतजिनं नवमं सुविधी-तिपराहमखंडमनंगहरम् ।।
शुचिदेहततिप्रसरं प्रणुतात्। सलिलादिगणैर्यजतां विधिना ।।९।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्यसमृद्धिरतीव यतो, यजतां जावतीह सुरेन्द्रधरा।
दशमं प्रशमं भव शान्तिकरं, सुयजामि महध्वनिना प्रमुदा ।।१०।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(वसंततिलका)

श्रेयोजिनस्य चरणौ परिधार्य चित्ते। संसारपंचतयदुर्भ्रमणव्यपायः ।।
श्रेयोऽर्थिनां भवति तत्कृतये मयाऽपि। संपूज्यते यजनसद्विधिषु प्रशस्य ।११।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्ष्वाकुवंशतिलको वसूपूज्यराजा। यज्जन्मजातकविधौ हरिणार्चितोऽभूत् ।।
तद्वासुपूज्यजिनपार्चनया पुनीतः। स्यामद्य तत्प्रतिकृतिं चरुभिर्यजामि ।१२।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कांपिल्यनाथकृतवर्मगृहावतारं। श्यामाजयाहजननीसुखदं नमामि ।।
कोलध्वजं विमलमीश्वरमध्वरेऽस्मिन्नर्चे द्विरुक्तमलहापनकर्मसिद्धयै ।१३।

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेतनायकनृपस्य च सिंहसेन-नाम्नस्तनूजममरार्चितपादपद्मम् ।।
संपूजयामि विविधार्हणया ह्यनंत-नाथं चतुर्दशजिनं सलिलाक्षतौघै ।।१४।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म द्विधोपदिशता सदसीन्द्रधार्ये। किं किं न नामजनताहितमन्वदर्शि ।।
श्रीधर्मनाथ! भवतेति सदर्थनाम। सम्प्राप्तयेऽर्चनविधिं पुरतः करोमि ।।१५।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीहस्तिनागपुरपालकविश्वसेनः । स्वांके निवेश्य तनयामृतपुष्टितुष्टः ।।
ऐराऽपि सा सुकुरुवंशनिधानभूमिः । यस्माद् बभूवजिनशांतिमिहाश्रयामि ।१६।

ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीकुन्थुनाथजिनजन्मनि षट्निकाय-जीवाः सुखं निरुपमंबुभुजुर्विशंकम् ।
किं नाम तत्स्मृतिनिराकुलमानसोऽहं । भुंक्ष्वे न सत्त्वरमतोऽर्चनमारभेय ।१७।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सद्दर्शनप्लुतसुदर्शनभूपपुत्रं । त्रैलोक्यजीववररक्षणहेतुमित्रम् ।।
श्रीमित्रसेनजननीखनिरत्नमर्चे श्रीपुष्पचिह्नमरनाथजिनेन्द्रमर्थ्यम् ।।१८।।

ॐ ह्रीं अरनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुम्भोद्भवं धरणिदुःखहरं प्रजाव-त्यानन्द-कारकमतन्द्र-मुनीन्द्र-सेव्यम् ।।
श्रीमल्लिनाथविभुमध्वरविघ्नशान्त्यै संपूजये जलसुचंदनपुष्पदीपैः ।।१९।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

राजत्सुराजहरिवंशनभोविभास्वान् । वप्राम्बिकाप्रियसुतो मुनिसुव्रताख्यः ।।
संपूज्यते शिवपथप्रतिपत्यहेतुः । यज्ञेमया विविधवस्तुभिरर्हणेऽस्मिन् ।।२०।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सन्मैथिलेशविजयाहवगृहेऽवतीर्णं । कल्याणपंचकसमर्चितपादपद्मं ।।
धर्मोषुवाहपरिपोषितभव्यशस्यं । नित्यं नमिं जिनवरं महसार्चयामि ।।२१।।

ॐ ह्रीं नमिनाथजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वारावतीपतिसमुद्रजयेशमान्यं । श्रीयादवेशबलकेशवपूजितांह्रिम् ।।
शंखांकमम्बुधरमेचकदेहमर्चे । सद्ब्रह्मचारिमणिनेमिजिनं जलाद्यैः ।।२२।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

काशीपुरीशनृपभूषणविश्वसेन-नेत्रप्रियं कमठ शाठ्यविखंडनेनम् ।।
पद्माहिराजविबुधव्रजपूजनांकं। वंदेऽर्चयामि शिरसा नतमौलिनीतः ।।२३।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्धार्थभूपतिगणेन पुरस्क्रियायाम्-आनंदताण्डवविधौ स्वजनुःशशंसे ।।
श्रीश्रेणिकेन सदसिद्धुवभूपदाप्त्यै । यज्ञेऽर्चयामिवरवीरजिनेन्द्रमस्मिन् ।।२४।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(शार्दूलविक्रीडित)

अत्राहूतसुपर्वपर्वनिकरे, बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे ।
संपूज्याश्चतुरुत्तरा जिनवरा, विंशप्रमाः संप्रति ।।
संजाग्रत्समयादयैकसुकृता, नुद्धार्य मोक्षं गताः ।
तेऽत्रागत्य समस्तमध्वरकृतं, गृह्णन्तु पूजाविधिम् ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्यागमण्डले यज्ञमुख्यार्चिततृतीयवलयोन्मुद्रित वर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

वलय : ४

भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकरों के अर्घ्य

(इन्द्रवज्रा)

पद्मा चलेत्यंकनलुप्तिकामा । जिनस्य पादावचलौ विचार्य ।।
यत्पादपद्मे वसतिं चकार । सो अयं महापद्मजिनोऽर्च्यतेऽर्घैः ।।१।।

ॐ ह्रीं महापद्मजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवाश्चतुर्भेदनिकायभिन्नाः । तेषां पदौ मूर्धनि संदधानः ।।
तेनैव जातं सुरदेवनाम । तमर्चये यज्ञविधौ जलाद्यैः ।।२।।

ॐ ह्रीं सुरप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सेवार्थमुत्प्रेक्ष्य न भूतिदाता । कारुण्यबुद्ध्यैव ददाति लक्ष्मीम् ।।
यतो जिनः सुप्रभुरायसार्थं । नामार्चयेऽहं विधिनाध्वरीयैः ।।३।।

ॐ ह्रीं सुप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

न केनचित्पट्टविधायि मोक्षसाम्राज्यलक्ष्म्याः स्वयमेव लब्धम् ।।
स्वयंप्रभत्वं स्वयमेव जातं । यस्यार्च्यते पादसरोजयुग्मम् ।।४।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वमनःकायवचःप्रहारे। कर्मागसां शस्त्रमभूद्यतो यः ।।
सर्वायुधाख्यामगमन्मयाद्य। संपूज्यतेऽसौ कृतुभागभाज्यैः ।।५।।

ॐ ह्रीं सर्वायुधदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मद्विषां मूलमपास्य लब्धो। जयोऽन्यमर्त्यैरपि योऽनवाप्यः ।।
ततो जयाख्यामुपलभ्यमानो। मयार्हणाभिः परिपूज्यतेऽसौ ।।६।।

ॐ ह्रीं जयदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रभावोदयनान्नितान्तं। लब्धोदयत्वादुदयप्रभाख्यां ।।
समाप यस्मादपि सार्थकत्वात्। कृतार्चनं तस्य कृती भवामि ।।७।।

ॐ ह्रीं उदयप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभा मनीषा प्रकृतिर्मतिर्ज्ञा-प्रभृत्युदीर्णेकफलेति मत्वा ।।
जाता प्रभादेव इतिप्रशस्तिः। ततोऽर्चनातोहमपि प्रयामि ।।८।।

ॐ ह्रीं प्रभादेवजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उदंकदेव त्वयि भक्तिभोग्य। घटी घटी सा न तदुच्यते हा ।।
त्वामेव लब्ध्वा जननं प्रयातं। वरं यतस्त्वामहं महामि ।।९।।

ॐ ह्रीं उदंकदेवजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरासुरस्वान्तगतभ्रमैक। विध्वंसने प्रश्नकृतोपपत्त्या ।।
कीर्तिं ययौ प्रौष्ठिलमुख्यनाम-स्तवैर्निरुक्तोऽहमुदंचयामि ।।१०।।

ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तिजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पापाश्रवाणां दलनाद्यशोभिः। व्यक्तेर्जयात्कीर्त्तिसमागमेन ।।
निरुक्तलक्ष्म्यै जयकीर्तिदेवं। स्तवस्रजा नित्यमुपाचरामि ।।११।।

ॐ ह्रीं जयकीर्तिदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्यभानातिशये समग्रा। बुद्धिप्रवृत्तिर्यत उत्तमार्था ।।
तत्पूर्णबुद्धेश्चरणौ पवित्रा-वर्घ्येण यायज्मि भवप्रणष्ट्यै ।।१२।।

ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धिजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादयश्चात्मसपत्नभावं। स्वधर्मनाशान्न जहत्युदीर्णं ।।
तेषां हतिर्येन कृता स्वशक्तेः। तं निःकषायं प्रयजामि नित्यं ।।१३।।

ॐ ह्रीँ निःकषायजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मलव्यपायान्मननात्मलाभाद्। यथार्थशब्दं विमलप्रभेति ।।
लब्धं कृतौ स्वीयविशुद्धिकामाः। संपूजयामस्तमनर्घ्यजातं ।।१४।।

ॐ ह्रीँ विमलप्रभदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

भास्वद्गुणग्रामविभासनेन। पौरस्त्यसंप्राप्तविभावितानं ।।
संस्मृत्य कामं बहुलप्रभं तं। समर्चये तद्गुणलब्धिलुब्धः ।।१५।।

ॐ ह्रीँ बहुलप्रभदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

नीराभ्ररत्नानि सुनिर्मलानि। प्रवाद एषोऽनृतवादिनां वै ।।
येन द्विधाकर्ममलोनिरस्तः। स निर्मलः पातु सदर्चितो माम् ।।१६।।

ॐ ह्रीँ निर्मलजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मनोवचःकायनियन्त्रणेन। चित्राऽस्ति गुप्तिर्यदवाप्तिपूर्तेः ।।
तं चित्रगुप्ताह्वयमर्चयामि। गुप्तिप्रशंसाप्तिरियं मम स्यात् ।।१७।।

ॐ ह्रीँ चित्रगुप्तिजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अपारसंसारगतौ समाधिः। लब्धो न यस्माद्विहितः स येन ।।
समाधिगुप्तिर्जिनमर्चयित्वा। लभे समाधिं त्विति पूजयामि ।।१८।।

ॐ ह्रीँ समाधिगुप्तिजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं विनाऽन्यस्य सुयोगमात्म-स्वशक्तिमुद्भाव्य निजस्वरूपे ।।
व्यक्तो बभूवेति जिनः स्वयंभूर्दध्यात् शिवं पूजनयानयार्च्यः ।।१९।।

ॐ ह्रीँ स्वयंभूजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

कंदर्पनाम स्मरसद्भटस्य। मुधैव नामेति तदर्दनोद्धः ।।
प्रशस्तकंदर्प इयायं शक्तिं। यतोऽर्चयेऽहं तदयोगबुद्धये ।।२०।।

ॐ ह्रीँ कंदर्पजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अनेकनामानि गुणैरनन्तैः। जिनस्यं बोध्यानि विचारवद्भिः ।।
जयं तथान्यासमथैकविंशं। अनागतं सम्प्रति पूजयामि ।।२१।।

ॐ ह्रीँ जयनाथजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अभ्यर्हितात्मप्रगुणस्वभावं। मलापहं श्रीविमलेशमीम् ।।
पात्रे निधायार्घ्यमफल्गुशीलोद्धर प्रशक्त्यै जिनमर्चयामि ।।२२।।

ॐ ह्रीँ विमलजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अनेकभाषा जगति प्रसिद्धा। परंतु दिव्यो ध्वनिरर्हतो वै ।।
एवं निरूप्यात्मनि तत्त्वबुद्धिं। अभ्यर्चयामो जिनदिव्यवादं ।।२३।।

ॐ ह्रीँ दिव्यवादजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शक्तेरपारश्चित एव गीतः। तथापि तद्व्यक्तिमियर्ति लब्ध्या ।।
अनंतवीर्यत्वमगाः सुयोगात्। त्वामर्चये त्वत्पदघृष्टमूर्ध्ना ।।२४।।

ॐ ह्रीँ अनन्तवीर्यजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(शार्दूलविक्रीडित)

काले भाविनि ये सुतीर्थधरणात्, पूर्वं प्ररूप्यागमे।
विख्याता निजकर्मसन्ततिमपा, कृत्य स्फुरच्छक्तयः ।।
तानत्र प्रतिकृत्यपावृतमखे, संपूजिता भक्तितः।
प्राप्ताशेषगुणास्तदीप्सितपदा, वाप्त्यै तु संतु श्रिये ।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोद्यापने मुख्यपूजार्हचतुर्थवलयोन्मुद्रितानागत-चतुर्विंशतिमहापद्माद्यनन्तवीर्यान्तेभ्यो जिनेभ्यः पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वलय : ५

विदेहस्थ विहरमाण बीस तीर्थंकरों के अर्घ्य

(इन्द्रवज्रा)

सीमंधरं मोक्षमहीनगर्याः। श्री हंसचित्तोदय भानुमन्तम् ।।
यत्पुण्डरीकाख्यपुरस्वजात्या। पूतीकृतं तं महसार्चयामि ।।१।।

ॐ ह्रीँ सीमधरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

युग्मंधरं धर्मनयप्रमाण। वस्तुव्यवस्थादिषु युग्मवृत्तेः ।।
संधारणात्श्रीरुहभूपजातं। प्रणम्य पुष्पांजलिनार्चयामि ।।२।।

ॐ ह्रीँ युग्मंधरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सुग्रीवराजोद्भवमेणचिह्नं। सुसीमपुर्यां विजयाप्रसूतम् ।।
बाहुं त्रिलोकोद्धरणाय बाहुं। मखे पवित्रेऽर्चितमर्घयामि ।।३।।

ॐ ह्रीँ बाहुजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निःशल्यवंशाभ्रगभस्तिमंतं। सुनंदया लालितमुग्रकीर्तिं ।।
अबन्ध्यदेशाधिपतिं सुबाहुं। तोयादिभिः पूजितुमुत्सहेऽहं ।।४।।

ॐ ह्रीँ सुबाहुजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्रीदेवसेनात्मजमर्यमांकं। विदेहवर्षेप्यलकापुरिस्थम् ।।
संजातकं पुण्यजनुर्धरत्वात्। सार्थाख्यमर्चेऽत्र मखे जलाद्यैः ।।५।।

ॐ ह्रीँ संजातकजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

स्वयंकृतात्मप्रभवत्वहेतोः। स्वयंप्रभुं सद्धृदयस्वभूतम् ।।
सन्मंगलापूःस्थमनुष्णकांतिचिह्नं यजामोऽत्र महोत्सवेषु ।।६।।

ॐ ह्रीँ स्वयंप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवीरसेनाप्रसवं सुसीमाधीशं सुराणामृषभाननं तम् ।।
ईशं सुसौभाग्यभुवं महेशमर्चे विशालैश्चरुभिर्नवीनैः ।।७।।

ॐ ह्रीँ ऋषभाननजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

यस्यास्ति वीर्यस्य न पारमभ्रे। तारागणस्येव नितान्तरम्यम् ।।
अनन्तवीर्यप्रभुमर्चयित्वा। कृतीभवाम्यत्र मखे पवित्रे ।।८।।

ॐ ह्रीँ अनन्तवीर्यजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

वृषांकमुच्चैश्चरणे विभाति। यस्यापरस्ताद्वृषभूतिहेतुः ।।
सूरिपभु तं विधिना महामि। वार्मुख्यतत्त्वैः शिवतत्त्वलब्ध्यै ।।९।।

ॐ ह्रीँ सूरिप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

वीर्येशभूमीरुहपुष्पमिन्द्र सल्लांछनं पुंडरपूस्तिरीटम् ।।
विशालमीशं विजयाप्रसूतं। अर्चामि तद्ध्यानपरायणोऽहम् ।।१०।।

ॐ ह्रीँ विशालप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सरस्वतीपद्मरथांगजातं। शंखांकमुच्चैः श्रियमीशितारम् ।।
संमान्य तं वज्रधरं जिनेन्द्रं। जलाक्षतैरर्चितमुत्करोमि ।।११।।

ॐ ह्रीँ वज्रधरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

वाल्मीकवंशाम्बुधिशीतरश्मिं। दयावतीमातृकमंक्यगावम् ।।
सत्पुण्डरीकिण्यवनं जिनेन्द्रं। चन्द्राननं पूजयताज्ञलाद्यैः ।।१२।।

ॐ ह्रीँ चन्द्राननजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्रीरेणुकामातृकमब्जचिह्नं। देवेशमुत्पुत्रमुदारभावम् ।।
श्रीचंद्रबाहुं जिनमर्चयामि। कृतुप्रयोगे विधिना प्रणम्य ।।१३।।

ॐ ह्रीँ चन्द्रबाहुजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

भुजंगमं स्वीयभुजेन मोक्षपंथावरोहाद्धृतनामकीर्तिम् ।।
महाबलक्ष्मापतिपुत्रमर्चे। चन्द्रांकयुक्तं महिमाविशालं ।।१४।।

ॐ ह्रीँ भुजंगमजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

ज्वालाप्रसूर्येन सुशांतिमाप्ता। कृतार्थतां वा गलसेनभूपः ।।
सोऽयंसुसीमापतिरीश्वरो मे। बोधिं ददातु त्रिजगद्विलासां ।।१५।।

ॐ ह्रीँ ईश्वरजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

नेमिप्रभं धर्मरथांगवाहे। नेमिस्वरूपं तपनांकमीडे ।।
वाश्चन्दनैः शालिसुमप्रदीपैः। धूपैः फलैश्चारुचरुप्रतानैः ।।१६।।

ॐ ह्रीँ नेमिप्रभजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्रीवीरसेनाप्रभवं प्रदुष्ट। कर्मारिसेनाकरिणे मृगेन्द्रः ।।
यः पुण्डरीशं जिनवीरसेनं। सद्भूमिपालात्मजमर्चयामि ।।१७।।

ॐ ह्रीँ वीरसेनजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

यो देवराजक्षितिपालवंश । दिवामणिः पूर्विजयेश्वरोऽभूत् ।।
उमाप्रसूनो व्यवहारयुक्त्या । श्रीमन्महाभद्र उदर्च्यतेऽसौ ।।१८।।

ॐ ह्रीँ महाभद्रजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

गंगाखनिस्फारमणिं सुसीमा पुरीश्वरं वै स्तवभूतिपुत्रम् ।।
स्वस्तिप्रदं देवयशोजिनेन्द्रं । अर्चामि सत्स्वस्तिकलांछनीयं ।।१९।।

ॐ ह्रीँ देवयशोजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(द्रुतविलंबित)

कनकभूपतितोकमकोपकं । कृततपश्चरणार्दितमोहकम् ।।
अजितवीर्यजिनं सरसीरुहविशदचिह्नमहं परिपूजये ।।२०।।

ॐ ह्रीँ अजितवीर्यजिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(शार्दुलविक्रिडित)

एवं पंचमकोष्ठपूजितजिनाः, सर्वे विदेहोद्भवाः ।
नित्यं ये स्थितिमादधुः प्रतिपतत्तन्नाममन्त्रोत्तमाः ।।
कस्मिंश्चित्समयेऽभ्रषट्विधुमितं, पूर्णं जिनानां मतम् ।
ते कुर्वन्तु शिवात्मलाभमनिशं, पूर्णार्घसंमानिताः ।।

ॐ ह्रीँ अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठाध्वरोद्यापने मुख्यपूजार्हपंचमवलयोन्मुद्रितविदेहक्षेत्रे-सुषष्टिसहितैकशतजिनेशसंयुक्तनित्यविहरमाणविंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वलय : ६

आचार्य परमेष्ठी के ३६ गुणों के अर्घ्य

(इन्द्रवज्रा)

मोहात्ययादाप्तदृशोः स पंच - विंशतिचारत्यजनादवाप्ताम् ।।
सम्यक्त्वशुद्धिप्रतिरक्षतोऽर्चे । आचार्यवर्यान् निजभावशुद्धान् ।।१।।

ॐ ह्रीँ दर्शनाचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

विपर्ययादिप्रहृतेः पदार्थ–ज्ञानं समासाद्य परात्मनिष्ठं ।।
दृढ़प्रतीतिं दधतो मुनीन्द्रान् । अर्चे स्पृहाध्वंसनपूर्णहर्षान् ।।२।।

ॐ ह्रीँ ज्ञानाचारसंयुकताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

आत्मस्वभावे स्थितिमादधानां। श्चारित्रचारुव्रतधौर्यधर्तॄन् ।।
द्विधा चरित्रादचलत्वमाप्तान्। आर्यान्यजे सद्गुणरत्नभूषान् ।।३ ।।

ॐ ह्रीँ चारित्राचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

बाह्यान्तरद्वैधतपोऽभियुक्तान्। सुदर्शनाद्रिं हसतोऽचलत्वात् ।।
गाढावरोहात्मसुखस्वभावान्। यजामि भक्त्या मुनिसंघपूज्यान् ।।४।।

ॐ ह्रीँ तपाचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

स्वात्मानुभावोद्भटवीर्यशक्ति-दृढाभियोगावनतः प्रशक्तान् ।।
परीषहापीडनदुष्टदोषा-गतौ स्ववीर्यप्रवणान् यजेऽहं ।।५।।

ॐ ह्रीँ वीर्याचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

चतुर्विधाहारविमोचनेन। द्वित्र्यादिघस्रेषु तृषाक्षुधादेः ।।
अम्लानभावं दधतस्तपःस्थान्। अर्चामि यज्ञे प्रवरावतारान् ।।६।।

ॐ ह्रीँ अनशनतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

त्रिभागभोज्ये क्षितिवेदवह्नि-ग्रासाशने तुष्टिमतो मुनीन्द्रान् ।।
ध्यानावधानाद्यभिवृद्धिपुष्टान्। निद्रालसौ जेतुमितान् यजामि ।।७।।

ॐ ह्रीँ अवमौदर्यतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्रृंगाग्रलग्नं वसनं नवीनं। रक्तं निरीक्ष्यैव भुजिं करिष्ये ।।
इत्यादिवृत्तौ निरतानलक्ष्य-भावान्मुनीन्द्रानहमर्चयामि ।।८।।

ॐ ह्रीँ वृत्तिपरिसंख्यातपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मिष्टाज्यदुग्धादिरसापवृत्तेः। परस्य लक्ष्येऽप्यवभासनेन ।।
त्यागे मुदं चेष्टितमत्ययोगाद्। धर्तॄन् गणेशाधिपतीन् यजामि ।।९।।

ॐ ह्रीँ रसपरित्यागतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

दरीषु भूध्रोपरिषु श्मशाने। दुर्गे स्थले शून्यगृहावलीषु ।।
शय्यासने योग्यदृढासनेन। संधार्यमाणान् परिपूजयामि ।।१०।।

ॐ ह्रीँ विविक्तशय्यासनतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

ग्रीष्मे महीघ्रे सरितां तटेषु। शरत्सु वर्षासु चतुष्पथेषु ।।
योगं दधानान्तनुकष्टदाने। प्रीतान्मुनीन्द्रान् चरूभिः पृणामि ।।११।।

ॐ ह्रीँ कायक्लेशतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

संभाव्य दोषानुनयं गुरुभ्य। आलोचनापूर्वमहर्निशं ये ।।
तच्छुद्धिमात्रे निपुणा यतीशा। संत्वर्घदानेन मुदंचितारः ।।१२।।

ॐ ह्रीँ प्रायश्चित्ततपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सद्दर्शनज्ञानचरित्ररूप-प्रभेदतश्चात्मगुणेषु पंच।
पूज्येष्वशल्यं विनयं दधानाः। मा पान्तु यज्ञेऽर्चनया पटिष्ठाः ।।१३।।

ॐ ह्रीँ विनयतपोभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

दिक्संख्यसंघे खलु वातपित्त-कफादिरोगकृमजार्तिसंधौ ।।
दयार्द्रचित्तान्मुनियेंगितज्ञान्। तद्दुःखहर्तु नहमाश्रयामि ।।१४।।

ॐ ह्रीँ वैयावृत्तितपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्रुतस्य बोधं स्वपरार्थयोर्वा। स्वाध्याययोगादवभासमानान् ।।
आम्नायपृच्छादिषु दत्तचित्तान्। संपूजयामोऽर्घविधानमुख्यैः ।।१५।।

ॐ ह्रीँ स्वाध्यायतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

विनश्वरे देहकृते ममत्व-त्यागेन कायोत्सृजतोपि पद्मा-
सनादियोगानवधार्य चात्म-संपत्सु संस्थानमहर्चयामि ।।१६।।

ॐ ह्रीँ व्युत्सर्गतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

येषां मनोऽहर्निशमार्त्तरौद्र-भूमेरनंगीकरणाद्धि धर्म्ये।
शुक्लोपकंठे परिवर्तमानं। तानाश्रये बिम्बविधानयज्ञे ।।१७।।

ॐ ह्रीँ ध्यानावलम्बननिरताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

येषां भ्रुवः क्षेपणमात्रतोपि। शक्रस्य शक्रत्वविघातनं स्यात् ।।
एवंविधा अप्युदितक्रुधार्त्तो। क्षमां भजंते ननु तान्महामि ।।१८।।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमापरमधर्मधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

न जातिलामैश्यविदंगरूप-मदाः कदाचिज्जननं प्रयांति ।।
येषां मृदिम्ना गुरुणार्द्रचित्ताः । ते द्युरीशाः स्तवनाच्छिवं मे ।।१९।।

ॐ ह्रीँ उत्तममार्दवधर्मधुरंधराचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सर्वत्र निश्छद्मदशासु वल्ली-प्रतानमारोहति चित्तभूमौ ।।
तपोयमोद्भूतफलैरबन्ध्या । शाम्याम्बुसिक्ता तु नमोऽस्तु तेभ्यः ।।२०।।

ॐ ह्रीँ उत्तमार्जवधर्मपरिपुष्टाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

भाषासमित्या भयलोभमोह- मूलंकषत्वादनुभूतया च ।।
हितं मितं भाषयतां मुनीनां । पादारविंदद्वयमर्चयामि ।।२१।।

ॐ ह्रीँ उत्तमसत्यधर्मप्रतिष्ठिताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

न लोभरक्षोऽभ्युदयो न तृष्णा-गृद्धी पिशाच्यौ सविधं सदेतः ।।
तस्माच्छुचित्वात्मविभा चकास्ति । येषां तु पादस्थलमर्चयेऽहं ।।२२।।

ॐ ह्रीँ उत्तमशौचधर्मधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मनोवचःकायभिदानुमोदा-दिभंगतश्चेन्द्रियजन्तुरक्षा ।
ववर्त्ति सत्संयमबुद्धिधीराः । तेषां सपर्याविधिमाचरामि ।।२३।।

ॐ ह्रीँ द्विविधोत्तमसंयमपात्राचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

तपोविभूषा हृदयं बिभर्ति । येषां महाघोरतपोगुणाग्र्याः ।।
इन्द्रादिधैर्यच्यवनं स्वतस्त्यं । तया युता एव शिवैषिणः स्युः ।।२४।।

ॐ ह्रीँ उत्तमतपोशियधर्मसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

समस्तजन्तुष्वभयं परार्थ-संपत्करी ज्ञानसुदत्तिरिष्टा ।
धर्मौषधीशा अपि ते मुनीशाः । त्यागेश्वरा द्रान्तु मनोमलानि ।।२५।।

ॐ ह्रीँ उत्तमत्यागधर्मप्रवीणाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

आत्मस्वभावादपरे पदार्था । न मेऽथवाहं न परस्य-बुद्धिः ।
येषामिति प्राणयति प्रमाणं । तेषां पदार्चां करवाणि नित्यं ।।२६।।

ॐ ह्रीँ उत्तमाकिंचिन्यधर्मसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

रंभोर्वशी यन्मनसोविकारं। कर्तुं न शक्तात्मगुणानुभावान् ।।
शीलेशतामादधुरुत्तमार्था। यजामि तानार्यवरान्मुनीन्द्रान् ।।२७।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यमहानुभावधर्ममहनीयाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

संरोधनान्मानसभंगवृत्तेः। विकल्पसंकल्पपरिक्षयाच्च ।।
शुद्धोपयोगं भजतां मुनीनां। गुप्तिं प्रशंस्यात्र यजामहे तान् ।।२८।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसंपन्नाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

धर्मोपदेशात्तदृते कथायाः। आभाषणात्संभ्रमतादिदोषैः ।।
वियोजनाद्ध्यानसुधैकपानाद् ।। गुप्तिं वचोगामटितान्यजामि ।।२९।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

वन्याः समिद्भी रचितां दृषत्सू-त्कीर्णामिवांगप्रतिमां निरीक्ष्य ।।
कंडूतिनांगानि लिहन्ति येषां। धाराग्रमर्घेण यजामि सम्यक्।।३०।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सामायिकं जाहति नोपदिष्टं। त्रिकालजातं ननु सर्वकाले ।।
रागक्रुधोर्मूलनिवारणेन। यजामि चावश्यककर्मधार्तृन् ।।३१।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यककर्मधारिभ्य आचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सिद्धश्रुतिं देवगुरुश्रुतानां। स्मृतिं विधायापि परोक्षजातम् ।।
सद्वन्दनं नित्यमपार्थहानं। कुर्वन्ति तेषां चरणौ यजामि ।।३२।।

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

तेषां गुणानां स्तवनं मुनींद्राः। वचोभिरुद्धूतनोमलांकैः ।।
कुर्वन्ति चावश्यकमेव यस्मात्। पुष्पांजलिं तत्पुरतः क्षिपामि ।।३३।।

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसंयुकताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मलोत्सृजादौ क्वचनाप्तदोषं। प्रतिक्रमेणापनुदंति वृद्धम् ।।
साधुं समुद्दिश्य निशादिवीर्य। दोषान् जहत्यर्चनया धिनोमि ।।३४।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यर्कानिरताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वोनाम चात्माऽध्ययते यदर्थः। स्वाध्याययुक्तो निजभानुबुद्धः।
श्रुतस्य चिन्ताऽपि तदर्थबुद्धिः। तामाश्रये स्वाभिमतार्थसिद्धयै ।।३५।।

ॐ ह्रीँ स्वाध्यायावश्यककर्मनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

भुजप्रलम्बादिविधिज्ञतायाः। पौरस्त्यमाप्याधिगमं वहंतः।
व्युत्सर्गमात्रा वशिनः कृत्तार्था। अस्मिन्मखे यांतु विधिज्ञपूजां ।।३६।।

ॐ ह्रीँ व्युत्सर्गावश्यकनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(शिखरीणी)

गुणोद्देशादेषा, प्रणिधिवशतोऽनन्तगुणिनाम्।
कृताद्याचार्याणाम्, अपचितिरियं भावबहुला
समस्तान् संस्मृत्य, श्रमणमुकुटानर्घमलघु।
प्रपूर्त्तं संदृब्धं, मम मखविधिं पूरयतु वै ।।

ॐ ह्रीँ अस्मिनप्रतिष्ठोद्यापने पूजार्हमुख्यषष्ठवलयोन्मुद्रिताचार्यपरमेष्ठिभ्यस्तद् गुणेभ्यश्च पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वलय : ७

उपाध्याय परमेष्ठी के २५ गुणों के अर्घ्य

(आर्या)

आचारांगं प्रथमं, सागारमुनीशचरणभेदकथम्।
अष्टादशसहस्रपदं, यजामि सर्वोपकार सिद्धयर्थं ।।१।।

ॐ ह्रीँ अष्टादशसहस्रपदकाचारांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सूत्रकृतांगं द्वितयं, षट्त्रिंशत्सहस्रपदकृतमहितम्।
स्वपरसमयविधानं, पाठकपठितं यजामि पूजार्हम् ।।२।।

ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशत्सहस्त्रपदसंयुक्तसूत्रकृतांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थानांगं द्विकचत्वारिंशत्, पदकं षडर्थदशसरणेः।
एकादिसुभेदयुजः, कथकं परिपूजये वसुभिः ।।३।।

ॐ ह्रीँ द्विचत्वारिंशत्सहस्रपदसंयुक्तस्थानांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समवायांगं लक्षैकं, चतुरितषष्ठीसहस्त्रपदविशदम् ।
द्रव्यादिचतुष्टयेन तु, साम्योक्तिर्यत्र पूजये विधिना ।।४।।

ॐ ह्रीं एकलक्षचतुःषष्ठिसहस्त्रपदन्याससमवायांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्व०

व्याख्याप्रज्ञप्त्यंगं, द्विलक्षसहिताष्टविंशतिसहस्त्रपदम् ।।
गणधरकृतषष्टिसहस्र, प्रश्नोक्तिर्यत्र पूज्यते महसा ।।५।।

ॐ ह्रीं द्विलक्षाष्टाविंशतिसहस्त्रपदरंजितव्याख्याप्रज्ञप्त्यंगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं

ज्ञातृधर्मकथांगं, शरलक्षसहस्त्रषट्क पंचाशत् ।।
पदमहितं वृषचर्चा, प्रश्नोत्तरपूजितं महये ।।६।।

ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत्सहस्त्रपदसंगतज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उपासकपाठकशिव, लक्षसप्ततिसहस्त्रपदभंगम् ।।
व्रतशीलाधानादि, क्रियाप्रवीणं यजामि सलिलाद्यैः ।।७।।

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्ततिसहस्त्रपदशोभितोपासकाध्ययानांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं ।।

अंतकृत दशांगायाधर्मम्, साधुजनोपसर्गकथ कर्मधितीर्थम् ।।
तेषां निःश्रेयसलंभन-मपि गणधरपठितं यजामि मुदा ।।८।।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिलक्षाष्टाविंशतिसहस्त्रपदसंयुक्तांतःकृद्दशांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।

उपपादानुत्तरकं, द्विचत्वारिंशल्लक्षसहस्त्रपदम् ।।
विजयादिषु नियमेन मुनि, गतिकथकं यजामि महनीयम् ।।९।।

ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्षचतुश्चत्वारिंशत्सहस्त्रपदयुतानुत्तरोत्पादकदशांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं।

प्रश्नव्याकरणांगं, त्रिनवतिलक्षाधिषोडशसहस्त्रपदम् ।।
नष्टोद्दिष्टं सुखलाभ, गतिभाविकथं पूजये चरुफलाद्यैः ।।१०।।

ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षपोडशसहस्रपदसंयुकतप्रश्नव्याकरणांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं।

अंग विपाकसूत्रं, कोटयेकचतुरशीतिसहस्रपदम् ।
कर्मोदयसत्त्वाना नोदीर्णादिकथं यजनभागतोऽर्चामि ।।११।।

ॐ ह्रीं एककोटिचतुरशीतिलक्षपदरंजितविपाकसूत्रांगज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।

उत्पादपूर्वकोटी, पदपद्धतिजीवमुखषट्कं ।।
निजनिजस्वभावघटितं, कथयत्प्रांचामि भक्तिभरः ।।१२।।

ॐ ह्रीं एककोटिपदसहितोत्पादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीयपूर्व षण्णवति, कोटिपदं तु यत्र तत्त्वकथा ।।
सुनयदुर्णयतत्स्व, प्रामाण्यप्ररूपकं प्रयजे ।।१३।।

ॐ ह्रीं षण्णवतिकोटिपदविशदाग्रायणीयपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

(वसंततिलका)

वीर्यानुवादमघिसप्ततिलक्षपादं। द्रव्यस्वतत्त्वगुणपर्ययवादमर्थ्यं ।।
तत्तत्स्वभावगतिवीर्यविधानदक्षं। संपूजये निजगुणप्रतिपत्तिहेतोः ।।१४।।

ॐ ह्रीं सप्ततिलक्षपदसंयुक्तवीर्यानुवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

नास्त्यस्तिवादमधिषष्टिसुलक्षपादं। सप्तोद्भंगरचनाप्रतिपत्तिमूलम् ।।
स्याद्वादनीतिभिरुदस्तविरोधमात्रं। संपूजये जिनमतप्रसवैकहेतुम् ।।१५।।

ॐ ह्रीं षष्ठिलक्षपदशोभितास्तिनास्तिप्रवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

ज्ञानप्रवादमभिकोटिपदं तु हीन-मेकेन वाणमितभानविवर्णनांकम्।
कुज्ञानरूपतिमिरौघहरं समर्चे। यत्पाठकैः क्षणमिते समये विचार्यम् ।।१६।।

ॐ ह्रीं एकोनकोटिपदशोभितज्ञानप्रवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

सत्यप्रवादमधिकं रसपादजातैः। कोटीपदं निखिलसत्यविचारदक्षम्।
श्रोतृप्रवक्तृगुणभेदकथापि यत्र। तं पूर्वमुख्यमभिवादय उक्तमन्त्रैः ।।१७।।

ॐ ह्रीं एककोटिपदपूजितसत्यप्रवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रवादरसरविंशतिकोटिपादान्। जीवस्य कर्त्तुगुणभोक्तृगुणादिवादान् ।।
शुद्धेतरप्रणयतत्कथनं तु येषु। वंदामहे तदभिलाप्यगुणप्रवृत्त्यै ।।१८।।

ॐ ह्रीं षड्विंशतिकोटिपदलक्षितात्मप्रवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

कर्मप्रवादसमये विधुसंख्यकोटी। संख्यानशीतिलयुतान् वसुकर्मणां च।
सत्वापकर्षणनिधत्तिमुखानुवादे। पद्यान् स्थितानमितपूजनयाधिनोमि ।१९।

ॐ ह्रीं एककोट्यशीतिलक्षपदयुतकर्मप्रवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

प्रत्याहृतेश्चतुरशीतिसुलक्षपद्यान् । निक्षेपसंस्थितिविधानकथप्रसिद्धान् ।
न्यासप्रमाणनयलक्षणसंयुजोऽर्चे । यागार्चने श्रुतधरस्तवनोपयुक्तान् ।।२०।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षपदरंजितप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्व० ।।

विद्यानुवादभुविचंद्रसुकोटिकाष्ठा-लक्षाः पदा यदधिमन्त्रविधिप्रकारः ।
संरोहिणीप्रभृतिदीर्घविदां प्रसंगः । तं पूजये गुरुमुखांबुजकोशजातं ।।२१।।

ॐ ह्रीं एककोटिदशलक्षपदशोभितविद्यानुवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्व० ।।

कल्याणवादमननश्रुतमंगमुख्यं । षड्विंशतिप्रमितकोटिपदं समर्चे ।
यत्रास्ति तीर्थंकरकामबलत्रिखंडी-जन्मोत्सवाप्तिविधिरुत्तमभावना च ।२२।

ॐ ह्रीं षड्विंशतिकोटिपदसंयुक्तकल्याणवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

प्राणप्रवादमभिवादयतां नराणां । विश्वप्रमाणमितकोटिपदाभियुक्तम् ।।
काऽऽर्त्तिर्भवेन्निरयघोरभवस्य चायु-र्वेदादिसुस्वरभृतं परिपूजयामि ।।२३।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशकोटिपदलक्षितप्राणानुवादपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

(इन्द्रवज्रा)

क्रियाविशालं नवकोटिपद्यैः । युक्तं सुसंगीतकलाविशिष्टं ।
छंदोगणाद्याननुभावयन्तं - अध्यापकानत्र विधौ यजामि ।।२४।।

ॐ ह्रीं नवकोटिपदोपशोभितक्रियाविशालपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

त्रैलोक्यबिंदौ शिवतत्त्वचिंता । सार्द्धा सुकोटीद्विदशप्रमाणा ।
पदास्त्रिलोकीस्थितिसद्विधानं । अत्रार्चये भ्रान्तिविनाशनाय ।।२५।।

ॐ ह्रीं द्वादशकोटिपंचाशल्लक्षपदयुतत्रैलोक्यबिंदुसारपूर्वज्ञातोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।

(शार्दूलविक्रीडित)

इत्थं श्रीश्रुतदेवतां जिनवराम्, भोध्युद्गतामृद्धिभृ-
न्मुख्यैर्ग्रन्थनिबंधनाक्षरकृता, मालोकयंतीं त्रयं ।
लोकानां तदवाप्तिपाठनधियो, पाध्यायशुद्धात्मनः ।
कृत्वाराधनसद्विधिं धृतमहा, र्घेणार्चये भक्तितः ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्बिम्बप्रतिष्ठोत्सवसद्विधाने मुख्यपूजार्हसप्तमवलयोन्मुद्रितद्वादशांग-श्रुतदेवताभ्यस्तदाराधकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यश्च पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वलय : ८

साधु परमेष्ठि के २८ गुणों के अर्घ्य

(मंदाक्रांता)

जीवाजीव, द्विराधिकरण, व्याप्तदोषव्युदासात् ।
सूक्ष्मस्थूल, व्यवहृतिहतेः, सर्वथा त्यागभावात् ।।
मूर्धन्यासं, सकलविरतिं, संदधानान्मुनीन्द्रान् ।
आहिंस्याख्य, व्रतपरिवृतान्, पूजये भावशुद्धया ।।१।।

ॐ ह्रीँ अहिंसामहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिथ्याभाषा, सकलविगमात्, प्राप्तवाक्शुद्धयुपेतान् ।
स्याद्वादेशान्, विविधसनयै, र्धर्ममार्गप्रकाशम् ।।
संकुर्वाणा, नतिचरणधी, दूरगानात्मसंवित्-
सम्राजस्तां, श्चरुफलगणैः पूजयाम्यध्वरेऽस्मिन् ।।२।।

ॐ ह्रीँ अनृतपरित्यागमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आकर्तव्ये, शिवपदगृहे, रन्तुकामाः पृथक्त्वम् ।
देहात्मीयं, करगतमिवा, ध्यक्षमादर्शयन्तः ।।
प्राणग्राहं, तृणमपि परै, रप्रदत्तं त्यजन्तः ।
स्तापंतां मां, चरणवरिव, स्याप्रशक्तं मुनीन्द्राः ।।३।।

ॐ ह्रीँ अचौर्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिर्यग्मर्त्या, मरगतिगता, या स्त्रियः काष्ठचित्राः ।
लेप्याश्मान्या, श्चिदचिदुदधि, स्थास्तवस्तास्त्रियोगम् ।।
स्वप्ने जाग्र, द्दिशि कति चिद, प्यर्त्तिमुद्राः स्मरन्तः ।
ये वै शीलं, परिदृढ़मगु, स्तान्यजेऽहं त्रिशुद्धया ।।४।।

ॐ ह्रीँ ब्रह्मचर्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रागद्वेषा, द्यभिकृतपरा, वृत्तदोषांतरंगाः ।
ये बाह्या अप्युदितदशधा, ते ह्यकिंचन्यभावात् ।।

नापि स्थैर्यं, दधुरुरुगुणा, ग्राहिणि स्वांतमध्ये।
ग्रन्था येषां, चरणधरणिं, पूजयाम्यादरेण ।।५।।

ॐ ह्रीँ परिग्रहत्यागमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्यापन्था, स्तिमितचकित, स्तब्धदृष्टिप्रयोगा
भावाच्छुद्धो, युगमितधरा, लोकनेनापि येषाम् ।।
वर्षाकाला, वनियवसभू, जन्तुजातिं विहाय।
तीर्थश्रेयोगुरुनतिवशाद्, गच्छतोऽर्चे यतीन्द्रान् ।।६।।

ॐ ह्रीँ ईर्यासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभक्रोधा, द्यरिगणजयाद्, भीतिमोहापमर्दान्।
निःशल्याद्यान्, जिनवचसुधा, कंठपानप्रपुष्टान् ।।
याथातथ्यं, श्रुतनिगमयो, र्जानतः प्रश्नकर्तुः।
वाभिप्रायं, वचनसमितिः, धारकान् पूजयामि ।।७।।

ॐ ह्रीँ भाषासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्चत्वारिं, शदतिचरणा, म्रेडित त्यागयोगात्।
दोष्नां चातुः, दशमलभुवां हापनात्कायहानिं ।।
अप्यासीनाम् अमृतधिषणा, भ्यासतोऽग्रे कृतार्थां।
मन्वानास्ते, ऽशनविरतयः, पान्तु पादाश्रियं मां ।।८।।

ॐ ह्रीँ ऐषणासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तुग्राहं, त्वपरिणामान, आद्याननिक्षेपयोगा–
भावः पूर्वं, दृढ़परिचया, द्विद्यते शुद्ध एव ।।
पिच्छाकुण्डी, ग्रहणमपि ये, रक्षणाचारहेतोः।
कुर्वन्तोऽप्यत्र, निहितदृशः, तान्यजे सत्समित्यै ।।९।।

ॐ ह्रीँ आदाननिक्षेपणसमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्गाख्यां, समितिमघृणां, नासिकानेत्रपायू–
पस्थस्थानान्, मलहृतिविधौ, सुत्रमार्गानुकूलम् ।।

रक्षन्तोऽन्या, नपि सदयतां, पोषयन्तोऽप्युदग्राम् ।
धन्या दान्ते–न्द्रियपरिकरा, आददन्त्वर्चनां मे ।।१०।।

ॐ ह्रीं व्युत्सुगसमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उष्णः शीतो, मृदुलकठिनो, स्निग्धरुक्षौ गुरुर्वा ।
स्तोकः स्पर्शो, ऽष्टतय उदित, स्पर्शनात् सप्रमादम् ।।
रागद्वेषा, वपि न दधतः, चेतनाचेतनेषु ।
किं च स्त्रीणां, वपुषि विषये, तान्यजेऽहं मुनीन्द्रान् ।।११।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्ठस्तिक्तो, लवणकटुका, मम्ल एवं रसज्ञा-
ग्राही प्रोक्तो, रसनविषयः, तत्र रागक्रुधोर्वा ।।
त्यागात्सर्व, प्रकृतिनियतेः, पुद्गलस्य स्वभावं ।
संजानन्तो, मुनिपरिवृढ़ाः, पान्तु मार्मर्चितास्ते ।।१२।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वातद्वेष, स्तुहिनविकृते, रुष्णताद्वेष ऊष्म्य-
व्याप्तांगस्य, प्रकृतिनियमात्, सुप्रसिद्धोऽप्यतर्क्यः ।।
साम्यस्वामी, ह्याशुभसुभग, द्वैधगंधौ विजानन् ।।
वस्तुग्राहं, भजति समतां, तं यतीन्द्रं यजेऽहं ।।१३।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्यदृश्यं, नयनविषये, तेषु तेष्वात्मना वै ।
जन्माग्राहि, त्रिजगदभितः, चक्रमावर्तपातात् ।।
कृष्णे पीते, हरिदरुणयो, रर्जुने पौद्गलेक्ष्णोः ।
व्यापारोऽस्मिन्, निति परिणतः, पूज्यतेऽसौ मयात्र ।।१४।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकः स्तोत्रं, रचयितु मुदा, गद्यपद्यानवद्यैः ।
वाक्यैरन्यः, श्वपच जननी, तेऽद्य भार्या ममेती ।।

श्रुत्वा शब्दं, श्रवसि जडता, मेत्य तोषं न कोपम् ।
धत्ते शक्तो, ऽप्यमरमहितः, तस्य पूजां विदध्मः ।।१५।।

ॐ ह्रीँ श्रोत्रेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

साम्यं यस्य, स्फुरति हृदये, निर्व्यलीकं कदाचित् ।
आयातेऽति, ध्रुवमशुभस, मयाबद्धपाकावतारे ।।
धोरा पीडा, सदसि वपुषि, स्पृड्मृतिं संदधानो ।
बाहुभ्या मम्, बुधिमिव तरत्, येष साधुर्मयार्च्यः ।।१६।।

ॐ ह्रीँ सामायिकावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्मारं स्मारं, प्रकृतिमहिमा, नं तु पंचेश्वराणाम् ।
प्रत्यक्षं वा, मननविषयं, वंदमानस्त्रिकालं ।।
कर्मव्यूह क्षपणमसमं, चर्करीत्यात्मवंतं ।
शुद्धस्फारं, गमयति शिवं, तं महान्तं यजामि ।।१७।।

ॐ ह्रीँ वंदनावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतोरक्षः, प्रसरणनिरा, कर्मणो तीर्थनाथ-
पादाब्जेषु, प्रतिगुणगणे, दत्तचित्तो मुनीन्द्रः ।
तेषां स्तोत्रं, पठति परमा, नंदमात्मानुभावं ।
किं वा शुद्धं, सृजति स मया, पूज्यते तद्गुणाप्त्यै ।।१८।।

ॐ ह्रीँ स्तवनावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोषाभावे, ऽप्यथ निशि दिवा, हारनिहारकृत्ये ।
ज्ञाताज्ञात, प्रमदवशतो, जन्तुरभ्यर्दितः स्यात् ।।
नित्यं तस्य, प्रतिभयलवं, व्युत्सृजानः स्वयं यो ।
दोषव्रातैः, न हि जुडति तं, धीरवीरं यजामि ।।१९।।

ॐ ह्रीँ प्रतिक्रमणावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नित्यं चेतः, कपिरचलतां, नैति तद्यन्त्रणार्थ ।
स्वाध्यायाख्यैः, प्रगुणनिगडैः, बन्धमानीय भद्रे ।।

मार्गे युंज्यात्, श्रुतपरिणतात्, मीयमोदावधानः।
वृत्तिं शुद्धां, श्रयति स महा, नर्ध्यतेऽनर्ध्यबुद्धिः ।।२०।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आमे भाण्डे, कुथितकुणपे, यादृशी नश्यहेय-
बुद्धिः काये, सततनियता, वीतरागेश्वराणां ।।
व्यक्तीकर्त्तुं, शिखरिविपिनान्, तस्तनोनिर्ममत्वे।
कायोत्सर्गं, रचयति मुनिः, सोऽत्र पूजा प्रयातु ।।२१।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वे हर्म्ये, मणिगणचिता, नेकपर्यंकशायी।
सोऽयं घोर, स्वनमृगपतिः, त्रस्तनागेन्द्रकारे ।।
भूधग्रावो, परितनभुवि, स्वप्नवत्किंचिदात-
निद्रो यस्य, स्मरणमपि सं, हंति पापं स मेऽर्च्यः ।।२२।।

ॐ ह्रीं भूशयननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रीष्मे रेणूत्, करविकरण, व्यग्रवातप्रसर्पत्–
धूलीपुंजे, मलिनवपुषि, त्यक्तसंस्कारवांछः ।।
अस्नानत्वं, विजनसरसी, संनिधानेऽपि येषाम्।
तेषां पादाम्, बुजयुगमहं, पारिजातैरुदर्चे ।।२३।।

ॐ ह्रीं अस्नाननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वाल्कं फालं, वसनमुपसं, व्यानकोपीनखंडम्।
कादाचित्के, ऽप्युपधिसमये, नैव वांछंस्तपस्वी ।।
दैगम्बर्यं, परमकुशलं, जातरूपप्रबुद्धम्।
संधार्यैवं, नयति परमा, नंदधात्रीं तमर्चे ।।२४।।

ॐ ह्रीं सर्वथावस्त्रपरित्यागनियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षौरं शस्त्रो, ज्जनि परा, धीनतापात्रमेव।
जूडा मूर्ध, न्यतुलकृमिदा, भूतशीर्षाकृतिस्था ।।

दोषायैवे-ति विहितकचोत्, पाटनो मुष्टिमात्रात् ।
साक्षान्मोक्षा, ध्वनि धृतिपदः, पूज्यते श्रौतकर्मा ।।२५।।

ॐ ह्रीँ कृतकेशलोचनियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकद्वित्रि, प्रभूतिदिवस, प्रोषधादि प्रकर्तुः ।
आस्यम्लानिः, भवति नितरां, दन्तशुद्धिं विनाऽत्र ।।
दौर्गन्ध्यांघुं, वपुषमकृत, स्थैर्यमापन्निदानं ।
जानन्योगं, मलिनयति नो, तं समर्चे मुनीन्द्रं ।।२६।।

ॐ ह्रीँ दन्तधावनवर्जननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यांचादैन्यो, दरविघटना, दींगितादीनि येषाम् ।
निर्मूलन्तो, मनसि च मना, लाभलाभान्तराये ।।
तुल्या दृष्टिः, तदपि सकृदे, काह्निभुक्तिप्रमाणम् ।
तेषां धर्म्या, वगमसुगम, त्वाय पादौ यजामि ।।२७।।

ॐ ह्रीँ एकभुक्तनियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यावद्देहं, स्थितिधृतिधरा, शक्तिमंगीकरोति ।
यावज्जंधा, बलमचलतां, नोज्जिहीते मुनित्वे ।
यावत्स्थाप्ये, तदपगमने, भोजनत्याग एवं ।
सन्यासस्य, ग्रहणमिति यद्, यस्य नीतिस्तमर्चे ।।२८।।

ॐ ह्रीँ आस्थितभोजननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शार्दूलविक्रीडित)

अष्टाविंशतिसद्गुणग्रथितसद्, रत्नत्रयाभूषणम् ।
शीलेशित्वतनुत्ररक्षितवपुः, कामेषुभिर्नाहतं ।।
आर्हन्त्यादिपदस्य बीजमनघं, येषां परं पावनम् ।
साधूनां समुदायमुत्तमकुला, लंकारमाशाश्महे ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन्बिम्बप्रतिष्ठोत्सवेमुख्यपूजार्हाष्टमवलयोन्मुद्रितसाधुपरमेष्ठिभ्यस्तन्मूलगुणग्रामेभ्यश्चपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वलय : ९

ऋद्धिधारी मुनीश्वरों के ४८ अर्घ्य

(यद्यपि ऋद्धियाँ ६४ होती हैं लेकिन इस वलय में चारणऋद्धि के ९ भेदों को सामूहिकरूप से २ छन्दों में तथा विक्रियाऋद्धि के ११ भेदों को भी २ छन्दों में संगृहित करनेसे ४८ कहा गया हैं।)

बुद्धि ऋद्धि सम्बन्धी अर्घ्य

(वसंततिलका)

त्रैलोक्यवर्त्तिसकलं गुणपर्ययाढ्यं। यस्मिन्करामलकवत् प्रतिवस्तुजातम्॥
आभासते त्रिसमयप्रतिबद्धमर्चे। कैवल्यभानुमधिपं प्रणिपत्य मूर्ध्ना॥१॥

ॐ ह्रीँ सकललोकालोकप्रकाशकनिरावरणकैवल्यलब्धिधारकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्रर्जुभावघटितापरचित्तवर्ति। भावावभासनपरं विपुलर्जुभेदात्॥
ज्ञानं मनोऽधिगतपर्ययमस्य जातं। तं पूजयामि जलचन्दनपुष्पदीपैः॥२॥

ॐ ह्रीँ ऋजुमतिविपुलमतिमनःपर्ययधारकेम्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधिं च परमावधिमेव सर्वा-वध्यादिभेदमतुलावमदेशपृक्तम्॥
ज्ञानं निरूप्य तदवाप्तियुतं मुनीन्द्रं। संपूज्य चित्तभवसंशयमाहरामि॥३॥

ॐ ह्रीँ अवधिज्ञानधारकेम्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्योपदेशमनपेक्ष्य यथा सुकोष्ठे। बीजानि तदगृहपतिर्विनियुज्यमानः।
ग्रंथार्थबीजबहुलान्यनतिक्रमाणि। संधारयन्नृषिवरोऽर्च्यत आर्ष मन्त्रैः॥४॥

ॐ ह्रीँ कोष्टबुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यौऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एकं पदार्थमुपगृह्य मुखान्तमध्य - स्थानेषु तच्छ्रुतसमस्तपदग्रहोक्तिम्॥
पादानुसारिधिषणाद्यभियोगभाजां। संपूज्य तं मतिधरं तु समर्चयामि॥५॥

ॐ ह्रीँ पादानुसारिबुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कालादियोगमनुसृत्ययथाप्तमत्र। कोटिप्रदं भवति बीजमनिन्द्रियादि॥
वीर्यान्तरायशमनक्षयहेत्वनेक। पादावधारणमतीन् परिपूजयामि॥६॥

ॐ ह्रीँ बीजबुद्धिऋद्धिधारकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ये चक्रिसैन्यगजवाजिखरोष्ट्रमर्त्य – नानाविधस्वनगणं युगपत्पृथक्त्वात् ।।
गृहणंति कर्णपरिणामवशान्मुनीन्द्राः । तानर्चयामि कृतुभागसमर्पणेन ।।७।।

ॐ ह्रीँ संभिन्नश्रोत्रऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दूरस्थितान्यपि सुमेरुविधुप्रभास्वत् । सन्मंडलानि करपादनखांगुलीभिः ।
संस्पर्शशक्तिसहितर्द्धिवशात्स्पृशंतस् । तान् शक्तियुक्तपरिणामगतान्यजामि ।।८।।

ॐ ह्रीँ दुरस्पर्शशक्तिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नास्वादयंति न च तत्सदने समीहा । तत्रापि शक्तिरमितेति रसग्रहादौ ।।
ऋद्धिप्रवृद्धि सहितात्मगुणान्सुदूर – स्वादावभासनपरान् गणपान्यजामि ।।९।।

ॐ ह्रीँ दूरास्वादनशक्तिऋधिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्कृष्टनासिकहृषीकगतिं विहाय । तत्स्थोर्ध्वगंधसमवायनशक्तियुक्तान् ।।
उत्कृष्टभागपरिणाम विधौ सुदूर । गंधावभासनमतौ नियतान्यजामि ।।१०।।

ॐ ह्रीँ दूरघ्राणविषयग्राहकशक्तिऋद्धिप्राप्तेम्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्णीतपूर्णनयनोत्थहृषीकवार्त्ता । चक्रेश्वरस्य नियता तदधिक्यभावात् ।।
दूरावलोकनजशक्तियुतान्यजामि । देवेन्द्रचक्रधरणीन्द्रसमर्चितांघ्रिं ।।११।।

ॐ ह्रीँ दूरावलोकनशक्तिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रोत्रेन्द्रियस्य नवयोजनशक्तिरिष्टा । नातः परं तदधिकावनिसंस्थशब्दान् ।।
श्रोतुं प्रशक्तिरुदयत्यतिशायिनी च । येषां तु पादजलजाश्रयणं करोमि ।।१२।।

ॐ ह्रीँ दूरश्रवणशक्तिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अभ्यासयोगविहृतावपि यन्मुहूर्त । मात्रेण पाठयति दिक्प्रमपूर्वसार्थ ।।
शब्देन चार्थपरिमावनया श्रूतं तत् । शक्तिप्रभूनधियजामि मखस्य सिद्धयै ।१३

ॐ ह्रीँ दशपूर्वित्वऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

एवं चतुर्दशसुपूर्वगतश्रुतार्थं । शब्देन ये ह्यमितशक्तिमुदाहरन्ति ।।
तानत्र शास्त्रपरिलब्धिविधानभूति – संपत्तयेऽहमघुनार्हणया घिनोमि ।।१४।।

ॐ ह्रीँ चतुर्दशपूर्वित्वऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्योपदेशविरहेऽपि सुसंयमस्य । चारित्रकोटिविधयः स्वयमुद्भवन्ति ।।
प्रत्येकबुद्धमतयः खलु ते प्रशस्याः । तेषां मनाक् स्मरणतों मम पापनाशः ।।१५।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धित्वऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

न्यायागमस्मृतिपुराणपठित्यभावेऽ । प्याविर्भवंति परवादविदारणोद्धाः ।।
वादित्वबुद्धय इति श्रमणाः स्वधर्मं । निर्वाहयन्ति समये खलु तान्यजामि ।।१६।।

ॐ ह्रीं वादित्वऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारण ऋद्धि सम्बन्धी अर्घ्य

(यहाँ ९ प्रकारकी चारणऋद्धि को २ छंदो में संगृहित किया है ।)

जंघाग्निहेतिकुसुमच्छदतन्तुबीज । श्रेणीसमाजगमना इति चारणांकाः ।।
ऋद्धिक्रियापरिणता मुनयः स्वशक्ति । संभावितास्त इह पूजनमालभंतु ।।१७।।

ॐ ह्रीं जलजंघातंतुपुष्पपत्रबीज श्रेणीवह्नयादिनिमित्ताश्रयचारणऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं ।।

आकाशयाननिपुणा जिनमंदिरेषु । मेर्वाद्याकृत्रिमधरासुजिनेशचैत्यान् ।।
वंदंत उत्तमजनानुपदेशयोगान् । उद्धारयंति चरणौ तु नमामि तेषाम् ।।१८।।

ॐ ह्रीं आकाशगमनशक्तिचारणऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

विक्रिया ऋद्धि सम्बन्धि अर्घ्य

(यहाँ ११ प्रकार की विक्रियाऋद्धिको २ छंदों में संगृहित किया है ।)

ऋद्धिः सुविक्रियगता बहुलप्रकारा । तत्र द्विधा विभजनेष्वणिमादिसिद्धिः ।।
मुख्यास्ति तत्परिचयप्रतिपत्तिमंत्रान् । यायज्मि तत्कृतविकारविवर्जितांश्च ।१९।

ॐ ह्रीं अणिमामहिमालघिमागरिमाप्राप्तिप्राकाम्यवशित्वेशित्वऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं ।।

अंतर्दधिप्रमुखकामविकीर्णशक्तिः । येषां स्वयं तपस उद्भवति प्रकृष्टा ।।
तद्विक्रियाद्वितयभेदमुपागतानां । पादप्रधावनविधिर्मम पातु पाणिं ।।२०।।

ॐ ह्रीं विक्रियायामन्तर्धानादिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपऋद्धि सम्बन्धी अर्घ्य

षष्ठाष्टमद्विदशपक्षकमासमात्रा – नुष्ठेयभुक्तिपरिहारमुदीर्य योगम् ।।
आमृत्युमुग्रतपसा ह्यनिवर्त्तकास्ते । पान्त्वर्चनाविधिमिमं परिलंभयन्तु ।२१।

ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घोरोपवासकरणेऽपि बलिष्ठयोगान् । दौर्गंध्यविच्युतमुखान्महदीप्तदेहान् ।।
पद्मोत्पलादिसुरभिस्वसनान्मुनीन्द्रान् । यायज्मि दीप्ततपसो हरिचन्दनेन ।२२।

ॐ ह्रीँ दीप्ततपऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैश्वानरौघपतितांबुकणेन तुल्यं । आहारमाशु विलयं ननु याति येषाम् ।
विण्मूत्रभावपरिणाममुदेति नो वा । ते सन्तु तप्ततपसो मम सद्विभूत्यै ।२३।

ॐ ह्रीँ तप्ततपऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

हारावलीप्रभृतिघोरतपोऽभियुक्ताः । कर्मप्रमाथनधियो यत उत्सहन्ते ।।
ग्रामाटवीष्वशनमप्यतिपातयंति । ते सन्तुकार्मणतृणाग्निचयाः प्रशान्त्यै ।२४।

ॐ ह्रीँ महातपऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कासज्वरादिविविधोग्ररुजादिसत्वे-ष्वप्यच्युतानशनकायदमान् श्मशाने ।।
भीमादिगह्वरदरीतटिनीषु दुष्ट । संक्लृप्तबाधनसहानहमर्चयामि ।।२५।।

ॐ ह्रीँ घोरतपऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्वोदितासु विधियोगपरंपरासु । स्फारीकृतोत्तरगुणेषु विकाशवत्सु ।।
येषां पराक्रमहतिर्न भवेत्तमर्चे । पादस्थलीमिह सुघोरपराक्रमाणां ।।२६।।

ॐ ह्रीँ घोरपराक्रमगुणऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुःस्वप्नदुर्गतिसुदुर्मतिदौर्मनस्त्व । मुख्याः क्रिया व्रतविघातकृते प्रशस्ताः ।
तासां तपोविलसनेन समूलकाषं - घातोऽस्ति ते सुरसमर्चितशीलपूज्याः ।२७।

ॐ ह्रीँ घोरब्रह्मचर्यगुणऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

बलऋद्धि सम्बन्धी अर्घ्य

अंतर्मुहूर्त्तसमये सकलश्रुतार्थ - संचितनेऽपि पुनरुद्भटसूत्रपाठः ।।
स्वच्छामनोऽभिलषिता रुचिरस्ति येषां । कुर्यान्मनोबलिन उत्तममांतरं मे ।२८।

ॐ ह्रीँ मनोबलऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिह्माश्रुतावरणवीर्यशमक्षयाप्ता । वंतर्मुहूर्त्तसमयेषु कृतश्रुतार्थाः ।।
प्रश्नोत्तरोत्तरचयैरपि शुद्धकंठ । देशाः सुवाक्यबलिनो मम पांतु यज्ञ ।।२९।।

ॐ ह्रीँ वचनबलऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मेर्वादिपर्वतगणोद्धरणेषु शक्ताः। रक्षः पिशाचशतकोटिबलाधिवीर्याः ।।
मासर्तुवत्सरयुगाशनमोचनेऽपि। हानिर्न कायबलिनः परिपूजयामि ।।३०।।

ॐ ह्रीं कायबलऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

औषध ऋद्धि सम्बन्धी अर्घ्य

स्पर्शात्करांघ्रिजनितांद्शातनं स्यात्। आमर्षजायव इति प्रतिपत्तिमाप्तान्।
येषां च वायुरपि तत्स्पृशता रुजार्त्ति–नाशाय तन्मुनिवराग्रधरां यजामि।३१।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्ठीवनं हि मुखपद्मभवं रुजानां। शान्त्यर्थमुत्कटतपोविनियोगभाजाम् ।।
क्ष्वेलौषधास्त इह संजनितावतारः। कुर्वन्तु विघ्ननिचयस्य हतिं जनानां।३२।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेदावलंविरतजोनिचयो हि येषां। उत्क्षिप्य वायुविसरेण यदंगमेति ।।
तस्याशु नाशमुपयाति रुजां समूहो। जल्लौषधीशमुनयस्त इमे पुनंतु।३३।

ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नासाक्षिकर्णरदनादिभवं मलं यत्। नैरोग्यकारि वमनज्वरकासभाजाम् ।।
तेषां मलौषधसुकीर्तिजुषां मुनीनां। पादार्चनेन भवरोगहतिर्नितान्तं ।।३४।।

ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चार एव तदुपाहितवायुरेणू। अंगस्पृशौ च निहतःकिल सर्वरोगान् ।।
पादप्रधावनजलं मम मूर्ध्नि पातं। किं दोषशोषणविधौ न समर्थकस्तु।३५।

ॐ ह्रीं विडौषधिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्यंगदन्तनखकेशमलादिरस्य। सर्वो हि तन्मिलितवायुरपि ज्वरादि।
कासापतानवमिशूलभगंदराणां। नाशाय ते हि भविकेन नरेण पूज्याः।३६।

ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां विषाक्तमशनं मुखपद्मयातं। स्यान्निर्विष खलु तदङ्घ्रिधरापि येन ।।
स्पृष्टा सुधा भवति जन्मजरापपमृत्यु-ध्वंसो भवेत्किमु पदाश्रयणे न तेषाम्।३७।

ॐ ह्रीं आस्याविषऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां सुदूरमपि दृष्टिसुधानिपातो। यस्योपरिस्खलति तस्य विषं सुतीव्रम् ।।
अप्याशु नाशमयते नयनाविषास्ते। कुर्वन्त्वनुग्रहममीः कृतुभागमाजः ।३८।

ॐ ह्रीँ दष्ट्यविषऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रस ऋद्धि सम्बन्धि अर्घ्य

ये यं ब्रुवंति यतयोऽकृपया म्रियस्व। सद्योमृतिर्भवति तस्य च शक्तिभावात् ।।
येषां कदापि न हि रोषजनिर्घटेत। व्यक्ता तथापि यजतास्यविषान्मुनीन्द्रान् ।३९।

ॐ ह्रीँ आशीर्विषऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

येषामशातनिचयः स्वयमेव नष्टो-ऽन्येषां शिवोपचयनात्सुखमाददानाः ।।
ते निग्रहात्क्रमनसो यदि संभवेयुः। दृष्ट्यैव हन्तुमनिशं प्रभवो यजे तान् ।४०।

ॐ ह्रीँ दृष्टिविषाऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीराश्रवर्द्धिमुनिवर्यपदाम्बुजात - द्वन्द्वाश्रयाद्विरसभोजनमप्युदञ्चित् ।।
हस्तार्पितं भवति दुग्धरसाक्तवर्ण-स्वादं तदर्चनगुणामृतपानपुष्टाः ।।४१।।

ॐ ह्रीँ क्षीरश्राविऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां वचांसि बहुलार्तिजुषां नराणां। दुःखप्रघातनतयापि च पाणिसंस्था ।।
भुक्तिर्मधुस्वदनवत्परिणामवीर्याः। तानर्चयामि मधुसंश्रविणो मुनीन्द्रान् ।४२।

ॐ ह्रीँ मधुश्राविऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्षान्नमर्पितमथो करयोस्तु येषां। सर्पिःस्ववीर्यरसपाकवदाविभाति ।।
ते सर्पिराश्रविण उत्तमशक्तिभाजः। पापास्रवप्रमथनं रचयंतु पुंसाम् ।।४३।।

ॐ ह्रीँ घृतश्राविऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पीयूषमाश्रवति यत्करयोर्धृत सत् । रूक्षं तथा कटुकमम्लतरं कुमोज्यम् ।।
येषां वचोऽप्यमृतवत्श्रवसोर्निधत्तं। संतर्पयत्यसुभुतामपि तान्यजामि ।४४।

ॐ ह्रीँ अमृतश्राविऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र ऋद्धि सम्बन्धि अर्घ्य

यदत्तशेषमशनं यदि चक्रवर्त्ति-सेनाऽपि भोजयति सा खलु तृप्तिमेति ।।
तेऽक्षीणशक्तिललितामुनयो दृगाध्व-जाता ममाशु वसुकर्महरा भवन्तु ।४५।

ॐ ह्रीँ अक्षीणमहानसऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्रोपदेशसरसि प्रसरच्युतेपि । तिर्यक्मनुष्यविबुधाः शतकोटिसंख्याः ।
आगत्य तत्र निवसेयुरबाधमानाः । तिष्ठंति तान्मुनिवरानहमर्चयामि ।४६।

ॐ ह्रीँ अक्षीणमहालयऋद्धिप्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल ऋद्धि सम्बन्धि अर्घ्य

(शार्दूलविक्रीडित)

इत्थं सत्तपसःप्रभावजनिताः, सिद्धयर्द्धिसम्पत्तयो ।
येषां ज्ञानसुधाप्रलीढहृदयाः, संसारहेतुच्युताः ।।
रोहिण्यादिविधाविदोदितचमत्, कारेषु सन्निःस्पृहाः ।
नो वांछंति कदापि तत्कृतविधिं, तानाश्रये सन्मुनीन् ।।४७।।

ॐ ह्रीँ सकलऋद्धिसम्पन्नसर्वमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल ऋद्धि संपन्न वर्तमान २४ तीर्थंकरों के १४५३ गणधरों का अर्घ्य

(अनुष्टुप)

चतुर्विंशतितीर्थेशां, चतुर्दशशतं मत ।
सत्रिपंचाशतायुकतं, गणिनां प्रयजाम्यहं ।।४८।।

ॐ ह्रीँ चतुर्विंशतितीर्थेश्वराग्रिमसमावर्तिसत्रिपंचाशत्चतुर्दशशतगणधरमुनिभ्योऽर्घं ।।

(अनुष्टुप)

मदवेदनिधिद्वय, ग्रखत्रयांकान्मुनीश्वरान् ।।
सप्तसंघेश्वरांस्तीर्थ, कृत्सभानियतान्यजे ।।

ॐ ह्रीँ वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरसभासंस्थायिएकोनत्रिंशल्लक्षाष्टचत्वारिंशत्सहस्त्र-प्रमित-मुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा। (वर्तमान २४ तीर्थंकरोंकी सभा के २९ लाख ४८ हजार मुनियों को अर्घ्य)

ईशान कोण

जिनबिम्बों का अर्घ्य

(वंशस्थ)

अकृत्रिमाः श्रीजिनमूर्त्तये नव। सपंचविंशाः खलु कोटयस्तथा ।।
लक्षास्त्रिपंचाशमितास्त्रिसगुणाः। कृष्णाः सहस्त्राणि शतं नवानां ।।
द्विहीनपंचाशदुपात्तसंख्यकाः। प्रणम्य ताः पूजनया महाम्यहं ।।१।।

ॐ ह्रीँ नवशतपंचविंशतिकोटित्रिपंचाशल्लक्षसप्तविंशतिसहस्त्रनवशताष्टचत्वारिंश-प्रतिमा-कृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घनिर्वपामीति स्वाहा ।।९२५५३२७९४८।। (९२५ करोड, ५३ लाख, २७ हजार ९४८ अकृत्रिम जिनबिंबो अर्घ्य)

अग्नि कोण

जिनालयों का अर्घ्य

(अनुष्टुप)

अष्टौ कोट्यस्तथा लक्षाः, षट्पंचाशमितास्तथा।
सहस्त्रं सप्तनवतेरे, काशीतिश्चतुःशतं ।।
एतत्संख्यान् जिनेन्द्राणाम्, अकृत्रिमजिनालयान् ।।
अत्राहूय समाराध्य, पूजयाम्यहमध्वरे ।।१।।

ॐ ह्रीँ अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीतिसंख्याकृत्रिम-जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।८५६९७४८१।। (८ करोड, ५६ लाख, ९७ हजार, ४८१ जिनबिम्बों का अर्घ्य)

नैऋत्य कोण

जिनागम का अर्घ्य

(शार्दूलविक्रिडीत)

यो मिथ्यात्वमतंगजेषु तरुण, क्षुन्नुन्नसिंहायते।
एकान्तातपतापितेषु समरुत्, पीयूषमेघायते ।।
श्वभ्रान्धप्रहिसंपतत्सु सदयं, हस्तावलंबायते।
स्याद्वादध्वजमागमं तमभितः, संपूजयामो वयं ।।१।।

ॐ ह्रीँ स्याद्वादमुद्रांकितपरमजिनागमायार्घनिर्वपामीति स्वाहा।

वायव्य कोण

जिनधर्म का अर्घ्य

(शिखरणी)

जिनेन्द्रोक्तं धर्मं, सुदशयुत भेदं त्रिविधया।
स्थितं सम्यक् रत्न, त्रयलतिकयापि द्विविधया।।
प्रणीतं सागारे, तरचरणतो ह्येकमनघं।
दयारूपं वंदे, मखभुवि समास्थापितमिमं।।१।।

ॐ ह्रीँ दशलक्षणोत्तमक्षमादित्रिलक्षणसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररुपद्विविधमुनि-गृहस्थाचार-रुप, एकविधदयारूपजिनधर्मायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्थोद्धता)

यागमण्डलसमुद्धृता जिनाः। सिद्धवीतमदना श्रुतानि च।
चैत्यचैत्यगृहधर्ममागमं। संयजामि सुविशुद्धिपूर्तये।।

ॐ ह्रीँ सर्वयागमण्डलदेवताभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(शार्दूलविक्रिडीत)

शांतिः पुष्टिरनाकुलत्वमुदित, भ्राजिष्णुताविष्कृतिः।
संसारार्णवदुःखदावशमनं, निःश्रेयसोद्भूतिता।।
सौराज्यं मुनिवर्यपादवरिवस्, याप्रक्रमो नित्यशो।
भूयादभ्रशराक्षिनायकमहा, पूजाप्रभावान्मम।।

इत्याशीर्वादं पठित्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तत्रोत्र आचार्यभक्ति-अर्हद्भक्ति-सिद्धभक्ति-श्रुतभक्ति-चारित्रभक्ति-पाठं कृत्वा महार्घ्यं दद्यात्।।

।। इति यागमण्डलार्चनं।।

विभाग-३ : पंचकल्याणक पूजा

गर्भ कल्याणक पूजा

नोट :–सामने विनायक यंत्र व चौवीसी मंडल स्थापित करे।

स्थापना

(छप्पय)

रतनवृष्टि सो करत, धनद सुरपति आज्ञा सिर।
मास अगाऊ षट् सो, अर नव मास लगा झिर।।
जनक-सदन लछमी निधि सोहत, उपमा किन मति?
जननि सुपन लख विमल गरभमें, आये श्रीपति।।
इहि विधि अनन्त महिमा धरन, सुख-समुद्र आनंद करन।
दुख हरन स्थापन कर भविक, मन वच तन पूजत चरन।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्ताः-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्ताः-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्ताः-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (इति सन्निधीकरणम्)

अष्टक

(गीतिका छन्द)

शुचि कनक कुम्भ लीयो सो भरकरि, नीर उज्ज्वल छान कैं।
निरवारने तिरषा सु कारन, कुमति उर बिच भान कैं।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं।।१।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सु चन्दन दुखनिकन्दन, मलयगिरि मनभावनो।
केशर कपूर मिलाय श्री जिनराज पूजन लावनो॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं॥२॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व०

सुन्दर प्रकाश उजास अक्षत, चन्द्रज्योति प्रकाशते।
मोती समान अखंड धोकर, पूँज पावत भाषते॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं॥३॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽक्षयप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति०

उत्कृष्टसों उत्कृष्ट पहुप, सुगंध सरस सुहावने।
अरु कामको निर्मूल कारन, चढ़त श्रीजिन पावने॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं॥४॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

रस रसत सरस सुहात नेत्रन, अमल शुद्ध पिछान कैं।
जिनराज चरन चढ़ाय प्रीतम, क्षुधा भागत जान कैं॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं॥५॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

दीपक प्रकाश सुहात सुन्दर, पात्रमें धर लाय कैं।
अज्ञान-तिमिर विनाश कारन, करत आरति गाय कैं॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं॥६॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

चन्दन सु अगर सुगंध सुन्दर, मलय धूप दशांग सो।
खेवहूँ सु पावक माहिं जिन तट, जरत कर्म कुसंग सो।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं।।७।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

खारक बदाम सो लायची, लोंगादि पुंगीफल सुधे।
जिनराज चरन चढ़ाय अनुक्रम, मुकति-फल पावत बुधे।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं।।८।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप सु फल भले।
ये द्रव्य अरघ बनाय रुचिकर, चढ़त श्रीजिन अघ टले।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानि कैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानि कैं।।२।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यम् निर्वपामीति०

प्रत्येक पूजा

(चौपाई)

दोज अषाढ़ कृष्ण पखवारा, सरवारधसिधिसों अवतारा।
नाभिरायके घर सुखदाये, मरुदेवी के उर में आये।।१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति०

जेठ अमावस वदि दिन सारा, विजय विमान त्याग अवतारा।
जितशत्रू घर त्रिय सुखधामा, विजया कूख बसे अभिरामा।।२।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

फागुन सुदी आठें दिन खासा, ग्रैवेयकको तजकर वासा।
नृप जितारि रमणी गुण सारे, नाम सुसेना गर्भ पधारे।।३।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसम्भवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

विजय विमान त्याग थिति भाना, सुदि वैशाख षष्टमी ठाना।
संवरराय त्रिया गुण खरे, सिद्धार्था घर अवतरे ।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

सावन सुदि दोयज दरसाये, विजय विमान त्यागकर आये।
नृपति मेघप्रभ तिय सुखकारा, नाम मंगला उर अवतारा ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

माघ वदी छठ दिन अभिरामा, ऊरघ ग्रैवेयक तज धामा।
धारनीश राजा सुख पाये, मात सुसीमाके उर आये ।।६।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

भादव सुदि छठ मंगलकारी, सुप्रतिष्ठत राजा गुणधारी।
माता पृथ्वीके उर आए, मध्यम ग्रैवेयकतैं आए ।।७।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

चैत वदी पंचमी शुभ थानै, वैजयंत तजिकैं सो विमानै।
मात सु लक्ष्मणाके उर आए, महासेन राजा मन भाए ।।८।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

आरनसे तजकर परजायो, रामादेवी के उर जायो।
नृप सुग्रीव महा उतसायो, फागुन वदि नवमी दिन गायो ।।९।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

चैत्र वदी आठें तिथि खासी, अच्युत स्वर्ग तजकें सुखरासी।
दृढरथ भूप सुनंदा देवी, उपजे कूख सबन सुख लेवी ।।१०।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

वाहन विमल नृपति उपकारी, विमलादेवी गुण आचारी।
पुष्पोत्तर तजि जनम सो लीनो, वदी छठ दिन शुभ कीनो ।।११।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

तजत भए महाशुक्र सु नाका, दिन आषाढ़ वदि छठ हित ताका।
राजा श्रीवसुपूज्य पियारे, देवी विजया कूख सिधारे।।१२।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

जेठ वदी दशमी दिन भारी, स्वर्ग तजो बारम सहस्रारी।
कृतवर्म्मा राजा त्रिय पाये, श्यामा नाम कूख पधराये।।१३।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

कार्तिक वदि परमा दिन कासा, पुष्पोत्तरको तजकै बासा।
सिंहसेन बड़भागी ताता, कूख बसे जयश्यामा माता।।१४।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

राजा भानु भयो उत्साहा, सुव्रतादेवी सती सु आहा।
ता उर सर्वारथतैं आये, आठें सुदी वैशाख बताये।।१५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

भादव वदि सातें व्रत भारी, सर्वार्थसिधि तज गुणधारी।
विश्वसेन राजा अति प्यारी, आइराउर आये सुखकारी।।१६।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

सावन वदि दशमी जग जाने, सरवारथसिधितें सु प्रयाने।
सूरसेन राजा गुणरासा, श्रीमति मातु कूख सुख वासा।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

अपराजित विमान तज आए, माता मित्रा कूख बसाए।
फागुन सुदी तीज सुखकारी, नृपति सुदर्शन महिमा भारी।।१८।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

राजा कुम्भराय व्रतवानी, तासु प्रिया सुप्रभावति रानी।
अपराजित विमान तज डेरा, चैत्र सुदी परमा शुभ वेरा।।१९।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

प्रानत स्वर्ग त्याग जिनराजा, सावन वदी दोज सुखसाजा।
तात सुमित्र सु विजया माई, जनम लयो त्रिभुवन के राई ।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

विजयराज शोभत नृप ज्ञानी, आश्विन वदि शुभ दोज बखानी।
अपराजित विमान तज आए, विप्रा देवी कूख बसाए ।।२१।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

कार्तिक सुदि छठ सब शुभ माने, आए तज सुजयंत विमाने।
समुदविजय शिवदिव्या रानी, ता उर जनम लिये निज ज्ञानी ।।२२।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

प्रानत स्वर्ग त्यागकर आए, वदि वैशाख दोज गुण गाए।
विश्वसेन घर वामा रानी, ता उर ज्ञान बसे सुखकानी ।।२३।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

तजकर पुष्पोत्तर बड़भागी, तिथि आषाढ़ सुदी छट्ठ लागी।
सिद्धारथ राजा सुख पाए, प्रियकारिनी देवी उर आए ।।२४।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति०

(गीतिका छंद)

मन वचन काय त्रि शुद्ध करकें, चतुर्विंशति जिन जजों।
श्रीगर्भकल्याणक सु महिमा, बार बारहिं उर भजों ।।
जिन जजत पाप समूह नाशें, सुखविधान सु पावहिं।
सब दुख निवारन सेव जिनकी, होत मंगल भावहीं ।।२५।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो गर्भमंगलमंडितेभ्यः महाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शोधन गर्भ सु वस्तुकर, षट् कुमारिका आय।
बहु देवी सेवा करत, निशिदिन घर आल्हाद ।।

(पद्धरि छंद)

षट् मास अगाऊ करत सेव, छप्पन देवी उर भक्ति लेव।
नित रत्नवृष्टि होवत विख्यात, सब जन आनंद कर भाँत भाँत ।।१।।
तब धनपति नगर सिंगार सार, बहु रतन हेममय रच अपार।
षट् मास गए तब मात रैन, सुपने सोलह शुभ लखे ऐन ।।२।।
पति पास गई फल पूछि सार, सुनि जाई घर आनंद अपार।
फिर इन्द्रादिक आए न वार, करि कल्याणक गर्भावतार ।।३।।
उत्सव कीनो अति ही महंत, पुनि निज थानक पहुँचे तुरन्त।
अब सुनो निर्मल मह प्रभाव, सेवत सुरंगना घर उछाव ।।४।।
शुचि गर्भ स्थिति मह दीप्तिवान, त्रय ज्ञान सु भूषत गुण निधान।
तन वज्रवृषभनाराच धरन, सुन्दर सरूप दुति सरस करन ।।५।।
शत आठ सु लक्षन रचत तास, नौ सै विंजन सोहत विख्यात।
सबके प्रियतम भविजन सु मात, जिनकी महिमा जग है विख्यात ।।६।।
दरपन कोई इक लिये हाथ, कोई धर्म-कथा कहि नमत माथ।
कोई झारी कोईक पहुपमाल, कोई गहत बीजना नमत भाल ।।७।।
बूझत केई मिलकर गूढ़ अर्थ, तिन ज्वाब कहत जननी समर्थ।
परिजन पुरजन सुर हरष गात, जिन पुण्य महातम कहो न जात ।।८।।

(सोरठा) इहविधि गर्भकल्याण को, कवि वरनन न करि सकै।
जाको पढ़त सुजान, विघन-हरन मंगल करन ।।९।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो गर्भमंगलमंडितेभ्यः पूर्णाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजत, पंचकल्याणक भले।
बहु पुण्य की बढ़वार जाके, विघन जात टले गले ।।
जाके सुफल कर देह सुन्दर, रोग शोक न आवहीं।
घन धान्य पुत्र सुरेन्द्र सम्पति, राज निज सुख पावहीं ।।१०।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।)

घटयात्रा प्रसंगे

तीर्थमण्डल पूजा

(वसंततिलका)

तद्-ब्रह्मचिन्मयसुधारसपूरभोक्तृ
वाक्यामृताप्लुतजगद् विधिपूर्वमेतत् ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।१।।

ॐ ह्रीं परब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

पद्मादिदिव्यह्रदवारिविभूतिभोक्त्रीः
श्रीपूर्वदिव्ययुवतीर्विधिपूर्वमेताः ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीप्रभृतिदेवतास्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।२।

गङ्गादिदिव्यसरिदम्बुविभूतिभोक्त्री-
गङ्गादिदैवतवधूर्विधिपूर्वमेताः ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।३।।

ॐ ह्रीं गङ्गादिदेवीस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।३।

सीतातदुरसरित्प्रणयिह्रहाम्भो-
भुञ्जन्महाह्रदसुरान् विधिपूर्वमेतान् ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।४।।

ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाह्रददेवस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ।४।

सिन्धुप्रवेशपथतोयविभूतिभुञ्जन्
श्रीमागधादिविबुधान् विधिपूर्वमेतान् ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।५।।

ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादितीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ।५।

सीतादिमागधपथीय विभूतिभुञ्जन्
श्रीमागधादिविबुधान् विधिपूर्वमेतान् ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।६।।

ॐ ह्रीं सीतासीतोदादिमागधादितीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ।६।

संख्यातिगाम्बुनिधिनीरविभूतिभुञ्जन्-
क्षीरादिवारिधिसुरान् विधिपूर्वमेतान् ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।७।।

ॐ ह्रीं संख्यातीतसमुद्रदेवस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।७।

लोकाग्रसिद्धपुरतीर्थजलर्द्धिभुञ्ज-
ल्लोकेऽष्टतीर्थमरुतो विधिपूर्वमेतान् ।
अब्गन्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-
धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन् ।।८।।

ॐ ह्रीं लोकस्थिततीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।८।

जन्म कल्याणक पूजा

स्थापना

(गीता छन्द)

जिन नाथ चौविस पूजा करत हम उमगाय।
जग जन्म लेके जग उधारो, जजैं हम चितलाय।।
तिन जन्म कल्याणक सु उत्सव इन्द्र आय सुकीन।
हम हूं सुमर ता समयको पूजत हिये शुचि कीन।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्ताः श्री ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकराः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्ताः श्री ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकराः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्ताः श्री ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकराः ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्।

(छन्द चाली)

जल निर्मल धार कटोरी, पूजूं जिन निज कर जोड़ी।
पद पूजन करहूँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशरमय लाऊँ, भवकी आताप शमाऊँ।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत शुभ धोकर लाऊँ, अक्षय गुणको झलकाऊँ।
पद पूजन करहूँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर पुहपनि चुनि लाऊँ, निज काम व्यथा हटवाऊँ।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान मधुर शुचि लाऊँ, हनि रोग क्षुधा सुख पाऊँ।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक करके उजियारा, निज मोह तिमिर निरवारा।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन धूप खिवाऊँ, निज अष्ट करम जलवाऊँ।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम उत्तम लाऊँ, शिवफल जासे उपजाऊँ।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आठों द्रव्य मिलाऊँ, मैं आठो गुण झलकाऊँ।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक के अर्घ्य

(छन्द चाल)

वदी चैत नवमि शुभ गाई, मरुदेवी जने हरषाई।
श्री रिषभनाथ युग आदि, पूजूं भव मेटी अनादी ।।१।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-नवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

दसमी शुभ माघ वदीकी, विजया माता जिनजी की।
उपजे श्री अजित जिनेशा, पूजूं मेटो सब क्लेशा ।।२।।

ॐ ह्रीं माघवदी-दशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

कार्तिक सुदि पूरणमासी, माता सुसैन हुल्लासी।
श्री संभवनाथ प्रकाशे, पूजत आपा पर भासे ।।३।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला-पूर्णमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ चौदस माघ सुदी की, अभिनंदननाथ विवेकी।
उपजे सिद्धार्था माता, पूजूं पाऊं सुख साता ।।४।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

ग्यारस है चैत सुदीकी, मंगला माता जिनजीकी।
श्री सुमति जने सुखदाई, पूजूं मैं अर्घ्य चढ़ाई ।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

कार्तिक वदि तेरसि जानो, श्री पद्मप्रभ उपजानो।
है मात सुसीमा ताकी, पूजूं ले रुचि समताकी ।।६।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुचि द्वादश जेठ सुदीकी, पृथ्वी माता जिनजीकी।
जिननाथ सुपारश जाए, पूजूं हम मन हरषाए ।।७।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला-द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूस वदी ग्यारसको, है जन्म चन्द्रप्रभ जिनको।
धन्य मात सुलखनादेवी, पूजूं जिनको मुनिसेवी ।।८।।

ॐ ह्रीं पौषवदी-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अगहन सुदि एकम जाना, जिन मात रमा सुख खाना।
श्री पुष्पदंत उपजाए, पूजत हूं ध्यान लगाए ।।९।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला-प्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

द्वादश वदि माघ सुहानी, नंदा माता सुखदानी।
श्री शीतल जिन उपजाए, हम पूजत विघ्न नशाए ।।१०।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

फागुन वदि ग्यारस नीकी, जननी विमला जिनजीकी।
श्रेयांसनाथ उपजाए, हम पूजतहिं सुख पाए ।।११।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं०

वदि फाल्गुन चौदसि जाना, विजया माता सुख खाना।
श्री वासुपूज्य भगवाना, पूजूं पाऊं निज ज्ञाना ।।१२।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ द्वादश माघ वदीकी, श्यामा माता जिनजीकी।
श्री विमलनाथ उपजाए पूजत हम ध्यान लगाए ।।१३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा-द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

द्वादशि वदि जेठ प्रमाणी, सुरजा माता सुखदानी।
जिननाथ अनन्त सुजाए, पूजत हम नाहिं अघाए ।।१४।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा-द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

तेरसि सुदि माघ महीना, श्रीधर्मनाथ अघ छीना।
माता सुव्रता उपजाए, हम पूजत ज्ञान बढ़ाए ।।१५।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वदि चौदस जेठ सुहानी, ऐरा देवी गुण खानी।
श्रीशांति जने सुख पाए, हम पूजत प्रेम बढ़ाए।।१६।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

पडिवा वैशाख सुदीकी, लक्ष्मीमति माता नीकी।
श्रीकुन्थुनाथ उपजाए, पूजत हम अर्घ्य चढ़ाए।।१७।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला-प्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अगहन सुदि चौदस मानी, मित्रादेवी हरषानी।
अर तीर्थंकर उपजाए, पूजे हम मन वच काए।।१८।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अगहन सुदि ग्यारस आए, श्रीमल्लिनाथ उपजाए।
है मात प्रजापति प्यारी, पूजत अघ विनशै भारी।।१९।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

दशमी वैशाख वदी की, श्यामा माता जिनजीकी।
मुनिसुव्रत जिन उपजाए, हम पूजत पाप नशाए।।२०।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा-दशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं०

दशमी आषाढ़ वदीकी, विपुला माता जिनजीकी।
नमि तीर्थंकर उपजाए, पूजत हम ध्यान लगाए।।२१।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णा-दशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

श्रावण शुक्ला छठि जानो, उपजे जिन नेमि प्रमाणो।
जननी सु शिवा जिनजीकी, हम पूजत हैं थल शिवकी।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला-षष्ठ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वदि पूष चतुर्दशि जानी, वामादेवी हरषानी।
जिन पार्श्व जने गुणखानी, पूजें हम नाग निशानी।।२३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ चैत्र त्रयोदश शुक्ला, माता गुणखानी त्रिशला।
श्री वर्द्धमान जिन जाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।२४।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

नमो जै नमो जै नमो जै जिनेशा, तुम्हीं ज्ञान सूरज तुम्हीं शिव प्रवेशा।
तुम्हें दर्श करके महामोह भाजे, तुम्हें पर्श करके सकल ताप भाजे।।१।।

तुम्हें ध्यानमें धारते जोगिराई, परम आत्म अनुभव छटा सार पाई।
तुम्हें पूजते नित्य इन्द्रादि देवा, लहैं पुण्य अद्भुत परम ज्ञान मेवा।।२।।

तुम्हारो जनम तीन भू दुःख निवारी, महामोह मिथ्यात्व हियसे निकारी।
तुम्हीं तीन बोधं धरे जन्मही से, तुम्हें दर्शनं क्षायिकं जन्मही से।।३।।

तुम्हें आत्मदर्शन रहे जन्मही से, तुम्हें तत्त्व बोधं रहे जन्मही से।
तुम्हारा महा पुण्य आश्चर्यकारी, सु महिमा तुम्हारी सदा पापहारी।।४।।

करा शुभ न्हवन क्षीरसागर सु जलसे, मिटी कालिमा पापकी अंग परसे।
हुआ जन्म सफल करी सेव देवा, लहूं पद तुम्हारा इसी हेतु सेवा।।५।।

(दोहा)

श्रीजिन चौबिस जन्मकी, महिमा उरमें धार।
पूज करत पातक टलें, बढ़े, ज्ञान अधिकार।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यो महाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

*

तपकल्याणक पूजा

स्थापना

(गीता छंद)

श्री रिषभदेव सु आदि जिन श्रीवर्द्धमान जु अंत हैं।
वंदु हुं चरणवारिज तिन्होंके जपत तिनको संत हैं।।
करके तपस्या साधु व्रत ले मुक्तिके स्वामी भए।
तिन तपकल्याणक यजन को हम द्रव्य आठों हैं लए।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादि-वर्द्धमानजिना! अत्रावतरतावतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादि-वर्द्धमानजिना! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादि-वर्द्धमानजिना! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद चाली)

शुचि गंगाजल भर झारी, रुज जन्म मरण क्षयकारी।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन घसि लाऊं, भव का आताप शमाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले राशि दुतिकारी, अक्षयगुण के करतारी।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु फूल सुवर्ण चुनाऊं, निज काम व्यथा हटवाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे स्वच्छ बनाऊं, निज रोग क्षुधा मिटवाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ले तम हरनारा, निज ज्ञानप्रभा विस्तारा।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन धूप खिपाऊं, जिन आठों कर्म जलाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुन्दर ताजे लाऊं, शिवफल से चाह मिटाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आठों द्रव्य मिलाऊं, करि अर्घ परम सुख पाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

(छंद : चाली)

नौमी वदि चैत प्रमाणी, वृषभेष तपस्या ठानी।
निजमें निज रूप पिछाना, हम पूजत पाप नशाना।।१।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दसमी शुभ माघ वदीको, अजितेश लियो तप नीको।
जगका सब मोह हटाया, हम पूजत पाप भगाया।।२।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

मगसिर सुदि पूरणमासी, संभव जिन होय उदासी।
कचलोच महातप धारो, हम पूजत भय निरवारो ।।३।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लापूर्णिमायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश शुभ माघ सुदी की, अभिनंदन वन चलने की।
चित ठान परम तप लीना, हम पूजत हैं गुण चीन्हा ।।४।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यम् निर्वपामिति०

नौमी वैशाख सुदी में, तप धारा जाकर वन में।
श्री सुमतिनाथ मुनिराई, पूजूं मैं ध्यान लगाई ।।५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक वदि तेरसि गाई, पद्मप्रभु समता भाई।
वन जाय घोर तप कीना, पूजें हम समसुख भीना ।।६।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि द्वादश जेठ सुहाई, बारा भावन प्रभु भाई।
तप लीना केश उखाड़े, पूजूं सुपार्श्व यति ठाड़े ।।७।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

एकादश पौष वदीको, चंद्रप्रभु धारा तपको।
वनमें जिन ध्यान लगाया, हम पूजत ही सुख पाया ।।८।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकम जाना, श्री पुष्पदंत भगवाना।
तप धार ध्यान निज कीना, पूजूं आतम गुण चीन्हा ।।९।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लाप्रतिपदायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

द्वादश वदि माघ महीना, शीतल प्रभु समता भीना।
तप राखो योग सम्हारो, पूजें हम कर्म निवारो ।।१०।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन ग्यारस गाई, श्रेयांसनाथ सुखदाई।
हो तपसी ध्यान लगाया, हम पूजत हैं जिनराया ।।११।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन चौदसि स्वामी, श्री वासुपूज्य शिवगामी।
तपसी हो समता साधी, हम पूजत धार समाधी ।।१२।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वदि माघ चौथ हितकारी, श्री विमल सु दीक्षा धारी।
निज परिणतिमें लय पाई, हम पूजत ध्यान लगाई ।।१३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्थ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश वदि जेठ सुहानी, वन आए जिन त्रय ज्ञानी।
घर सामायिक तप साधा, पूजूं अनंत हर बाधा ।।१४।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि माघ महीना, श्री धर्मनाथ तप लीना।
वनमें प्रभु ध्यान लगाया, हम पूजत मुनिपद ध्याया ।।१५।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस शुभ जेठ वदी में, श्री शांति पधारे वन में।
तहं परिग्रह तज तप लीना, पूजूं आतमरस भीना ।।१६।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

करि दूर परिग्रह सारी, वैशाख सुदी पड़िवारी।
श्री कुंथु स्वात्मरस जाना, पूजन से हो कल्याणा।।१७।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि चौदस गाई, अरनाथ छोड़ गृह जाई।
तप कीना होय दिगंबर, पूजें हम शुभ भावों कर।।१८।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि ग्यारस कीना, सिर केशलोच हित चीन्हा।
श्री मल्लि यतिव्रत धारी, पूजें नित साम्य प्रचारी।।१९।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लाएकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख वदी दशमीको, मुनिसुव्रत धारा व्रतको।
समता रस में लौ लाए, हम पूजत ही सुख पाए।।२०।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी आषाढ़ वदी की, नमिनाथ हुए एकाकी।
वनमें निज आतम ध्याए, हम पूजत ही सुख पाए।।२१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छठि श्रावण शुक्ला आई, श्री नेमिनाथ वन जाई।
करुणाधर पशू छुड़ाए, धारा तप पूजूं ध्याए।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

लखि पौष इकादशि श्यामा, श्री पार्श्वनाथ गुणधामा।
तप ले वन आसन ठाना, हम पूजत शिवपद पाना।।२३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकाश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अगहन वदि दशमी गाई, बारा भावन शुभ भाई।
श्री वर्द्धमान तप धारा, हम पूजत हों भव पारा।।२४।।

ॐ ह्रीं अगहनकृष्णदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(भुजंगप्रयात छंद)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते मुनिन्दा। निवारे भली भांतिसे कर्म फंदा।
संवारे सु द्वादश तपं वन मंझारी। सदा हम नमत हैं तिन्हें मन सम्हारी।।१।।

त्रयोदशं प्रकारं सु चारित्र धारा। अहिंसा महा सत्य अस्तेय प्यारा।
परम ब्रह्मचर्य परिग्रह तजाया। सुधारा महा संयम मन लगाया।।२।।

दया धार भूको निरखकर चलत हैं। सुभाषा महा शुद्ध मीठी वदत हैं।
करैं शुद्ध भोजन सभी दोष टालें। दयाको धरे वस्तु लें मल निकालें।।३।।

वचन काय मन गुप्तिको नित्य धारें। धरम ध्यानसे आत्म अपना विचारें।
धरें साम्य भावं रहें लीन निजमें। सु चारित्र निश्चय धरें शुद्ध मनमें।।४।।

ऋषभ आदि श्री वीर चौविस जिनेशा। बड वीर क्षत्री गुणी ज्ञान ईशा।
खड़ग ध्यान आतम कुबल मोह नाशा। जजें हम यतनसें स्व आतम प्रकाशा।५

(दोहा)

धन्य साधु सम गुण धरें, सहें परीसह धीर।
पूजत मंगल हों महा, टलें जगत जन पीर।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादि-वीरांतचतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो महाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आहार दान के समय पूजा

(पद्धरी)

जय जय तीर्थंकर गुरु महान्, हम देख हुए कृत कृत्य प्राण।
महिमा तुम्हरी वरणी न जाय, तुम शिव मारग साधत स्वभाव।।
जय धन्य धन्य ऋषभेश आज, तुम दर्शन से सब पाप भाज।
हम हुए सुपावन गात्र आज, जय धन्य धन्य तप सार साज।।
तुम छोड़ परिग्रह भार नाथ, लीनो चरित्र तप ज्ञान साथ।
निज आतम ध्यान प्रकाशकार, तुम कर्म जलावन वृत्तिधार।।
जय सर्व जीव रक्षक कृपाल, जय धारत रत्नत्रय विशाल।
जय मौनी आतम मननकार, जगजीव उद्धारण मार्ग धार।।
हम गृह पवित्र तुम चरण पाय, हम मन पवित्र तुम ध्याय ध्याय।
हम भये कृतारथ आप पाय, तुम चरण सेवने चित बढ़ाय।।

(पुष्पांजलिः)

(वसंततिलका)

सुन्दर पवित्र गंगाजल लेय झारी,
डारुं त्रिधार तुम चरणन अग्र भारी।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय जन्मजरामत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्दनादि शुभ केशर मिश्रलाये,
भव ताप उपशम करा निज भाव ध्याए।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ श्वेत निर्मल सुअक्षत धार थाली,
अक्षय गुणा प्रकट कारण शक्तिशाली।

श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा गुलाब इत्यादि सुपुष्प धारे,
है काम शत्रु बलवान तिसे बिदारे।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेणी सुहाल बरफी पकवान लाए,
क्षुदरोग नाशन कारण काल पाए।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभदीप रत्न मयलाय तमोपहारी,
तम मोह नाश मम होय अपार भारी।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुगंधित सुपावन धूप खेऊं,
अरु कर्म काठको बाल निजात्म बेऊं।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्राक्षा बदाम फल साथ भराय थाली,
शिव लाभ होय सुख से समता संभाली।

श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अष्ट द्रव्य मम उत्तम अर्घ लाया,
संसार खार जलतारण हेतु आया।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनिंद चरणा,
पूजूं सुमंगल करा सब पाप हरणा।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(राग : नंदीश्वर जयमाला) (स्त्रग्विणी)

जय मुदा रूप तेरे सदा दोष ना,
ज्ञान श्रदान पूरित धरैं शोक ना।
राज को त्याग वैराग्यधारी भये,
मुक्ति का राज लेने परम मुनि भये।।
आत्म को जान के पाप को भान के,
तत्व को पाय के ध्यान उर आन के।
क्रोध को हान के मान को हान के,
लोभ को जीत के मोह को भान के।।
धर्म मय होयके साधते मोक्ष को,
बाधते मोह को जीतते द्वेष को।
शांतता धारते सभ्यता पालते,
आप पूजन किये सर्व अघ बालते।।
धन्य है आज हम दान सम्यक् करें,
पात्र उत्तम महापाप के दुख दरें।
पुण्य सम्पत भरें काज हमरे सरें,
आप सम होय के जन्म सागर तरें।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ तीर्थंकर मुनीन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानकल्याणक पूजा

स्थापना

(गीता छन्द)

चौबीस जिनवर तीर्थकारी, ज्ञान कल्याणक धरं।
महिमा अपार प्रकाश जगमें, मोह मिथ्या तम हरं॥
कीने बहुत भविजीव सुखिया दुःखसागर उद्धरं।
तिनकी चरण पूजा करें, तिन सम बने यह रुचि धरं॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट्। (इत्याह्वाननम्)। ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ता श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। (इतिस्थापनम्)। ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्। (इति सन्निधिकरणम्)

(छंद चामरा)

नीर ल्याय शीतलं महान मिष्टता धरे, गन्ध शुद्ध मेलिके पवित्र झारिका भरे।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत चंदनं सुगंधयुक्त सार लाय के, पात्रमें धराय शांतिकारणे चढ़ायके।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुलं भले सुश्वेत वर्ण दीर्घ लाइये, पाय गुण सु अक्षतं अतृप्तिता नशाइये।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण वर्ण पुष्प सार लाइये चुनाय के, काम कष्ट नाश हेतु पूजिये स्वभाविके।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर मोदकादि शुद्ध तुर्त ही बनाइये, भूखरोग नाश हेतु चर्णमें चढ़ाइये।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप धार रत्नमय प्रकाशता महान है, मोह अंधकार हार होत स्वच्छ ज्ञान है।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध सार लाय, धूपदान खेइये, कर्म आठको जलाय आप आप वेइये।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौंग औ बदाम आम्र आदि पक्व फल लिये, सुमुक्ति धाम पाय के स्वआत्म अमृत पिये।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय गंध अक्षतं सु पुष्प चारु चरु धरे, दीप धूप फल मिलाय अर्घ्य देय सुख करे।
नाथ चौविस महान वर्तमान काल के, बोध उत्सव करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

(छंद चाली)

एकादशि फागुन वदि की, मरुदेवी माता जिन की।
हत घाती कैवल पायो, पूजत हम चित उमगायो ।।१।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

एकादशि पूष सुदी को, अजितेश हतो घाती को।
निर्मल निज ज्ञान उपाये, हम पूजत सम सुख पाये ।।२।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

कार्तिक वदी चौथ सुहाई, संभव केवल निधि पाई।
भविजीवन बोध दियो है, मिथ्यामत नाश कियो है ।।३।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

चौदशि शुभ पौष सुदी को, अभिनंदन हन घाती को।
केवल पा धर्म प्रचारा, पूजूं चरणा हितकारा ।।४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

एकादशि चैत सुदी को, जिन सुमति ज्ञान लब्धी को।
पाकर भविजीव उधारे, हम पूजत भव हरतारे ।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

मधु शुक्ला पूरणमासी, पद्मप्रभु तत्त्व अभ्यासी।
केवल ले तत्त्व प्रकाशा, हम पूजत सम सुख भाषा ।।६।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-पूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०

छठि फाल्गुनकी अंधियारी, चउ घाती कर्म निवारी।
निर्मल निज ज्ञान उपाया, धन धन सुपार्श्व जिनराया ।।७।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

फाल्गुन वदि नौमि सुहाई, चंद्रप्रभु आतम ध्याई।
हन घाती केवल पाया, हम पूजत सुख उपजाया ।।८।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

कार्तिक सुदि दुतिया जानो, श्री पुष्पदंत भगवानो।
रज हर केवल दरशानो, हम पूजत पाप विलानो ।।९।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

चौदसि वदि पौष सुहानी, शीतलप्रभु केवलज्ञानी।
भवके संताप हटाया, समतासागर प्रगटाया ।।१०।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-चतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वदि माघ अमावसि जानो, श्रेयांस ज्ञान उपजानो।
सब जगमें श्रेय कराया, हम पूजत मंगल पाया ।।११।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा-अमावस्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ दुतिया माघ सुदी को, पायो केवल लब्धी को।
श्री वासुपूज्य भवितारी, हम पूजत अष्ट प्रकारी ।।१२।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

छठि माघ वदी हत घाती, केवल-लब्धि सुख लाती।
पाई श्री विमल जिनेशा, हम पूजत कटत कलेशा ।।१३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ चैत अमावस गाई, जिन केवलज्ञान उपाई।
पूजूं अनंत जिन चरणा, जो है अशरणके शरणा ।।१४।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-अमावस्या ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

मासांत पौष दिन भारी, श्री धर्मनाथ हितकारी।
पायो केवल सद्बोधं, हम पूजे छोड़ कुबोधं ।।१५।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

सुदि पूस इकादसि जानी, श्री शांतिनाथ सुखदानी।
लहि केवल धर्म प्रचारा, पूजूं मैं अघ हरतारा।।१६।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वदि चैत्र तृतीया स्वामी, श्री कुंथुनाथ गुणधामी।
निर्मल केवल उपजायो, हम पूजत ज्ञान बढ़ायो।।१७।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णातृतीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

कार्तिक सुदी बारस जानो, लहि केवलज्ञान प्रमाणो।
परतत्त्व निजतत्त्व प्रकाशा, अरनाथ जजो हत आशा।।१८।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वदि पूष द्वितीया जाना, श्री मल्लिनाथ भगवाना।
हत घाति केवल पाए, हम पूजत ध्यान लगाए।।१९।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वैशाख वदी नौमीको, मुनिसुव्रत जिन केवलको।
लहि वीर्य अनंत सम्हारा, पूजूं मैं सुख करतारा।।२०।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अगहन सुदि ग्यारस आए, नमिनाथ ध्यान लौ लाए।
पाया केवल सुखदाई, हम पूजत चित हरषाई।।२१।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

पडिवा शुभ वार सुदी को, श्री नेमनाथ जिनजी को।
इच्छो केवल सत ज्ञानं, हम पूजत ही दुःख हानं।।२२।।

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लाप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

तिथि चैत्र चतुर्थी श्यामा, श्री पार्श्वप्रभु गुणधामा।
केवल लहि तत्त्व प्रकाशा, हम पूजत कर शिव आशा।।२३।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वैशाख सुदी को, श्री वर्धमान जिनजी को।
उपजो केवल सुखदाई, हम पूजत विघ्न नशाई ।।२४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला-दशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सुग्विणी छन्द)

जय ऋषभनाथजी ज्ञान के सागरा, घातिया घातकर आप केवल वरा।
कर्मबन्धनमई सांकला तोड़कर, आप का स्वाद ले स्वाद पर छोड़कर ।।१।।

धन्य तू धन्य तू धन्य तू नाथजी, सर्व साधू नमें तोहि को माथजी।
दर्श तेरा करैं ताप मिट जात है, मर्म भाजें सभी पाप हट जात है ।।२।।

धन्य पुरुषार्थ तेरा महा अद्भुतं, मोहसा शत्रु मारा त्रिघाती हतं।
जीत त्रैलोक्य को सर्वदर्शी भए, कर्मसेना हती दुर्ग चेतन लए ।।३।।

आप सत् तीर्थ त्रय रत्न से निर्मिता, भव्य लेवें शरण होय भवन भव रिता।
वे कुशलसे तिरे संसृति सागरा, जाय ऊरुघ लहें सिद्ध सुन्दर धरा ।।४।।

यह समवशर्ण भवि जीव सुख पात हैं, वाणि तेरी सुनें मन यही भात है।
नाथ दीजे हमें अमृत महा, इस बिना सुख नहीं दुःख भवमें सहा ।।५।।

ना क्षुधा ना तृषा राग ना द्वेष है, खेद चिन्ता नही आर्ति ना क्लेश है।
लोभ मद क्रोध माया नही लेश है, बंदता हूं तुम्हें तू हि परमेश है ।।६।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिवीरांत-चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक पूजा

स्थापना

(त्रिभंगी)

जय जय तीर्थंकर मुक्तिवधूवर, भवसागर उद्धार करं।
जय जय परमातम शुद्ध चिदातम, कर्मकलंक निवारकरं।।
जय जय गुणसागर गुणरत्नाकर, आत्ममगनता सार धरं।
जय जय निर्वाणं पाय सुज्ञानं, पूजत पग संसार हरं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्ताः-श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट्। (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्ताः-श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्ताः-श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्। (इति सन्निधीकरणम्)

(वसंततिलका छन्द)

पानी महान भरि शीतल शुद्ध लाऊँ। जन्मादि रोग हर कारण भाव ध्याऊँ।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर सुमिश्रित सुगंधित चन्दनादि। आताप सर्व भव नाशन मोह आदी।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन समान बहु अक्षत धार थाली। अक्षय स्वभाव पाऊं गुण रत्नशाली।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा गुलाब मरुवा बहु पुष्प लाऊं। दुख टार काम हरके निज भाव पाऊं।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः कामबाणिध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे महान पकवान बनाये धारे। बाधा मिटाय क्षुधारोग स्वयं सम्हारे।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपावली जगमगाय अंधेर घाती। मोहादि तम विघट जाय भव प्रपाती।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर अगरादि सुगंध धूपं। बालूँ जु अष्ट कर्म हो सिद्ध भूपं।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे रसाल बादाम पवित्र लाए। जासे महान फल मोक्ष सु आप पाए।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों सुद्रव्य ले हाथ अरघ बनाऊँ। संसार वास हरके निज सुक्ख पाऊँ।।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊँ महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

(गीता)

चौदश वदी शुभ माघ की कैलाशगिरि निज ध्याय के।
वृषभेश सिद्ध हुवे शचीपति, पूजते हित पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटाय के शुद्धात्म मन में भाय के।।१।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ चैत सुदि पांचम दिना, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
अजितेश सिद्ध हुए भविकगण, पूजते हित पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ माघ सुदि षष्ठी दिना, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
संभव निजातम केलि करते, सिद्ध पदवी पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।३।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वैशाख सुदि षष्ठी दिना, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
अभिनंदनं शिव धाम पहुँचे, शुद्ध निज गुण पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ चैत सुदि एकादशी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री सुमतिजिन शिव धाम पायो, आठ कर्म नशाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री पद्मप्रभु निर्वाण पहुँचे, स्वात्म अनुभव पाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥६॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्रीजिनसुपार्श्व स्वस्थान लीयो, स्वकृत आनंद पाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥७॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ शुक्ल फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री चन्द्रप्रभु निर्वाण पहुँचे, शुद्ध ज्योति जगाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥८॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ भाद्र शुक्ला अष्टमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री पुष्पदंत स्वधाम पायो, स्वात्म गुण झलकाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥९॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ला-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

दिन अष्टमी शुभ क्वार सुद, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्रीनाथशीतल मोक्ष पाए, गुण अनंत लखाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥१०॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्ला-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

दिन पूर्णमासी श्रावणी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
जिन श्रेयनाथ स्वधाम पहुँचे, आत्म लक्ष्मी पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।११।।

ॐ ह्रीं श्रावणपूर्णमास्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ भाद्र सुद चौदश दिना, मंदारगिरि निज ध्याय के।
श्री वासुपूज्य स्वथान लीनो, कर्म आठ जलाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।१२।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

आषाढ़ वद शुभ अष्टमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री विमल निर्मल धाम लीनो, गुण पवित्र बनाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।१३।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अमावसी वद चैत्र की, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
स्वामी अनंत स्वधाम पायो, गुण अनंत लखाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।१४।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-अमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ ज्येष्ठ शुक्ला चौथ दिन, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री धर्मनाथ स्वधर्मनायक, भए निज गुण पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ ज्येष्ठ कृष्णा चौदसी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री शांतिनाथ स्वधाम पहुँचे, परम मार्ग बताय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥१६॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री कुंथुनाथ स्वधाम लीनो, परम पद झलकाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥१७॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अमावसी वद चैतकी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री अरहनाथ स्वधाम लीनों, अमर लक्ष्मी पाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥१८॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-अमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ शुक्ल फाल्गुन पंचमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री मल्लिनाथ स्वथान पहुंचे, परम पदवी पाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥१९॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

फाल्गुन वदी शुभ द्वादशी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
जिननाथ मुनिसुव्रत पधारे, मोक्ष आनंद पाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के॥२०॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

वैशाख कृष्णा चौदसी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
नमिनाथ मुक्ति विशाल पाई, सकल कर्म नशाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।२१।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

आषाढ़ शुक्ला सप्तमी, गिरनार गिरि निज ध्याय के।
श्री नेमिनाथ स्वधाम पहुंचे, अष्ट गुण झलकाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।२२।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

शुभ श्रावणी सुद सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री पार्श्वनाथ स्वथान पहुंचे, सिद्धि अनुपम पाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

अमावसी वद कार्तिकी, पावापुरी निज ध्याय के।
श्री वर्द्धमान स्वधाम लीनो, कर्म वंश जलाय के।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लाय के।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भाय के।।२४।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा-अमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(भुजंगप्रयात छंद)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते जिनंदा, तुम्हीं सिद्धरूपी हरे कर्म फंदा।
तुम्हीं ज्ञान सूरज भविक नीरजोंको, तुम्हीं ध्येय वायू हरो सब रजोंको।।१।।
तुम्हीं निष्कलंकं चिदाकार चिन्मय, तुम्हीं अक्षजीतं निजाराम तन्मय।
तुम्हीं लोक ज्ञाता तुम्हीं लोक पालं, तुम्हीं सर्वदर्शी हतो मान कालं।।२।।

तुम्हीं क्षेमकारी तुम्हीं योगिराजं, तुम्हीं सांत ईश्वर किया आप काजं।
तुम्हीं निर्भयं निर्मलं वीतमोहं, तुम्हीं साम्य अमृत पियो वीतद्रोहं ।।३।।

तुम्हीं भव उदधि पारकर्ता जिनेशं, तुम्हीं मोह तमके निवारक दिनेशं।
तुम्हीं ज्ञाननीर भरे क्षीरसागर, तुम्हीं रत्न गुणके सु गंभीर आकर ।।४।।

तुम्हीं चंद्रमा निज सुधाके प्रचारक, तुम्हीं योगियोंके परम प्रेम धारक।
तुम्हीं ध्यानगोचर सु तीर्थंकरोंके, तुम्हीं पूज्य स्वामी परम गणधरोंके ।।५।।

तुम्हीं हो अनादि नहीं जन्म तेरा, तुम्हीं हो सदा सत् नहीं अंत तेरा।
तुम्हीं सर्वव्यापी परम बोध द्वारा, तुम्हीं आत्मव्यापी चिदानंद धारा ।।६।।

तुम्हीं हो अनित्यं स्व परिणाम द्वारा, तुम्हीं हो अभेदं अमिट द्रव्य द्वारा।
तुम्हीं भेदरूपं गुणानंत द्वारा, तुम्हीं नास्तिरूपं परानंत द्वारा ।।७।।

तुम्हीं निर्विकारं अमूरत अखेदं, तुम्हीं निष्कषायां तुम्हीं जीत वेदं।
तुम्हीं हो चिदाकार साकार शुद्धं, तुम्हीं हो गुणस्थान दूरं प्रबुद्धं ।।८।।

तुम्हीं हो समयसार निजमें प्रकाशी, तुम्हीं हो स्वचारित्र आतम विकाशी।
तुम्हीं हो निरास्रव निराहार ज्ञानी, तुम्हीं निर्जरा बिन परम सुख निधानी ।।९।।

तुम्हीं हो अबन्धं तुम्हीं हो अमोक्षं, तुम्हीं कल्पनातीत हो नित्य मोक्षं।
तुम्हीं हो अवाच्यं तुम्हीं हो अचिन्त्यं, तुम्हीं हो सु गणराज नित्यं ।।१०।।

तुम्हीं सिद्धराजं तुम्हीं मोक्षराजं, तुम्हीं तीन भू के सु ऊरध विराजं।
तुम्हीं वीतरागं तदपि काज सारं, तुम्हीं भक्तजन भावका मल निवारं ।।११।।

करैं मोक्ष कल्याणकं भक्त भीने, फुरैं भाव शुद्धं यही भाव कीने।
नमे हैं जजे हैं सु आनन्द धारें, शरण मंगलोत्तम तुम्हींको विचारें ।।१२।।

(दोहा)

परम सिद्ध चौवीस जिन, वर्तमान सुखकार।
पूजत भजत सु भावसे, होय विघ्न निरवार ।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यो चतुर्विंशतिवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

देव - शास्त्र - गुरु का अर्घ

(गीता छंद)

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचू।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ संजोय के अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चोवीस जिनेन्द्र का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों;
चौवीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घं

जल गंध अक्षत फूल चरु फल दीप धूपायन धरीं,
'द्यानत' करो निरभय जगततैं, जोर कर विनती करीं;
सम्मेदगढ गिरनार चंपा पावापुरी कैलासको,
पूजों सदा चौवीस जिन निर्वाणभूमि निवासको।

ॐ ह्रीं ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति तीर्थंकर का अर्घ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसु कर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं;
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन-वच-तन धरि प्रेम, पांचों बल यति।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरस्वामी पंच बालयति-तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

मनमांही भक्ति अनादि नमि हों देव अरहंत को सही,
श्री सिद्ध पूजूं अष्ट गुणमय सूरि गुण छत्तीस ही;
अंग-पूर्वधारी जजों उपाध्याय साधु गुण अठबीस जी,
ये पंच गुरु निरग्रंथ सुमंगलदायी जगदीशजी।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-पंचपरमेष्ठिभ्यः अर्घं निर्वपामीति०

भावि तीर्थंकर अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लइ दीप धूप फल अर्घ, जिनवर पूज करुं।
अहो! धातकीखंड जिणंद भावि मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत शिव मंगलकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत शिव मंगलकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप-विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावि विदेही गणधर का अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुख के दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है।
शांति सुधाकर की शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर-भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्थ भावितीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावि मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप सम्बन्धी जिनचैत्यालय का अर्घ

जम्बू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेहा,
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा।
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही,
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्णपुरी अर्घ्य

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थ महान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिम्बेभ्यः अर्घं निर्वपामीति०

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

वसुविधि के वस वसुधा सब ही, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढ़ावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमल को नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।।

ॐ ह्रीं वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत-भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।

सर्वज्ञभाषित धर्म दशविध दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामवली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय,
सर्व पूज्य पद पूजहुं बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी करावबी-भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम-अकृत्रिम जिन-चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरोभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत-दस क्षेत्र सम्बन्धी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण-ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य धन्य आज घडी

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
आदिनाथ दरबार लगा, आदिनाथ दरबार है,
खुशियाँ अपार आज हर दिलपे छाई है,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है. आदिनाथ० १

भक्ति से नृत्य-गान कोई हैं कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है. आदिनाथ० २

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है. आदिनाथ० ३

चौवीस तीर्थंकरों की आरती

अघहर श्री जिनबिम्ब मनोहर चौवीस जिनका करो भजन।
आज दिवस कंचन सम उगियो, जिनमंदिर में चलो सजन। (टेक)

न्हवन थापना सहस्त्रनाम पढ, अष्टविधार्चन पूज रचन,
आरति अरु जयमाल स्तुति, स्वाध्याय त्रयकाल पठन;
जय जय आरति सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभि बाजे बजन;
रत्नजडित कर थाल मनोहर, ज्योति अनुपम धूम्रतजन। अघ० १

ऋषभ, अजित, संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमू चरन,
सुमति, पद्मप्रभ, देव सुपारस, चन्द्रनाथ वपु शुभ्रवरन;
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस अरु, वासुपूज्य भव तारनतरन,
विमल, अनंत धर्मजिन शांति, कुंथु, अरह हर जन्ममरण। अघ० २

मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिजिन, नेमि, पार्श्व हर अष्ट करम,
नाथवंश है उन्नत कर सत, अंतिम सन्मति देव शरन;
समवसरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन,
जिन उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राव-रंकको है जु शरन। अघ० ३

तीर्थंकर गुण-माल कंठकर, जाप जपो तिन करो कथन;
देव-शास्त्र-गुरु विनय करो, इन तीन रतन का करो जतन। अघ० ४

ॐ जय जिनवर देवा

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे....जगदीश्वर पदपंकज सेवा....ॐ

दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि-सिद्धि-सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार....ॐ

आज अमारे आंगणे पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी-महाविदेही भावी भगवंता....ॐ

पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक-तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ ! आतमना आधार !....ॐ

कृपा करो हे जिनवर ! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज !....ॐ

लाख लाख दीवडानी

लाख लाख दीवडानी आरती उतारजो,
लाख लाख तोरण बंधाय;
आंगणिये अवसर आनंदना.....(टेक)

लाख लाख द्रव्योंनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय। आंगणिये....लाख० १

खोबे खोबे रंग उडे गुलालना,
लाखों वधामणा जिनवरनां आवतां;
लाखेणी भक्ति कराय। आंगणिये....लाख० २

गावो गावो गीत गाजो गवरावजो,
ताने ताने नाच नाची नचावजो,
लाखेणा ल्हावा लेवाय। आंगणिये....लाख०३

लाख लाख गुरुजीना गुण गवरावजो;
लाख लाख (जीवोंना) उद्धार करनार। आंगणिये....लाख०४
जयकार जगतमां फेलाय। आंगणिये....लाख०४

पंच परमेष्ठी की आरती

ईह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे. टेक
पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा. इह० १
दूसरी आरती सिद्धनकेरी, सुमरनन करत मिटे भवफेरी. इह० २
तीजी आरती सूर मुनिंदा, जनम मरन दुःख दूर करिंदा, इह० ३
चौथी आरती श्रीउवज्ञाया, दर्शन देखत पाप पलाया. इह० ४
पांचमी आरती साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी. इह० ५
छट्ठी आरती श्रीजिनवाणी, 'द्यानत' सुरग मुक्ति सुखदानी. इह० ६

आदि जिणंद की आरती

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवी को नंदा;
पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे. जय. १
दुसरी आरती दीनदयाळा, सुवर्ण नगरमां जग अजवाळां. जय. २
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा. जय. ३
चोथी आरती चौगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे. जय. ४
पंचम आरती पुन्य उपाया, भक्तजने ऋषभ गुण गाया. जय. ५

श्री महावीरजिन आरती

ॐ जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा;
वीर महा अति वीर प्रभुजी, वर्धमान देवा. ॐ० १

त्रिशला उर अवतार लियो प्रभु सुरनर हर्षाये;
पंद्रह मास रतन कुंडलपुर, धनपति वर्षाये. ॐ० २

शुक्ल त्रयोदशि चैतमास की, प्रभु आनंद करतारी;
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाठ रचे भारी. ॐ० ३

त्रीस वर्ष लों रहे गृह में, प्रभु बाल ब्रह्मचारी;
राज त्याग कर भर यौवनमें, मुनिदीक्षा धारी. ॐ० ४

बारह वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया;
झलके लोकालोक ज्ञान में, यश भरपूर लिया. ॐ० ५

कार्तिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष बसे;
पर्व दिवाली चला तभी से घर-घर दीप जले. ॐ० ६

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, शिवमग परकाशी;
हरिहर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो, जयजय अविनाशी. ॐ० ७

दीनदयाला जगप्रतिपाला सुरनरनाथ जजे;
सुमरत विघ्न टरे इक छिन में, पातक दूर भजै. ॐ० ८

चोर भील चान्डाल उबारे, भवदुःख हर तुही;
पतित जान शिवराम उच्चारे, हे जिन शरण गही. ॐ० ९

जम्बूद्वीप की आरती

(आओ सहु आरती उतारीए)

जम्बूद्वीप सुवर्णे पधारिया जी रे,
आवो सहु आरती उतारीए.
सुदर्शन मेरुना सोळ सोळ मंदिरो,
रत्नमणिना बिंब सोहता जी रे....आवो सहु...

गजदंत शिखरे जिनालय बहु शोभतां,
पूजन रचावीए भावथी जी रे....आवो सहु...
विजयार्द्ध पर्वत ने वक्षारगिरि पर,
मंदिरो अकृत्रिम सोहता जी रे...आवो सहु...
कुलगिरि पर्वतना मंदिरोनी दिव्यता,
शी शी करुं तुझ सेवना जी रे....आवो सहु...
रत्नमणिना दीपको लईने,
भावे प्रभुने पूजीए जी रे....आवो सहु...

बाहुबली आरती

(ॐ जय जिनवरदेवा–राग)

ॐ जय बाहुबली देवा स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०
बार बार मास तपस्या करते, अंतरमें लवलीन,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०
भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीअे श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०
महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०
स्वर्णपुरीमें बाहुबली देवा, स्वागत मंगलकार,
आवो आवो अम आंगणिये, रत्ने वधावुं आज....ॐ जय०

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम् ।।१।।
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ।।२।।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मण्डलतेजः ।।३।।
तं जगदर्चिशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च ।।४।।

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु ।।५।।

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः ।।६।।

(स्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां, प्रभवतु बलवान्, धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यक्, विकिरत् मधवा, व्याधयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी, क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं, प्रभवतु सततं, सर्वसौख्यप्रदायि ।।७।।

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः, केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं, वृषभाद्या जिनेश्वरा ।।८।।

।।प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।।

(अथैष्ट प्रार्थना)(मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो, जिनपतिनुतिः, संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां, गुणगणकथा, दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि, प्रियहितवचो, भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां, मम भवभवे, यावदेतेऽपवर्गः ।।९।।

(आर्या)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावत्, यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ।।१०।।

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं;
तं खमउ णाणदेवय, मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु ।।११।।

दुःक्ख-खओ कम्म-खओ, समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव, तव जिणवर चरणसरणेण ।।१२।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

शांतिपाठ

(वसंततिलकम्)

सीमंधरादिभवशान्तिकरा जिनेन्द्राः,
सर्वार्थसाधनगुणप्रणिधानरूपाः;
तेभ्योऽर्पयामि भवकारणनाशबीजं,
पुष्पांजलि विमलमंगलकामरूपम् ।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

विसर्जन

(अनुष्टुप)

ज्ञानतोऽज्ञानको वाऽपि, शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु, त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।।१।।

आह्वानं नैव जानामि, नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ।।२।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं, द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।३।।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ।।४।।

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।५।।

भक्ति पाठः

सांप्रत समय की एक सामान्य समस्या उपयोग की चञ्चलता है । उसका निराकरण उपयोग की एकाग्रता से है । उपयोग की एकाग्रता का दो ही उपाय आचार्यने सुझाया है– शुद्धोपयोग एवं शुभोपयोग । शुद्धोपयोग की अनुपस्थिति में एक मात्र उपाय शुभोपयोग ही शेष रहता है । शुभोपयोग का सरल और सहज साधन भक्ति है ।

'पूज्यानां गुणेष्वनुरागो भक्तिः' पूज्य पुरुषों के गुणों में अनुराग होना ही 'भक्ति' है । पूज्य पुरुषों के गुणस्तवन से भक्त के हृदय में ऐसी विशुद्धि होती है कि उस के प्रभाव से निकाचित कर्मो की भी हानि होती है एवं पापकर्म का संक्रमण पुण्यकर्म रूप हो जाता है ।

भगवतीमाता पू. बहिनश्री चंपाबेन नियमसार के श्लोक २८ के माध्यम से बारबार कहती है कि अपने हृदय में जिनेन्द्र के पादपंकज की भक्ति हैं तो सब कुछ हैं और भक्ति नहि हैं तो कुछ भी नहीं हैं ।

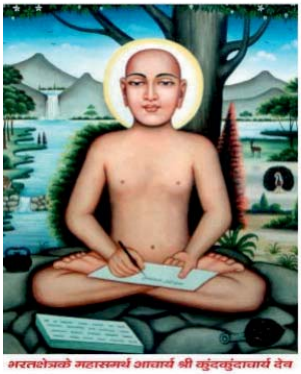
भरतक्षेत्रके महासमर्थ आचार्य श्री कुंदकुंदाचार्य देव

आचार्यकृत भक्ति पाठ की मूल रचना मंत्र रूप मानी जाती है, जो प्रतिष्ठा के विधि–विधान का एक प्रमुख हिस्सा है । कोई भी पूजा–विधान या अन्य कोई कृतिकर्म का समापन आचार्य के भक्ति पाठ से करने की पद्धति प्रचलित है ।

प्राकृत भाषा में रचा हुआ आचार्य कुंदकुंद के 'दश भक्तिपाठः' प्रसिद्ध है । आचार्य कुंदकुंदने प्रत्येक पद्य रूप भक्ति पाठ के साथ उस का संक्षिप्त गद्य रूप सार भी दीया है, जो 'अंचलिका' के नाम से कहा जाता है । संस्कृत के भक्ति पाठ आचार्य पूज्यपाद की रचना मानी जाती हैं ।

यहाँ आचार्यो के भक्ति पाठो में से प्रतिष्ठा–विधि में उपयोगी दश भक्ति पाठ प्रस्तुत है ।

विभाग-४ : भक्ति पाठ

१. सिद्धभक्तिः

(आर्या)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार-मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ।।१।।
मूलोत्तर-पयडीणं, बन्धोदय-सत्त-कम्मउम्मुक्का।
मंगल-भूदा सिद्धा, अट्ठ-गुणातीद-संसारा ।।२।।
अट्ठविय-कम्म-वियला, सीदीभूता णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ-गुणा किविकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा ।।३।।
सिद्धा णट्ठट्ठमला, विसुद्ध-बुद्धी य लद्धि-सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियन्तु भडारया सव्वे ।।४।।
गमणागमण-विमुक्के, विहडिय-कम्म-पयडि संघादा।
सासय-सुह-संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं ।।५।।
जयमंगल-भूदाणं, विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तइलोइ-सेहराणं, णमो सया सव्व-सिद्धाणं ।।६।।
सम्मत्त-णाण-दंसण,-वीरिय, सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु-अव्वाबाहं, अट्ठ-गुणा होंति सिद्धाणं ।।७।।
तव-सिद्धे णय-सिद्धे, संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि ।।८।।

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्म-चरित्तजुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण-सम्पण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-सिद्धाणं, अतीदाणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण-सम्पत्ति, होउ मज्झं। इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोमि।

(यह पढ़कर नौबार णमोकार मन्त्र पढ़े।)

२. श्रुतभक्तिः

(स्रग्धरा)

अर्हद्-वक्त्र-प्रसूतं, गणधर-रचितं, द्वादशांगं विशालं,
चित्रं बह्वर्थ-युक्तं, मुनिगण-वृषभैः, धारितं बुद्धिमद्भिः।
मोक्षाग्र-द्वार-भूतं, व्रत-चरण-फलं, ज्ञेय-भाव-प्रदीपं,
भक्त्या नित्य प्रवन्दे, श्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैक-सारम् ।।१।।

(वंशस्थ)

जिनेन्द्र-वक्त्रप्रविनिर्गतं वचो, यतीन्द्रभूतिप्रमुखैर्गणाधिपैः।
श्रुतं धृतं तैश्च पुनः प्रकाशितं, द्विषट्-प्रकारं प्रणमाम्यहं श्रुतम्।।२।।

(इन्द्रवज्रा)

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्य,-मेतच्छ्रुतं पञ्चपदं नमामि।।३।।

(अनुष्टुप)

अंगबाह्य-श्रुतोद्भूता-,ऽन्यक्षराण्यक्षराऽऽम्नये।
पञ्च-सप्तैकमष्टौ च, दशाशीतिं समर्चये।।४।।

(आर्या)

अरहंत-भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्ति-जुत्तो, सुदणाण-महोवहिं सिरसा।।५।।

इच्छामि भंते ! सुदभत्तिं-काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं। अंगोवंग-पइण्णय-पाहुड-परियम्मसुत्त-पढमाणुओय-पुव्वगय-चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ-धम्मकहाइयं सुदं णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण भावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्ग करोमि।

(नौबार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

३. चारित्रभक्तिः

(शार्दूलविक्रीडित)

संसार-व्यसनाहति-प्रचलिता, नित्योदय-प्रार्थिनः,
प्रत्यासन्न-विमुक्तयः सुमतयः, शांतैनसः प्राणिनः।
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं, सोपानमुच्चैस्तरां
आरोहंतु चरित्रमुत्तममिदं, जैनेन्द्रमोजस्विनः ।।१।।

(अनुष्टुप)

तिलोए सव्वजीवाणं, हियं धम्मोवदेसणं।
वड्ढमाणं महावीरं, वंदिता सव्ववेदिनं ।।२।।

धाइकम्मविघादत्थं, घाइकम्मविणासिणा।
भासियं भव्व-जीवाणं, चारित्तं पंचभेददो ।।३।।

समायियं तु चारित्रं, छेदोवट्ठावणं तहा।
तं परिहार-विसुद्धिं च, संजमं सुहमं पुणो ।।४।।

जहाखायं तु चारित्तं, तहाखायं तु तं पुणे।
किच्चाहं पंचहाचारं, मंगल मलसोहणं ।।५।।

अहिंसादीणि वुत्ताणि, महव्वयाणि पंच य।
समिदीओ तदो पंच, पंच-इंदियणिग्गहो ।।६।।

छब्भेयावासभूसिज्जा, अण्हाणत्तमचेलदा।
लोयत्तं ठिदि भुत्तिं च, अदंतवणमेव च।।७।।

एयभत्तेण संजुता, रिसिमूलगुणा तहा।
दसधम्मा तिगुत्तीओ, सीलाणि सयलाणि य।।८।।

सव्वे वि य परीसहा, वुत्तुत्तरगुणा तहा।
अण्णे वि भासिया संता, तेसिं हाणी मये कया ।।९।।

जइ रायेण दोसेण, मोहेणा णादरेण वा।
वंदित्ता सव्वसिद्धाणं, संजदा सा मुमुक्खुणा ।।१०।।

संजदेण मए सम्मं, सव्व-संजम-भाविणा।
सव्व-संजम-सिद्धीओ, लब्भदे मुत्तिजं सुहं ॥११॥

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तओ।
देवा वि तस्स पणमंति, जस्स धम्मे सया मणो॥१२॥

इच्छामि भंते ! चारित्त-भत्ति काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं, सम्मणाण-जोयस्स, सम्मत्ताहि-ट्ठियस्स, सव्व-पहाणस्स, णिव्वाण-मग्गस्स संजमस्स कम्मणिज्जर-फलस्स, खमाहारस्स, पंचमहव्वय-संपण्णस्स, तिगुत्ति-गुत्तस्स, पंचसमिदि-जुत्तस्य, णाणज्झाण-साहणस्स, समयाइव-पवेसयस्स, सम्म-चारित्तस्स, सदा णिच्च-कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि। दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण भावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्ग करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

४. आचार्यभक्तिः

(आर्या)

देस-कुल-जाइ-सुद्धा, विसुद्ध-मण-वयण-काय-संजुता।
तुम्हं पायपयोरुह-मिह, मंगलमत्थु मे णिच्चं ॥१॥

सग-पर-समयविदण्हू, आगम-हेदूहिं चावि जाणित्ता।
सुसमत्था जिण-वयणे, विणएण सुत्ताणु-रुवेण ॥२॥

बाल-गुरु-वुड्ढ-सेहे, गिलाण-थेरे य खमणसंजुत्ता।
अट्ठावयग्ग-अण्णे, दुस्सीले चापि जाणित्ता ॥३॥

वयसमिदिगुत्तिजुत्ता, मुत्तिपहे ठवया पुणो अण्णे।
अज्झावय-गुण-णिलया, साहुगुणेणा वि संजुत्ता ॥४॥

उत्तम-खमाइए पुढवी, पसण्ण-भावेण अच्छ-जल-सरिसा।
कम्मिंधण-दहणादो, अगणी वाऊ असंगादो ॥५॥

गयणमिव णिरुवलेवा, अक्खोहा सायरुव मुणि-वसहा।
एरिसगुण-णिलयाणं, पायं पणमामि सुद्धमणो ।।६।।

संसार-काणणे पुण, बंभममाणेहिं भव्व-जीवेहिं।
णिव्वाणस्स दु मग्गो, लद्धो तुम्हं पसाएण ।।७।।

अविसुद्धलेस्सरहिया, विसुद्ध-लेसाहि परिणदा सुद्धा।
रुद्दट्ठे पुण चता, धम्मे सुक्के य संजुत्ता ।।८।।

ओग्गह ईहावाय,-धारणगुणसम्पएहिं संजुत्ता।
सुत्तत्थ-भावणाए, भाविय-माणेहिं वंदामि ।।९।।

तुम्हं गुणगणसंथुदि, अजाणमाणेहिं जो मए वुत्तो।
दिंतु मम बोहि-लाहं, गुरुभत्ति-जुदत्थओ णिच्चं ।।१०।।

इच्छामि भंते ! आयरियभत्ति काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं। सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, पंच-विहाचाराणं आयरियाणं, आयारादि-सुदणाणोवदेसयाणं, उवज्झायाणं, तिरयण-गुण-पालण-रयाणं सव्व-साहूणं, सया णिच्च-कालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण भावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्ग करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

५. निर्वाणभक्तिपाठः

(आर्या)

अट्ठावयम्मि उसहो, चंपाए वासुपूज्ज–जिणणाहो।
उज्जंते णेमि-जिणो, पावाए णिव्वुदो महावीरो ।।१।।
वीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा।
सम्मेदे गिरि-सिहरे, णिव्याणगया णमो तेसिं।।२।।
वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्ठय-कोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।३।।
णेमिसामि पजण्णो, संबुकुमारों तहेव अणिरुद्धो।
बाहत्तरिकोडीओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा ।।४।।
रामसुआ बेण्णि जणा, लाडणरिंदाण पंचकोडीओ।
पावागिरिवर-सिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।५।।
पंडुसुआ तिण्णि जणा, दविडणरिंदाण अट्ठ-कोडीओ।
सत्तुंजयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।६।।
सत्तेव य बलभद्दा, जदुव-णरिंदाण अट्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरि-सिहरे, णिव्वाणयया णमों तेसि ।।७।।
राम-हणू-सुग्गीवो, गवयगवक्खो य णीलमहाणीलो।
णव-णवदीकोडीओ, तुंगीगिरि-णिव्वुदे वंदे ।।८।।
णंगाणंग-कुमारा, कोडी-पंचद्ध-मुणिवरा सहिया।
सवण्णागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।९।।
दहमुह-रायस्स सुआ, कोडी पंचद्ध मुणिवरा सहिया।
रेवा-उहय-तडग्गे, णिव्वाणणयया णमो तेसिं ।।१०।।
रेवा-णइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्की दह कप्पे, आहुट्ठयकोडि णिव्वुदे वंदे ।।११।।
वड़वाणीवरणयरे, दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे।
इंदजीय-कुंभयण्णो, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१२।।

पावागिरिवर-सिहरे, सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो।
चलणाणई-तडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१३।।

फलहोडिवरगामे, पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइ-मुणिंदा, णिव्वाणणया णमो तेसिं ।।१४।।

णायकुमार मुणिंदो, बालि महाबाली चेव अज्झेया।
अट्ठावयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमों तेसिं ।।१५।।

अच्चलपुरवरणयरे, ईसाण-भाए मेढगिरि-सिहरे।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१६।।

वंसत्थलवरणयरे, पच्छिमभायम्मि कुन्थुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूसणमुणी, णिव्वाणगयाणमो तेसिं ।।१७।।

जसहररायस्स सुआ, पंच-सयाइं कलिंग-देसम्मि।
कोडिसिलाएकोडिमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१९।।

पासस्स समवसरणे, सहिया वरदत्तमुणिवरा पंच।
रेसिंदि गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमों तेसिं ।।२०।।

इच्छामि भंते ! परिणिव्वाणभत्ति काउस्सग्गों कओ, तस्सालोचेउं, इमम्मि अवसप्पिणीए, चउत्थ-समयस्स पच्छिमे भागे, आहुट्ठ-मासहीणे, वास-चउक्कम्मि, सेसकालम्मि, पावाए णयरीए, कत्तिय-मासस्स किण्ह-चउद्दसिए, रत्तीए, सादीए णक्खत्ते पच्चूसे, भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिंगदो, तीसु-विलोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउव्विहा-देवा सपरिवारा, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुष्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अच्चंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परि-णिव्वाण-महाकल्लाण-पुज्जं करंति, अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

६. तीर्थंकरभक्तिः

(आर्या)

चउवीसं तित्थयरे, उसहाइ-वीर-पच्छिमे वंदे।
सव्वेसिं मुणि-गणहर,-सिद्धे सिरसा णमंसामि ।।१।।

(शार्दूलविक्रीडित)

ये लोकेऽष्ट-सहस्र-लक्षण-धरा, ज्ञेयार्णवाऽन्तर्गताः।
ये सम्यग्भव-जाल-हेतु-मथनाः चन्द्रार्क-तेजोऽधिकाः ।।
ये साध्विन्द्र-सुराप्सरा-गणशतैः, गीत-प्रणुत्यार्चिताः।
तान्देवान्वृषभादि-वीर-चरमान्, भक्तया नमंस्याम्यहम् ।।२।।

(स्रग्धरा)

नाभेयं देव-पूज्यं, जिनवरमजितं, सर्वलोक-प्रदीपं;
सर्वज्ञं सम्भवाऽख्यं, मुनि-गण-वृषभं, नंदनं देवदेवम्।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं, वर-कमल-निभं, पद्मपुष्पाऽभिगन्धं;
क्षांतं दांतं सुपार्श्वं, सकल-शशि-निभं, चंद्रनामानमीडे ।।३।।

विख्यांतं पुष्पदंतं, भव-भय-मथनं, शीतलं लोकनाथम्;
श्रेयांसं शील-कोशं, प्रवर-नर-गुरूं, वासुपूज्यं सुपूज्यम् ।।
मुक्तं दान्तेन्द्रियार्श्वं, विमलमृषिपतिं, सिंह-सैन्यं मुनीद्रं;
धर्मं सद्धर्मकेतुं, शमदमनिलयं, स्तौमि शांतिं शरण्यम् ।।४।।

कुन्थुं सिद्धालयस्थं, श्रमण-पतिमरं, त्यक्त-भोगेषु चक्रम्;
मल्लिं विख्यात गोत्रं, खचरगणनुतं, सुव्रतं सौख्यराशिम्।
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरिकुल-तिलकं, नेमिचन्द्रं भवांतम्;
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं, शरणमहिमितो, वर्धमानं च भक्तया ।।५।।

इच्छामि भंते ! चउवीस-तित्थयर-भत्ति-काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं; पंच-महा-कल्लाण-सम्पण्णाणं, अट्ठ- महा-पाडिहेर-सहियाणं, चउतीसातिसय-विसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देविंद-मणि-मउड-मत्थय-महियाणं, बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जइ-अणगारोवगूढाणं, थुइ-सय-सहस्स णिलयाणं, उसहाइ-वीर-पच्छिम-मंगल-महा-पुरिसाणं,

सया णिच्च-कालं अंचेमि, पूज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि। दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दना-स्तव-समेतं कायोत्सर्गं करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

७. शांतिभक्तिपाठः

शान्त्यष्टकं

(शार्दूलविक्रीडित)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् पाद-द्वयं ते प्रजाः;
हेतुस्तत्र विचित्र-दुःख-निचयः, संसारघोरार्णव।
अत्यन्त-स्फुरदुग्र-रश्मि-निकर, व्याकीर्ण-भूमण्डलो;
ग्रैष्मः कारयतीन्दु-पाद-सलिल,-च्छायाऽनुरागं रविः ।।१।।

क्रुद्धाशीर्विष-दुष्ट-दुर्जय-विष,-ज्वालावली-विक्रमो;
विद्या-भैषज-मन्त्र-तोय-हवनैः, याति प्रशांति यथा।
तद्वत्ते चरणाऽरुणाऽम्बुज-युग,-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्;
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो विस्मयः ।।२।।

संतप्तोत्तम-कांचन क्षितिधर, श्रीस्पर्द्धि-गौरद्युते;
पुंसां त्वच्चरण-प्रणाम-करणात्र, पीड़ाः प्रयान्ति क्षयम्।
उद्यद्-भास्कर-विस्फुरत्कर-शत,-व्याघात-निष्कासिता;
नाना-देहि-विलोचन-द्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी ।।३।।

त्रैलोक्येश्वर-भङ्ग-लब्ध-विजया,-दत्यंत रौद्रात्मकान्।
नाना-जन्म-शतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः;
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्र-दावानलान्-
न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल,-स्तुत्याऽऽपगावारणम् ।।४।।

लोकालोक-निरंतर-प्रवितत,-ज्ञानैकमूर्ते विभो !;
नाना-रत्न-पिनद्ध-दण्ड-रुचिर, श्वेतातपत्र-त्रयः ।
त्वत्पाद-द्वय-पूत-गीत-रवतः, शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः;
दर्पाऽध्मात-मृगेन्द्र-भीम-निनदाद्,-वन्या यथा कुंजराः ।।५।।

दिव्य-स्त्री-नयनाऽभिराम-विपुल-,श्री मेरु चूडामणे;
भास्वद्-बाल-दिवाकर-द्युतिहर, प्राणीष्ट-भामंडलम् ।
अव्याबाधमचिन्त्य-सारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतम्;
सौख्यं त्वच्चरणाऽरविन्द-युगल, स्तुत्यैव संप्राप्यते ।।६।।

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्री भास्करो भासयं-;
स्तावद्धारयतीह पंकज-वनं, निद्राऽतिभार-श्रमम् ।
यावत्त्वच्चरण-द्वयस्य भगवन्, न स्यात्प्रसादोदय-;
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति, प्रायेण पापं महत्र ।।७।।

शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र ! शान्तमनसः, त्वत्पादपद्माऽश्रयात्र;
संप्राप्ताः प्रथिवी-तलेषु बहवः, शान्त्यर्थिनः प्राणिनः ।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो, दृष्टिं प्रसन्नां कुरु;
त्वत्पाद-द्वय-दैवतस्य गदतः, शांत्यष्टकं भक्तितः ।।८।।

शांतिपाठ

(दोधक/चोपाई)

शांतिजिनं शशिनिर्मल-वक्त्रं, शीलगुण-व्रत-संयमपात्रम्;
अष्टशताऽर्चितलक्षण-गात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुज-नेत्रम् ।
पंचमभीप्सित-चक्रधराणां, पूजित-मिन्द्र-नरेन्द्र-गणैश्च ।।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडसतीर्थकरं प्रणमामि ।।९।।

दिव्य-तरुः सुर-पुष्प-सुवृष्टिः, दुन्दुभिरासन-योजनघोषौ;
आतप-वारण-चामरयुग्मे, यस्य विभाति च मण्डल-तेजः ।
तं जगदर्चित-शांति-जिनेद्रं, शांतिकरं शिरसा प्रणमामि;
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च ।।१०।।

(वसंततिलका)

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः,
शक्रादिभिः सुर-गणैः स्तुत-पाद-पद्माः।
ते मे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपाः ,
तीर्थंकराः सतत-शांतिकरा भवन्तु ।।११।।

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ।।१२।।

(स्रग्धरा)

क्षेमं सर्व-प्रजानां, प्रभवतु बलवान्, धर्मिको भूमिपालः;
काले काले च सम्यक्, विकिरतु मघवा, व्याधयो यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौरमारिःक्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।।१३।।

(वसंततिलका)

तद्-द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः,
सन्तन्यतां प्रतपतां सततं स कालः।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण,
रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षु-वर्गे ।।१४।।

इच्छामि भंते ! शांतिभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाण-सम्पण्णाणं, अट्ठ-महापाडिहेर-सहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंद-मणिमय-मउड-मत्थय-महियाणं, बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जदि-अणगारोव-गूढाणं, थूइ-सय-सहस्स-णिलयाणं, उसहाइ-वीर-पच्छिम-मंगल-महापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

इति पूर्वाऽऽचार्याऽनुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वंदना-स्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

८. समाधिभक्तिः

(अनुष्टुप)

स्वात्माभिमुख-संवित्ति, लक्षणं श्रुत-चक्षुषा।
पश्यन्पश्यामि देव त्वां, केवलज्ञान-चक्षुषा ।।१।।

(शार्दूलविक्रीडित)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः, संगतिः सर्वदार्यैः
सद-वृत्तानां गुणगणकथा, दोषवादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो, भावना चाऽऽत्मतत्त्वे
संपद्यंतां मम भव-भवे, यावदेतेऽपवर्गः ।।२।।

(छंद)

जैन मार्गरुचिरन्यमार्गनिर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः।
निष्कलंक विमलोक्ति-भावनाः संभवन्तु मम जन्मजन्मनि ।।३।।

(आर्या)

गुरुमूले यति-निचिते, चैत्य-सिद्धांतवार्धिसद्घोषे।
मम भवतु जन्म-जन्मनि, सन्यसन-समन्वितं मरणम् ।।४।।

(अनुष्टुप)

जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटि-समार्जितम्।
जन्ममृत्युजरामूलं, हन्यते जिनवन्दनात् ।।५।।

(शार्दूलविक्रीडित)

आबाल्याजिनदेव-देव-भवतः, श्रीपादयोः सेवया
सेवाऽऽसक्त-विनेयकल्पलतया, कालोद्ययावद्धरतः।
त्वां तस्याः फलमर्थये तद्धुना, प्राणप्रयाणक्षणे
त्वन्नामप्रतिबद्ध-वर्ण-पठने कण्ठोऽस्त्व-कुण्ठो मम ।।६।।

(आर्या)

तव पादौ मम हृदये, तव पदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ।।७।।

एकापि समर्थेयं, जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ।।८।।

पंचअरिञ्जयणामे, पंचय गदि सायरे जिणे वंदे।
पंच जसोयरणामे, पंचम्मिय मन्दरे वंदे।।९।।

रयणत्तयं च वंदे, चव्वीस-जिणे च सव्वदा वंदे।
पंचगुरुणं वंदे, चारण-चरणं सदा वंदे।।१०।।

(अनुष्टुप)

अहमित्यक्षरं ब्रह्म-, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।।११।।

कर्माऽष्टक-विर्निमुक्तं, मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।।१२।।

(शार्दूलविक्रीडित)

आकृष्टिं सुर सम्पदां विदधते, मुक्तिश्रियो वश्यताम्
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां, विदेषमात्मैनसाम्।
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनम्
पायात्पञ्चनमस्क्रियाऽक्षरमयी, साराधना देवता ।।१३।।

(अनुष्टुभ)

अनन्तानन्त-संसार, सन्ततिच्छेदकारणम्।
जिनराज-पदाम्भोज–, स्मरणं शरणं मम ।।१५।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।१५।।

नहि त्राता नहि त्राता, नहिं त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ।।१६।।

जिने भक्तिजिने भक्ति, जिने भक्तिर्दिनिदिने।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे ।।१७।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।१८।।

(आर्या)

याचेहं जिन तव चरणारविंदयोर्भक्तिम्।
याचेहं याचेहं पुनरपि तामेव तामेव ।।१९।।

इच्छामि भंते समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं रयणत्तयसरुव-परमप्पज्झालक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं। इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण भावपूजास्तवसमेतं कायोत्सर्ग करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

९. योगिभक्तिः

(आर्या)

थोसामि गुणधराणं, अणयाराणं गुणेहिं तच्चेहिं।
अंजुलि-मउलिय-हत्थो अहिवंदंतो सविभवेण।।१।।

सम्मं चेव य भावे, मिच्छाभावे तहे व बोद्धव्वा।
चइऊण मिच्छ-भावे, सम्ममि उवट्ठिदे वंदे।।२।।

दो-दोस-विप्पमुक्के, तिदंडविरंदे तिसल्लपरिसुद्धे।
तिण्णियगारवरहिए, तियरण-सुद्धे णमंसामि।।३।।

चउविहकसायमहणा, चउगइसंसारगमणभयभीए।
पञ्चासव-पडि-विरदे, पंचेदियणिज्जदे वंदे।।४।।

छज्जीवदयावण्णे, छडायदणविवज्जिदे समिदभावे।
सत्तभय-विप्पमुक्के, सत्ताणं ऽभयंकरे वंदे।।५।।

णट्ठट्ठ-मयट्ठाणे, पणट्ठ-कम्मट्ठ-णट्ठ-संसारे।
परमट्ठ-णिट्ठिमट्ठे, अट्ठ-गुणट्ठीसरे वंदे ।।६।।

णव-बंभचेर-गुत्ते, णवणयसब्भावजाणगे वंदे।
दसविह-धम्मट्ठाई, दससंजमसंजुदे वंदे ।।७।।

एयारसंगसुदसायर,—पारगे बारसङ्गसुदणिउणे।
बारसविह-तव-णिरदे, तेरस-किरयादरे वंदे ।।८।।

भूदेसु दयावण्णे, चउदस चउदससु गंथपरिसुद्धे।
चउदसपुव्वपगब्भे, चउदस-मलविवज्जिदे वंदे ।।९।।

वंदे चउत्थभत्तादि, जाव-छम्मास-खवण-पडिवण्णे।
वंदे आदावंते, सूरस्स य अहिमुह-ट्ठिदे सूरे ।।१०।।

बहुविहपडिमट्ठाई, णिसिज्जवीरासणेक्कुवासीय।
अणीट्ठीव-कं डुंवदीये, चत्तदेहे य वंदामि ।।११।।

ठाणियमोणवदीए, अब्भोवासीय रुक्ख-मूलीय।
धुदकेसमंसुलोमे, णिप्पडियम्मे य वंदामि ।।१२।।

जल्लमललित्तगत्ते, वंदे कम्ममलकलुसपरिसुद्धे।
दीहणहमंसुलोमे, तवसिरिभिरिए णमंसामि ।।१३।।

णाणोदयाहिसित्ते, सीलगुणविहूसिये तवसुगन्धे।
ववगयरायसुदट्ठे, सिवगइपहणायगे वंदे ।।१४।।

उग्गतवे दित्ततवे, तत्ततवे महातवे य घोरतवे।
वंदामि तवमहंते, तवसंजमइट्ठिसंजुत्ते ।।१५।।

आमोसहिए खेलो,—सहिएजल्लोसहिय तवसिद्धे।
विप्पोसहिए सव्वो,—सहिए वंदामि तिविहेण ।।१६।।

अमयमहुखीरसप्पि, सव्वी अक्खीण महाणसे वंदे।
मणबलिवचणबलिकाय,—बलिणो य वंदामि तिविहेण ।।१७।।

वरकुट्ठवीयबुद्धी, पदाणुसारीय भिण्णसोदारे।
उग्गहईहसमत्थे, सुत्तत्थविसारदे वंदे ॥१८॥

आभिणिबोहियसुदओ,-हिणाणिमणणाणि-सव्वणाणीय ।
वंदे जगप्पदीवे, पच्चक्ख-परोक्ख-णाणीय ॥१९॥

आयासतंतुजलसेढि,—चारणे जंघचारणे वंदे।
विउवण-इड्ढिढप हाणे, विज्जाहरपण्णसमणे य ॥२०॥

गइचउरंगुलगमणे, तहेव फलफुल्लचारणे वंदे।
अणुवम-तव-महंते, देवासुर-वंदिदे वंदे ॥२१॥

जियभय जियउवसग्गे जियइंदियपरिसहे जियकसाये।
जियरायदोसमोहे, जियसुहदुक्खे णमस्सामि ॥२२॥

एवं मए-भित्थुआ, अणयारा रायदोसपरिसुद्धा।
संघस्स वरसमाहिं, मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु ॥२३॥

इच्छामि भंते ! योगिभत्ति काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं, अड्ढाइज्ज-दीव-दोसमुद्देसु, णण्णारस-कम्मभूमीसु, आदावण-रुक्खमूल-अब्भोवास-ठाण-मोण-वीरासणेक्कपास-कुक्कुडासण चउ-छ-पक्ख-खवणादि-जोगजुत्ताणं, सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं। इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थभावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोमि।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे ।)

१०. लघुचेत्यभक्तिः

(इन्द्रवज़ा)

वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु, नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वन्दे जिन पुङ्गवानाम् ।।१।।

(मालिनी)

अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वन-भवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानाम् ।
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ।।२।।

(शार्दूलविक्रीडित)

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा,-क्षेत्रत्रये ये भवाश्
चन्द्राम्भोज–शिखण्डिकण्ठकनकप्रावृऽशघानाभा जिनाः ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षण-धराः, दग्धार्थ-कर्मेन्धना
भूतानागत-वर्तमान-समये, तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ।।३।।

(स्रग्धरा)

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ, रजत-गिरि-वरे, शाल्मली जम्बू-वृक्षे;
वक्षारे चैत्यवृक्षे, रतिकर-रुचके, कुण्डले मानुषांके ।
इष्वारकारेऽञ्जनाद्रौ, दधिमुख-शिखरे, व्यन्तरे स्वर्गलोके;
ज्योतिर्लोकेभिवन्दे, भवन-महितले, यानि चैत्यालयानि ।।४।।

(शार्दूलविक्रीडित)

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवलो, द्वाविन्द्र-नील-प्रभो;
द्वौ बन्धूक-सम-प्रभो जिन-वृषौ, द्वौ च प्रियङ्गु–प्रभो ।
शेषाः षोडश जन्म-मृत्यु-रहिताः, सन्तप्त-हेम-प्रभास्
ते सञ्ज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः ।।५।।

इच्छामि भंते ! चेइभत्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचउं, अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सवणि तिसु वि लोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोइसिय कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमसंति, अहं वि इह संतो, तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खो बोहिलाहो, सगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होदु मज्झं। इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थभावपूजावंदनास्तवसमेतं कायोत्सर्ग करोमि ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर कायोत्सर्ग करे।)

प्रतिष्ठा पूजन-विधान

प्रस्तुत आवृत्तिके प्रकाशनार्थ प्राप्त दानराशि

रु. ११०००/-

मीनाबेन महेन्द्रभाई सपाणी, सोनगढ

रु. ५०००/-

आरव हर्ष गांधी, मुंबई

रु. ३०००/-

ब्र. रेणुकाबेन जयंतिलाल शाह, वढवाण

रु. २५००/-

निश्चय और निकी नितिश शाह, न्युझीलेन्ड

ब्र. इलाबेन और मंजुलाबेन नंदलाल महेता, सोनगढ

ज्योत्सनाबेन चंद्रकांतभाई शाह, विलेपार्ला

लीलाबेन तथा डॉ. हितेष शाह, अमदावाद

रु. २१००/-

वासंतीबेन गुणवंतराय भायाणी, सोनगढ

ब्र. कोकिलाबेन और रूपाबेन, सोनगढ

चिंताबेन चंद्रकांतभाई शाह, विलेपार्ला

नीना कमल देवनानी, दाहोद

रु. २०००/-

शांतिलालजी सेठीया, दिल्ही

पुष्पाबेन भूपालभाई जैन, दिल्ही

लताबेन अनंतराय शाह, जलगाँव

ख्याति, रितिका दीपेन गांधी, अमेरिका

ललिताबेन वी. पंचाली

ह. ब्र. चंद्रिकाबेन, बोटाद

डॉ. जयश्रीबेन वी. शाह, भावनगर

रु. १५००/-

आरतीबेन चिद्रूपभाई शाह, अमदावाद

वासंतिबेन भरतभाई शाह, घाटकोपर

रु. ११००/-

प्रीतिबेन चंद्रकांत कोठारी, दाहोद

ब्र. मीनाबेन अने ब्र. सुवर्णबेन, सोनगढ

निर्वाण विशाल मुनोत, शांताक्रुझ

रु. १०००/-

लक्ष्मीबेन तथा ब्र. कुंतीबेन, सोनगढ

कुसुमबेन ज्ञानचंदजी जैन, सोनगढ

दिनेशचंद्र अमृतलाल मेघाणी, मलाड

इन्दुमतीबेन रमणीकलाल दोशी, घाटकोपर

रमणीकलाल लालचंद दोशी, घाटकोपर

ब्र. वीणाबेन जैन, सोनगढ

ब्र. सुबोधबेन जैन, सोनगढ

जयश्रीबेन दिलीपभाई शाह, जामनगर

मीनल भरत शाह, सोनगढ

धवल भरत शाह, सोनगढ

चंपाबेन उमरावप्रसाद पंचरत्न, सोनगढ

अनुबेन डॉ. कांतिभाई शेठ,

ह. विजयभाई, मुंबई

राजेशभाई विनोदराय बावीसी, जलगांव

मंजुलाबेन धीरजलाल डेलीवाला, वडोदरा

विमळाबेन साराभाई शाह परिवार, सोनगढ